अल्पना एडवरटाईजिंग एजेंसी
1/44 व्यास कालोनी नागौर
सभी समाचार पत्रों के विज्ञापन बुक किए जाते है।
मो: 8233244421, 9414244421

सांध्य ज्योति दर्पण

www.dainiksandhyajyotidarpan.com

वर्ष 36 | अंक-12 | नागौर, मंगलवार 15 अक्टूबर 2024 | जयपुर, अलवर, नागौर व भरतपुर से एक साथ प्रकाशित | पृष्ठ : 8 मूल्य : एक रु.

प्रातःकालीन संस्करण

पुष्कर, अजमेर, नोखा, बीकानेर, बावड़ी, जोधपुर, मकराना, परबतसर, नावां, कुचामन, लाडनूं, डेगाना, मेड़तासिटी, कुचेरा, मूंडवा, डीडवाना, जायल, खींवसर में प्रसारित।

नदी में डूबने से नाबालिग की मौत ... पेज 8

दुल्हन की विदाई से पहले दूल्हे के भाई की मौत... पेज 6

अल्पना एडवरटाईजिंग एजेंसी
1/44 व्यास कालोनी नागौर
सभी समाचार पत्रों के विज्ञापन बुक किए जाते है।
मो: 8233244421, 9414244421

8 माह से नगर परिषद आयुक्त का पद खाली, बड़ी सूची में नागौर को नहीं मिला आयुक्त

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। पूरे प्रदेश में बीती रात नगर निकायों में आयुक्त और ईओ के पदों पर बड़े पैमाने पर तबादले हुए। लेकिन नागौर में राजनेताओं की आपसी खींचतान की वजह से लगभग 8 महीने से कोई खाली नगर परिषद आयुक्त के पद स्थाई आयुक्त की नियुक्ति नहीं हो सकी। बीती रात हुए तबादलों में आयुक्त देवीलाल बोचल्या को फतेहपुर से कुचामन सिटी नगर परिषद का आयुक्त लगाया गया है। कुचामन सिटी नगर परिषद के आयुक्त पिंटू लाल जाट को नसीराबाद नगर पालिका का ईओ लगाया गया है। डीडवाना नगर परिषद के आयुक्त झब्बर सिंह को बोरावड़ नगर पालिका में ईओ लगाया गया है। कुचामन सिटी कमिश्नर लगाए गए देवीलाल बोचल्या को डीडवाना नगर परिषद आयुक्त का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है। ब्यावर नगर परिषद आयुक्त श्रवण राम को मकराना नगर परिषद आयुक्त लगाया गया है। मेड़ता सिटी नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी पवन मीणा को रींगस नगर पालिका में अधिशाषी अधिकारी लगाया गया है, उनकी जगह शिवगंज नगर पालिका के ईओ प्रकाश डूडी को मेड़ता सिटी ईओ लगाया गया है। नवलगढ़ नगर पालिका ईओ राम रतन चौधरी को मूंडवा नगर पालिका ईओ लगाया गया है। मकराना नगर परिषद सेक्रेटरी दुर्गा कुमारी का जयपुर ग्रेटर नगर निगम में राजस्व अधिकारी के पद पर तबादला किया गया है। खेतड़ी नगर पालिका के ईओ ऋषि देव ओला को जायल नगर पालिका का ईओ लगाया गया है, तो वहीं जायल नगर पालिका के ईओ शिवराज कृष्ण को फुलेरा नगर पालिका का ईओ लगाया गया है।

नागौर की अदालतों में एपीपी व पीपी की हुई नियुक्ति

नागौर, 15 अक्टूबर। राज्य सरकार के विधि एवं विधिक कार्य विभाग ने नागौर जिले के जायल अपर जिला एवं सेशन न्यायालय, नागौर अपर जिला एवं सेशन न्यायालय संख्या-1 और मेड़ता अपर जिला एवं सेशन न्यायालय में अपर लोक अभियोजक व राजकीय अभिभाषकों की नियुक्ति की है। इसके साथ ही पहले से इन पदों पर लगे तीनों वकीलों को कार्यमुक्त करने के आदेश भी जारी कर दिए गए हैं। विधि एवं विधिक विभाग के शासन सचिव राजेश गुप्ता ने आदेश जारी करते हुए जायल अपर जिला एवं सेशन न्यायालय में हरीश पारीक को अपर लोक अभियोजक व राजकीय अभिभाषक, मेड़ता अपर जिला एवं सेशन न्यायालय में लक्ष्मण सिंह को अपर लोक अभियोजक व राजकीय अभिभाषक और नागौर अपर जिला एवं सेशन न्यायालय संख्या-1 में अनिल गौड़ को अपर लोक अभियोजक व राजकीय अभिभाषक नियुक्त किया है। विभागीय आदेश के अनुसार जायल अपर जिला एवं सेशन न्यायालय के अपर लोक अभियोजक व राजकीय अभिभाषक चंद्रशेखर, नागौर अपर जिला एवं सेशन न्यायालय संख्या-1 के अपर लोक अभियोजक व राजकीय अभिभाषक गोपाल राम गोदारा, मेड़ता अपर जिला एवं सेशन न्यायालय के अपर लोक अभियोजक व राजकीय अभिभाषक रूस्तम अली को कार्यमुक्त कर दिया गया है।

38 टीमों ने दबिश देकर 59 बदमाशों को पकड़ा

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। डीडवाना में लंबे समय से फरार चल रहे बदमाशों के खिलाफ डीडवाना पुलिस का बड़ा एक्शन देखने को मिला है।

एरिया डॉमिनेशन के तहत चलाए गए इस अभियान के दौरान जिले भर के 13 पुलिस थाने के पुलिस अधिकारियों की 38 टीमों ने 59 बदमाशों को गिरफ्तार किया है। जिला पुलिस अधीक्षक हनुमान प्रसाद मीणा के निर्देश पर डीडवाना पुलिस ने पूरे जिले में सघन अभियान चलाया।

इस कार्रवाई के दौरान पुलिस की 38 टीमों के 153 जवानों ने बदमाशों की घेराबंदी कर कुल 59 बदमाशों को गिरफ्तार किया। वहीं 6 स्थाई वारंटियो सहित 19 जनों को गिरफ्तार किया गया। अभियान के दौरान माइनर एक्ट के तहत 18 प्रकरण दर्ज किए गए, जिनमें से 13 मामले अवैध शराब से जुड़े हैं। इन मामलों में 13 लोगों को गिरफ्तार किया गया, वहीं 67 हिस्ट्रीशीटरो की भी जांच की गई।

एसपी ने बताया कि बदमाशों के खिलाफ यह अभियान लगातार जारी रहेगा वो आगे भी कार्रवाई की जाएगी।

मिठाई की दुकानों का निरीक्षण कर लिए नमूने

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। जिले के लाडनूं में खाद्य विभाग द्वारा मिलावट के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। इसके चलते लाडनूं में मिठाई की दुकानों का निरीक्षण कर सैंपल लिए गए।

आमजन को शुद्ध एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से शुद्ध आहार-मिलावट पर वार अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत लाडनूं में रामकिशन एंड कंपनी, आधार सुपर मार्केट व प्रजापत किराना स्टोर जसवंतगढ़ का निरीक्षण किया। जहां से बादाम, तेल व धनिया पाउडर के नमूने लिए गए।

साथ ही फूड सेफ्टी टीम के अधिकारियों ने मिठाई की दुकानों का निरीक्षण कर मिठाई की गुणवत्ता, खाद्य सामग्री को ढककर रखने, साफ सफाई व फूड लाइसेंस डिस्प्ले करने के लिए पाबंद किया गया है। नमूनों की जांच रिपोर्ट आने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी करवाई की जाएगी। अभियान के दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी गणपत राम जाट, बाबूलाल एवं संतोष जोशी सहायक कर्मचारी उपस्थित थे।

शिक्षक सम्मेलन 25 से

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। मूंडवा राजस्थान शिक्षक संघ अंबेडकर शाखा मूंडवा की बैठक का आयोजन अंबेडकर पार्क में किया। जिलाध्यक्ष बलवीर खती ने बताया कि जिले का जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन इस बार मारवाड़ मूंडवा में 25 और 26 अक्टूबर को आयोजित किया जाएगा।

बैठक में जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन की रूपरेखा तैयार की गई व व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई।

मूंग व मूंगफली की समर्थन मूल्य पर खरीद के लिए दर निर्धारित

नागौर, 15 अक्टूबर। सहकारी समिति नागौर के उप रजिस्ट्रार गंगाराम गोदारा ने बताया कि समर्थन मूल्य योजना के अंतर्गत मूंग व मूंगफली खरीद के लिए पंजीयन 15 अक्टूबर से प्रारंभ होगा तथा नागौर जिले के 11 व डीडवाना-कुचामन जिले के पांच खरीद केंद्रों पर मूंग की खरीद 18 अक्टूबर से प्रारंभ की जाएगी। नागौर, खींवसर, मेड़ता तिलमसंघ मेड़ता, उपकेंद्र रियांबड़ी, पादू खुर्द जीएसएस, डेगाना, मूण्डवा, डीडवाना, लाडनूं, परबतसर, कुचामन, गच्छीपुरा में मूंग एव मूंगफली की खरीद होगी। वहीं उपकेंद्र जायल, जारोड़ा जीएसएस एवं पुन्दलौता जीएसएस में मूंग खरीद होगी। उन्होंने बताया कि राजफैड द्वारा मूंग 8682 रुपए व मूंगफली 6783 रुपए प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य पर खरीद होगी। उप रजिस्ट्रार गोदारा ने बताया कि किसानों द्वारा खरीद के लिए पंजीयन ई-मित्र पर अपने जन आधार कार्ड, मूल गिरदावरी के द्वारा 15 अक्टूबर से किए जा सकेंगे। किसानों द्वारा बायोमैट्रिक के स्थान पर माध्यम से पंजीयन होगा। समस्त किसान अपने जनआधार कार्ड से लिंक मोबाईल नं. को अपने साथ ई-मित्र पर आवश्यक रूप से ले जावें। यदि गिरदावरी ऑफलाईन हो तो उस पर पी-35 अंकित करवाना आवश्यक है, जबकि ऑनलाईन गिरदावरी पर पी-35 अंकित करवाने की बाध्यता नहीं होगी। बटाईदार के रूप में पंजीयन के लिए मई से जुलाई 2024 के मध्य 100 रूपए के स्टाम्प पर अनुबंध की प्रति अपलोड करवानी होगी।

वीरवर जयमल राठौड़ की जयंती पर निकली शोभायात्रा, समाज की प्रतिभाओं का किया सम्मान

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। जिले के मेड़ता के चारभुजा छात्रावास में वीरवर राव जयमल राठौड़ की 517वीं जयंती पर कार्यक्रम हुए। शहर के प्रमुख मार्गों से शोभायात्रा निकाली गई। दोपहर बाद हुए कार्यक्रम में राजपूत समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया। समारोह में अतिथियों ने मातृशक्ति से अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने का आह्वान किया।

वीरवर भक्त शिरोमणि राव जयमल राठौड़ की जयंती अवसर पर यहां बस स्टैंड स्थित चारभुजा छात्रावास से पूजा-अर्चना के बाद बैंड-बाजों के साथ शोभायात्रा निकाली गई। जो शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरी। शोभायात्रा में बड़ी संख्या में समाज के महिला-पुरुष, युवा और बच्चे शामिल हुए। इस बीच जगह-जगह शोभायात्रा का पुष्प वर्षा से स्वागत भी किया। छात्रावास परिसर में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इस दौरान मुख्य अतिथि जल संसाधन मंत्री सुरेश रावत, पूर्व मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी, पूर्व प्रदेश महामंत्री वीरमदेव सिंह जैसास, भेरूंदा पंचायत समिति के प्रधान जसवंत सिंह ठाटा, दयाल सिंह कात्यासनी, किशन सिंह राठौड़, अभय सिंह राठौड़, हनुमान सिंह, भंवर सिंह लिलिया, देवेंद्र सिंह बुटाटी, मानवेंद्र सिंह मेड़ता रोड, श्याम तिवारी, सुरेश गुर्जर सहित अतिथियों ने 10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षाओं में 85 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले छात्रों के साथ सरकारी सेवाओं में नव चयनित प्रतिभाओं व भामाशाहों का सम्मान किया। समारोह में जल संसाधन मंत्री रावत ने कहा कि पूरे देश में मेड़ता की भूमि ने त्याग और बलिदान को लेकर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

प्रत्येक व्यक्ति को कड़ी मेहनत करनी चाहिए। मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। शिखर पर वही पहुंचता है, जिसने कड़ी मेहनत की है। उन्होंने मातृशक्ति से आह्वान किया कि अपने बच्चों को अच्छी परवरिश व अच्छे संस्कार दें, ताकि हमारे देश की सभ्यता कायम रहे। मंत्री रावत ने कहा कि राजस्थान और मध्यप्रदेश सरकार के बीच ईआरसीपी को लेकर एमओयू हो चुका है। इस योजना के फलीभूत होने के बाद राजस्थान में पानी का कोई संकट नहीं रहेगा। उन्होंने कहा कि नागौर जिले में पार्वती काली सिंध की नदी का पानी मिले इसके लिए भी प्रयास किया जाएगा। पूर्व मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि जयंती उन लोगों की मनाई जाती है, जो देश व समाज के लिए कुछ त्याग करें। उन्होंने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हम भारत के भूमि में पैदा हुए हैं। सभी समाज के लोगों को साथ लेकर आगे बढ़े। इससे ही किसी भी व्यक्ति की तरक्की हो सकती है। उन्होंने कहा कि हमने अपने जीवन में आगे बढ़ाने के लिए खूब संघर्ष किया है संघर्ष से ही आगे बढ़ा जा सकता है।

इस अवसर पर भाजपा प्रदेश महामंत्री बगड़ी ने कहा कि तलवार का जमाना अब नहीं रहा। अब तो दिमाग और कलम का जमाना है। इस जमाने में तलवार को छोड़कर दिमाग और कलम से काम करें।

जिला स्तरीय जन सुनवाई 17 को

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। अतिरिक्त जिला कलक्टर ने बताया कि आमजन की परिवेदनाओं के निस्तारण के लिए जिला स्तरीय जनसुनवाई व जिला जन अभाव अभियोग एवं सतर्कता समिति की बैठक 17 अक्टूबर को प्रात: 11 बजे से राज सम्पर्क केन्द्र डीओआईटी कलेक्ट्रेट परिसर में किया जाएगा।

अल्पसंख्यक बालिका छात्रावासों में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। अल्पसंख्यक मामलात विभाग द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के कल्याण एवं सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए छात्राओं के शैक्षिक सशक्तिकरण की पहल को मूर्त रूप देने के लिए नागौर जिला मुख्यालय एवं कुचामन में राजकीय अल्पसंख्यक बालिका छात्रावास संचालित हैं।

50 बालिकाओं की क्षमतायुक्त इन बालिका छात्रावासों में पूर्णतया निशुल्क एवं गुणवतापूर्ण भोजन व आवास व्यवस्थाएं दी जा रही है। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी गोपाल जीनगर ने बताया कि विभिन्न संस्थानों में नियमित रूप से अध्ययनरत अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के प्रवेश के लिए रिक्त सीटों पर आवेदन प्रहक्रयाधीन है। उक्त छात्रावासों में अल्पसंख्यक समुदाय के कक्षा 9 से उच्चतर एवं व्यावसायिक कोर्स में अध्ययनरत छात्राएं ही प्रवेश ले सकती हैं।

इच्छुक विद्यार्थी जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी कार्यालय, कमरा नं. 54 व 55 कलेक्ट्रेट परिसर नागौर में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर फार्म जमा करवा सकता हैं या कार्यालय की ई-मेल आईडी पर अपना आवेदन मय आवश्यक दस्तावेज भेज सकते हैं।

मेड़ता में ईओ डूडी ने संभाला कार्यभार

नागौर, 15 अक्टूबर। मेड़ता नगरपालिका में अधिशासी अधिकारी के पद पर फेरबदल हुआ है। आज शाम प्रकाश डूडी ने मेड़ता के नए पालिका अधिशासी अधिकारी के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। वहीं स्वायत्त शासन विभाग ने ईओ पवन कुमार मीणा का तबादला मेड़ता सिटी से रींगस कर दिया है। स्वायत्त शासन विभाग जयपुर के निदेशक एवं विशिष्ट सचिव कुमार पाल गौतम की ओर से आज शाम एक सूची जारी की गई है। मेड़ता नगरपालिका ईओ के पद पर कार्य कर रहे पवन कुमार मीणा को रींगस स्थानांतरित कर दिया गया है। वहीं उनकी जगह प्रकाश डूडी को मेड़ता अधिशासी अधिकारी का पदभार सौंपा गया। आदेशों के बाद डूडी ने आज ही कार्यभार ग्रहण करते हुए नगरपालिका कार्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने पालिका के कर्मचारियों की बैठक लेते हुए लंबित पत्रावलियों को समय पर पूर्ण करने और योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लांभावित करने की बात कहीं। इस दौरान ईओ डूडी का नगर कांग्रेस अध्यक्ष जाकिर खान सांखला, पार्षद अमजद खान केके, पार्षद महेंद्र भाकर, लालाराम नायक, जिशान कुरैशी सहित जनप्रतिनिधियों ने साफा-माल्यार्पण करके स्वागत किया।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का पथ संचलन व शस्त्र पूजन कार्यक्रम का समापन

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अलाय मंडल का पथ संचलन एवं शस्त्र पूजन कार्यक्रम कस्बे के शारदा बाल निकेतन विद्यालय के प्रांगण में संपन्न हुआ। खंड कार्यवाह मुकेश भाटी ने बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अपने स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर ग्राम में अलाय में भव्य पथ संचलन का आयोजन किया। पथ संचलन के आरंभ होने से पूर्व शस्त्र पूजन एवं विजयदशमी उत्सव का आयोजन भी संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में संघ के विभाग कार्यकारिणी सदस्य हनुमान सिंह देवड़ा ने कहा कि विगत 99 वर्षों से सतत राष्ट्र जागरण में संघ लगा हुआ है।

उन्होंने कहा कि संघ कुछ नहीं करेगा लेकिन स्वयं सेवक कुछ भी नहीं छोड़ेगा संघ केवल मात्र शाखा तक सीमित नहीं है बल्कि संघ सामाजिक परिवर्तन के कार्य में भी लगा हुआ है। संघ के द्वारा कुटुंब प्रबोधन का कार्य भी किया जाता है, पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी संघ के स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं, ऐसे ही समरसता के लिए भी स्वयंसेवक लगे हुए हैं, समाज में भी नहीं अभावग्रस्त बांधवों की समय-समय पर यथा संभव सहायता के कार्य भी संघ द्वारा किया जाता है, उन्होंने कहा कि सरसंघचालक चालक मोहन भागवत का आग्रह है कि सभी का पानी पीने का जल स्रोत एक हो, सभी हिंदू समाज का मंदिर एक होए और शमशान भी एक होए इस दिशा में संघ का स्पष्ट मत है इसी के साथ नागरिक शिष्टाचार के लिए भी समाज का प्रबोधन किया जा रहा है, पानी बिजली का सदुपयोग करना, अपने घर की गली सड़क को साफसुथरा रखना, गलत विचार के विरुद्ध न्याय पूर्ण आवाज उठाना, जिम्मेदार नागरिक बनना व सहयोगी की भूमिका में रहना, समाज को सही दिशा देने वाले नेतृत्व के रूप में अपने कृतित्व की स्थापना करने के लिए सभी स्वयंसेवक प्रतिबद्ध है इसके साथ ही स्वदेशी के भाव का जागरण, अपने स्थानीय वस्तुओं का अपने गांव में अपने पड़ोस में निर्मित वस्तुओं का अधिकाधिक उपयोग करना तथा अपने कार्य स्थल पर ईमानदारी से कार्य करना, अपनी मातृभाषा में बातचीत करना और हमारे परंपरागत वेशभूषा को धारण करना जन्मदिन वैवाहिक वर्षगांठ और मंगल उत्सव हिंदी एवं भारतीय संस्कृति की रीति-नीति से मनाना इसके लिए संघ का जन्म शताब्दी वर्ष और पंच परिवर्तन का कार्य संघ के द्वारा और स्वयं सेवकों के द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम में भोजराज अग्रवाल ने काव्य गीत प्रस्तुत किया नागार्जुन जांगू ने अवतरण प्रस्तुत किया । कार्यक्रम का संचालन खंड कार्यवाह मुकेश भाटी ने किया। कार्यक्रम में भेराराम सियाग, सुखराम चौधरी, उपखंड कार्यवाहक प्रवीण सोलंकी, विभाग के ग्राम विकास संयोजक रणजीत राम जांगू, विभाग घुमंतू संयोजक भोजराज अग्रवाल, खंड प्रचारक लाभसिंह, अशोक जोशी, दिलीप बोथरा, विनोद पारीक, भंवरलाल सोलंकी, नवीन पारीक, बाबूलाल, रामनिवास, भागीरथ, मोहन राम सुथार, सुनील बोथरा, देवेंद्र सिंह, विमल बोहरा, सोहनलाल गिला, हनुमान राम सथेरण, रामेश्वर लाल जांगू, ताजुराम गोदारा, विनय प्रकाश तिवारी, दयाल सिंह, पतराम बिश्नोई, मुकेश बोहरा, हीरालाल गिला, नेमीचंद प्रजापत, राजाराम जांगू सहित अनेक पदाधिकारी एवं स्वयंसेवक इस मौके पर उपस्थित थे। शस्त्र पूजन के पश्चात गांव में घोष के साथ कदम मिलाते हुए स्वयंसेवकों का पथ संचलन प्रारंभ हुआ जो शारदा बाल निकेतन विद्यालय से प्रारंभ होकर इंदिरा कॉलोनी, बस स्टैंड, रामदेव चौक, गणगौर चौक, रेगरो का मौहल्ला, ठाकुर जी का मंदिर, पारीक चौक, महाजन बास होते हुए अग्रवाल चौक, बिश्नोई बास, जाखानिया रोड़, सेवा बस्ती होते हुए पुन: विद्यालय में पहुंचकर संपन्न हुआ। इस संचलन में चार पीढ़ी के स्वयंसेवक एक साथ सम्मिलित होकर संचलन में भाग लिया पथ संचलन का ग्राम वासियों ने अनेक स्थानों पर पुष्प वर्षा एवं रंगोली बनाकर स्वागत किया गया विशेष रूप से एक ही परिवार की चार पीढ़ी के स्वयंसेवकों ने इस पथ संचलन में अपनी भागीदारी निभाई।

कनक आराधना भवन में साध्वी ने दिए प्रवचन

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। कनक अराधना भवन में खरतरगच्छ जैन साध्वी मृगावतीश्रीजी, सुप्रियाश्रीजी एंव नित्योदयाश्रीजी के के सानिध्य में जैन साध्वी गुरूवर्या मनोहर श्रीजी के 19वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अष्टन्हिका महोत्सव व नवपद ओलीजी की आराधना घुमधाम के साथ में व कई धार्मिक कार्यक्रम चल रहे हैं।

संघ के प्रवक्ता प्रदीप डागा एवं अध्यक्ष गौतम कोठारी ने कहा कि नवपद ओलीजी के छठें दिन प्रवचन में जैन साध्वी मृगावती ने कहा कि नवपद की आराधना जन्म-जरा-मृत्यु के महा भयंकर रोग को मिटाकर अक्षय सुख प्रदान करती है तथा आराधना से ही बाह्य-अभ्यंतर सुख की प्राप्ति होती है।

नवपद कीआराधना करके भूतकाल में असंख्य आत्माएं मोक्ष में गई, वर्तमान में जा रही है और भविष्य में जाएगी। साध्वी सुप्रियाश्रीजी ने कहा कि दीपावली, रक्षाबंधन, पर्युषण आदि पर्व साल में एक बार आते है लेकिन शाश्वत नवपद ओलीजी साल में दो बार चैत्र मास व आसोज मास में आती है। अरिहंत के बिना जैन जगत संभव ही नहींहै। अरिहंत की वास्तविक भक्ति देखनी है तो उनके प्रति पूर्ण समर्पण जरूरी है। अरिहंत के बिना नवपद के बाकी आठ पद भी संभव नहीं है। अरिहंत, सिद्ध,आचार्य, उपाध्याय, साधु, दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप की साधना ही नवपद ओली आराधना का सार है। यह आराधना आत्मिक एवं शारीरिक आरोग्य बढ़ाती हैएकर्मों की निर्जरा तथा शारीरिक व्याधि को दूर करती है। खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष गौतम कोठारी एंव प्रवक्ता प्रदीप डागा ने बताया कि दादा गुरु देव महापुजन का आयोजन किया।

जोधपुर के विधिकारक महेश भण्डारी एवं उनके सहयोगियों के द्वारा विधि-विधान एंव मंत्रोच्चारण के साथ में कराई गईं।

नाबालिग बच्चे के साथ किया कुकर्म

जयपुर। हरमाड़ा थाना इलाके में एक महिला ने अपने पड़ौसी पर पोते के साथ गलत काम करने की शिकायत दर्ज कराई हैं। महिला की शिकायत पर पड़ौसी के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कर ली गई हैं। मामले की गम्भीरता को देखते हुए मामले की जांच एसीपी चौमूं अशोक चौहान को दी गई हैं। एसीपी अशोक चौहान ने बताया कि पीड़ित दादी ने 13 अक्टूबर को हरमाड़ा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसके नाबालिग पोते के साथ पड़ौसी ने गलत काम किया। पडौसी के यहां से घर लौटे पोते से दादी ने जब रोने का कारण पूछा तो बच्चे ने पड़ौसी पर गलत काम करने का आरोप लगाया। जिस पर महिला पोते को लेकर हरमाड़ा थाने पहुंची और पुलिस अधिकारियों को घटना को लेकर जानकारी दी। जिस पर हरमाड़ा थाना पुलिस ने महिला की रिपोर्ट पर कॉलोनी के युवक के खिलाफ नाबालिग के साथ गलत काम करने की एफआईआर दर्ज की। मामले की गम्भीरता को देखते हुए नाबालिग बच्चे का मेडिकल कराया दिया गया हैं। जल्द बच्चे के 164 के बयान दर्ज किये जाएंगे। पीड़ित महिला ने जिस पडौसी पर गलत काम करने का आरोप लगाया है उसकी गिरफ्तारी के लिए सम्भावित ठिकानों पर रेड की जा रही है। जल्द आरोपी की गिरफ्तारी होगी।

गंगापुरसिटी में अग्रवाल समाज का सम्मान समारोह 27 अक्टूबर को

गंगापुर सिटी। अग्रवाल कर्मचारी विकास समिति गंगापुर सिटी द्वारा अग्रवाल समाज गंगापुर सिटी के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह 27 अक्टूबर रविवार को पर्ल होटल बाई पास रोड गंगापुर सिटी पर आयोजित होगा।अग्रवाल कर्मचारी विकास समिति अध्यक्ष राधामोहन गोयल , महामंत्री धनश्याम सेवा व कार्यक्रम संयोजक जगदीश अकाउंटेंट ने बताया कि हर बर्ष की भांति इस वर्ष सत्र 2024 में MBBS, MS, IIT, JEE MAINS में 10000 रैंक, IAS, IES, RAS, 10th,12th में 90 प्रतिशत एवं नवनियुक्त सरकारी कर्मचारियों सत्र 20 नवम्बर 2023 से 27 अक्टूबर 2024 अग्रवाल सरकारी कर्मचारियों का सम्मान समारोह 27 अक्टूबर रविवार को पर्ल होटल बाई पास रोड गंगापुर सिटी पर किया जाएगा। सम्मान समारोह के लिए आवेदन फार्म गौरव स्टेशनर फब्बारा चौक, जितेन्द्र बुक्स एण्ड जनरल स्टोर फब्बारा चौक, महेंद्र मेडिकल स्टोर कचहरी रोड,खेमा मेडिकल स्टोर उदेई मोड, गुप्ता डायग्नोस्टिक सेंटर अस्पताल रोड, हरिओम भगत सुभाष बाजार, मित्तल आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय मिर्जापुर, कार्तिक कलेक्शन आर्य समाज मंदिर के पास उपलब्ध है। आवेदन दिनांक 17 अक्टूबर तक उक्त स्थानों से प्राप्त कर जमा कराए जा सकते हैं।

चौमूं में श्रीराम-जानकी का राजतिलक देख गाए मंगल गीत

चौमूं। रामलीला का शनिवार रात्रि को रामलीला के मंच पर रंग बिरंगी रोशनी एवं भगवान राम के राज्याभिषेक के साथ समापन हुआ। इससे पहले रेलवे स्टेशन खेल मैदान में रावण दहन के बाद भगवान श्रीराम का चौपड़ स्थित जानकीनाथ मंदिर के सामने रामलीला के मंच पर उपस्थित दर्शकों के बीच में भव्य राजतिलक किया गया। रामलीला स्थल भगवान श्रीराम के जयकारो से गूंज उठा और जय जयकार होने लगी। श्री आदर्श रामलीला मंडल के अध्यक्ष कालूराम जाट, महामंत्री गोपाल लाल रेवड़का, निर्देशक महेश शर्मा हवेलीवाला सहित मंडल के अनेक पदाधिकारियों ने भगवान श्रीराम की आरती उतारी एवं आशीर्वाद लिया। बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माने जाने वाला विजयादशमी पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया । रामलीला के मंच पर जैसे ही भगवान श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ, वैसे ही पटाखो की रंग बिरंगी आतिशबाजी से मंच बड़ा ही सुंदर लगने लगा और ऐसा लगा कि मानो अयोध्या नगरी ही आज चौमूं रामलीला में आ बसी हो। भगवान श्रीराम का राजतिलक देखकर रामलीला में उपस्थित दर्शक खुशी से झूम उठे और तालिया की गड़गड़ाहट से पूरा

रामलीला स्थल गूंजने लगा। भगवान राजाराम के मंगल गीत गाए गए। मंडल के निर्देशक महेश शर्मा हवेलीवाला भगवान श्रीराम के चरणों में आशीर्वाद लेते समय भावुक हो गए और उनकी आंखों से आंसू छलक पड़े। इससे पूर्व नगर परिषद के आयुक्त सूर्यकांत शर्मा के द्वारा मंडल के कलाकारों को चांदी के वर्क से युक्त हनुमान चालीसा भेंट की गई। इस अवसर पर अरुण जांगिड़, दीपक पुजारी, सत्यनारायण पुजारी, सुरेश मानावत, सतीश शर्मा, कोषाध्यक्ष गिरीश शर्मा, महेश भातरा, राजेंद्र शर्मा, बनवारी लाल भातरा, श्याम सुंदर कर्मवीर, अरविंद भातरा, गोविंद विजयवर्गीय सहित मंडल के पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यकर्ता एवं काफी संख्या में दर्शक द्य रामलीला मंडल के अध्यक्ष कालूराम जाट एवं महामंत्री गोपाल लाल रेवड़का ने उपस्थित लोगों के साथ-साथ पुलिस प्रशासन, रामलीला मंडल एवं उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया।

वाल्मीकि समाज की क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित

रींगस। कस्बे के नदी पुलिया के समीप स्थित क्रिकेट स्टेडियम में वाल्मीकि समाज क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश भर से 16 टीमों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि खंडेला विधायक सुभाष मील ने बेटिंग करके किया और खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल को खेल भावना और अनुशासन के साथ खेलना चाहिए और हार से कभी भी घबराना नहीं चाहिए क्योंकि हार हमेशा एक बड़ी सफलता का द्वार खोलती है। उद्घाटन कार्यक्रम में आए अतिथियों का शिक्षाविद प्रदीप शर्मा के नेतृत्व में आयोजक मंडल के सदस्यों ने माला पहनाकर, साफा बंधवा और प्रतीक चिन्ह देकर स्वागत किया। रामनिवास

घोघलिया ने बताया कि प्रतियोगिता का उद्घाटन मैच सरदारशहर और अजमेर के बीच खेला गया जिसमें सरदारशहर 22 रनों से मैच की विजेता रही। एक दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रदेश भर से 16 टीमों ने भाग लिया। इस दौरान पालिका उपाध्यक्ष अमित शर्मा, ठेकेदार गुलाब चंद, पार्षद राकेश भादुपोता, बीरबल निठारवाल, मोतीराम जांगिड़, महेश अग्रवाल, लोकेश कुमावत, पप्पू राम मारवाल, ठेकेदार जगदीश प्रसाद कुमावत, चंद्रशेखर बावलियां, तेजपाल कुमावत, जमादार रमेश कुमार, कालीचरण सहित आयोजक मंडल के रामनिवास घोघलिया, रमेश टांक, दिनेश टांक, संजय गुजराती, विशाल टांक, गौतम लांपुवा, शंकर घोघलिया, मिथुन गुजराती आदि मौजूद थे।

विहिप और बजरंगदल कार्यकर्ताओं ने किया शस्त्र पूजन

श्रीमाधोपुर। रविवार को विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ता महामंडलेश्वर ओंकारदास महाराज के सानिध्य में गाजे-बाजे के साथ महावीर दल पहुंचे जहां विधि-विधान से शस्त्र पूजन किया। विहिप जिला उपाध्यक्ष मुकेश कुमार शर्मा ने बताया कि श्रीराम दरबार और बजरंग बली के पूजन के बाद परम्परागत विधि विधान से शस्त्रों का पूजन किया गया।

बजरंग दल जिला सह संयोजक रवि प्रजापत व विहिप प्रखंड संरक्षक रामरतन सोनी ने शस्त्र पूजन को शौर्य का प्रतीक बताया। ओंकारदास महाराज ने कहा कि रामायण काल से ही शस्त्र पूजा की परंपरा चली आ रही है। विजया-दशमी के दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध कर लंका विजय की थी। मान्यता है कि रावण का वध करने से पहले भगवान राम ने शस्त्रों की पूजा की थी। तभी से इस दिन शस्त्र पूजन किया जाता है। कार्यक्रम में विहिप प्रखंड अध्यक्ष अजय मिश्रा, उपाध्यक्ष एडवोकेट अमित ठठेरा, सेवा प्रमुख कृष्ण मुरारी चेजारा, बजरंग दल के प्रखंड संयोजक दीपेंद्र योगी, प्रतीक कुमावत, हेमन्त सैनी, पंकज सैनी आदि मौजूद थे।

शस्त्र पूजन के बाद घोष की धुन पर निकला आरएसएस का पथ संचलन

श्रीमाधोपुर। शहर के स्टेशन रोड स्थित राउमावि से आरएसएस का द्वि पथ संचलन शहर के मुख्य बाजारों से होता हुआ वापस स्कूल के मैदान में पहुंचा जहां पथ संचलन का समापन हुआ।। अनुशासन के साथ घोष की धुनों पर सैकड़ों स्वयंसेवक %संगठन गढ़े चलो सुपंथ पर बढ़े चलो% कहते हुए चल रहे थे। दो मार्गो से निकला पथ संचलन का संगम श्री गोपीनाथ मंदिर के पास रींगस बाजार में हुआ।

पथ संचलन में संघ के स्वयंसेवक एक ही लय और अनुशासन में चलते हुए नजर आए। पथ संचलन का शहर में करीब 2 दर्जन से ज्यादा जगह पर पुष्प वर्षा करके स्वागत किया गया। इससे पहले एकत्रीकरण के बाद शस्त्रों की पूजा की गई। नगर कार्यवाह रामोतार महर्षि ने बताया कि इस दौरान मुख्य वक्ता जयपुर के सह प्रांत कार्यवाह कृष्ण कुमार अडानिया ने कहा कि समाज में जातिभेद न रहे। हर वर्ग में राष्ट्रीयता का भाव प्रवाहित होना चाहिए। नगर संघचालक जटाशंकर व्यास और बाल एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. विजय शर्मा ने स्वयंसेवकों से एकजुटता के सूत्र में बंध कर राष्ट्रसेवा में सदैव आगे रहने का आह्वान किया। इस मौके पर सह नगर कार्यवाह अरूण कुमार, नगर प्रचार प्रमुख दिव्यांश भारती समेत संघ से जुड़े काफी संख्या में स्वयंसेवक मौजूद थे।

बारिश के बीच ठंड ने दिखाया रंग

जयपुर। प्रदेश में बारिश का दौर अभी थमा नहीं है। मानसून की विदाई के बाद भी प्रदेश के पूर्वी इलाकों में बरसात का दौर जारी है। पिछले चार दिनों से प्रदेश के 12 से ज्यादा जिलों में बरसात का मौसम बना हुआ है। मौसम विभाग की ओर से रोजाना बारिश का अलर्ट जारी किया जा रहा है। इसके चलते जयपुर समेत कुछ जिलों में हल्की बारिश से ठंडक का अहसास होने लगा है। मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर सोमवार को भी 17 जिलों में बरसात का येलो अलर्ट जारी किया है। रविवार को अजमेर में अधिकतम तापमान 30.1 डिग्री सेल्सियस, भीलवाड़ा में 26.7, जयपुर में 30, कोटा में 26.4, उदयपुर में 25.5, चित्तौड़गढ़ में 27.5 और जोधपुर में 31.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। उदयपुर में पिछले 24 घंटे के दौरान 4 इंच यानि 100 एमएम से ज्यादा बरसात दर्ज हुई। अक्टूबर महीने में सर्वाधिक बारिश का यह नया रिकॉर्ड बना है।

सोमवार को 17 जिलों में येलो अलर्ट

राज्य में आज भी बारिश की संभावना है। मौसम विभाग ने 17 जिलों में येलो अलर्ट जारी किया है। इन जिलों में हल्की बारिश हो सकती है। इसके साथ ही राजस्थान के दक्षिणी हिस्से जिसमें उदयपुर, कोटा और जोधपुर संभाग शामिल हैं, में अगले 3-4 दिन बादल छाए रहने और मेघगर्जन के साथ मध्यम बारिश की संभावना है। राज्य के उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी हिस्सों में मौसम मुख्यत: शुष्क रहने की संभावना है।

एकादशी पर बाबा श्याम का मनमोहक श्रृंगार

खाटूश्यामजी। कस्बे में स्थित बाबा श्याम के दरबार में आश्विन शुक्ल पक्ष की एकादशी व द्वादशी के अवसर पर दो दिवसीय मेला आज से शुरू हुआ। अल सुबह से श्याम भक्त बाबा श्याम के दर्शन करके मन्नोतिया मांगते नजर आए। श्याम दीवाने श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा बनाई गई व्यवस्था में कतारबद्ध होकर बाबा श्याम के जयकारे लगाते हुए बाबा श्याम के दरबार में पहुंच रहे हैं। श्याम भक्त एकादशी पर हाथों में निशान लिए बाबा श्याम से अरदास करने खाटू नगरी में आ रहे हैं।इसके साथ ही श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा एकादशी पर बाबा श्याम का मनमोहक श्रृंगार किया गया है वहीं भक्तों के सैलाब को देखते हुए मंदिर कमेटी सुगम दर्शन व्यवस्थाओं को माकूल इंतजाम किए गए हैं।दो दिवसीय मेले में मंदिर कमेटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह चौहान के नेतृत्व में सम्पूर्ण व्यवस्थाओं पर पैनी नजर बनाए हुए हैं। श्याम बाबा के दो दिन चलने वाले इस मासिक मेले में पुलिस प्रशासन भी मुस्तैद नजर आ रहा है।

एकादशी पर भीड़ को देखते हुए उपखंड अधिकारी मोनिका सामोर, तहसीलदार महिपाल सिंह राजावत, डीवाईएसपी पार्थ शर्मा के नेतृत्व में दर्शन व्यवस्थाओं को लेकर अलर्ट रहते हुए व्यवस्था की। वही थानाधिकारी राजाराम लेघा के नेतृत्व में पुलिस थाने का जाब्ता, पुलिस लाइन का अतिरिक्त जाब्ता, होमगार्ड्स,सिक्योरिटी गार्ड्स के साथ-साथ स्पेशल क्यूआरटी टीम, एसडीआरएफ टीम के जवानों ने भीड़ को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था के साथ-साथ दर्शन व्यवस्था में सहयोग किया।

फैक्ट्री में चोरी के इरादे से घुसे आरोपी को पकड़कर पुलिस को सौंपा

श्रीमाधोपुर। शहर के रीको इंडस्ट्रीज एरिया जालपाली में एक फैक्ट्री में चोरी करने के इरादे से घुसे तीन लोगो में से एक जने को फैक्ट्री के लोगो ने पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। रीको एरिया श्रीमाधोपुर निवासी श्रीनिवास पांडे ने बताया कि माउंट प्रभात एग्रसो प्राइवेट लिमिटेड रीको एरिया जालपाली में 11 अक्टूबर को सुबह 9 बजे चौकीदार ट्यूबवैल चालू करने गया तो ट्यूबवैल की करीब 15 मीटर केबल कटी हुई थी। प्लॉट के ऑफिस ब्लॉक के सभी ताले टूटे हुए थे। वही प्रमोद इंडस्ट्रीज तेल मिल के चौकीदार श्रवण सिंह ने भी शनिवार को थाने में रिपोर्ट दी थी कि चोरी के इरादे से फैक्ट्री में घुसे चोरो ने फैक्ट्री व मकान के 14 ताले तोड़ दिए।

चोरो को कीमती सामान नही मिलने पर तोड़फोड़ कर दी जिससे काफी नुकसान हुआ। रविवार को फिर से तीन जनें चोरी के इरादे से प्रमोद इंडस्ट्रीज तेल मिल में घुस गए, जिनमें से एक को पकड़कर पुलिस को सौंप दिया। इधर मामले में थानाधिकारी जयसिंह बसेरा ने बताया कि आरोपी को पकड़ने के बाद किसी ने रिपोर्ट नही दी। आरोपी सोनू उर्फ कालू सांसी निवासी रींगस को शांतिभंग में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

आज का राशिफल

मंगलवार, 15 अक्टूबर, 2024

- **मेष :** आपका योजनाबद्ध तरीके से अपनी दिनचर्या व कार्य को करना आपको अपने लक्ष्य हासिल करने में सहायता करेगा। कुछ समय बच्चों के साथ व्यतीत करने से उनका मनोबल बना रहेगा। कहीं फंसा हुआ या उधार दिया हुआ पैसा वापस मिलने की उम्मीद है।
- **वृष :** आपने अपनी उपलब्धियां, उम्मीद संबंधी जो सपने सजाए थे। वो बहुत हद तक पूरे हो सकते हैं, इसलिए जोश और मेहनत के साथ अपने काम निपटाने की कोशिश करते रहें। कॉम्पिटिशन के दौर में खुद को साबित करने का अच्छा मौका है।
- **मिथुन :** आज सोच-विचार तथा आत्म निरीक्षण करने का समय है। किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात आपके लिए वरदान साबित होगी। स्थान परिवर्तन की योजना बन रही है, तो अनुकूल समय है। दूसरों के मामले में बिना वजह हस्तक्षेप ना करें।
- **कर्क :** आप अपनी व्यवस्थित दिनचर्या और कार्यप्रणाली से अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे। जिससे आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और मान-सम्मान में भी वृद्धि होगी। कोई उधार दिया हुआ अथवा रुका हुआ पैसा मिलने की भी संभावना है।
- **सिंह :** घर के किसी सदस्य के विवाह संबंधी तैयारियों में व्यस्तता रहेगी। यह समय मानसिक शांति व संतोषदायक है। भाइयों के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। फायदेमंद यात्रा हो सकती है। वैभव संबंधी वस्तुओं की खरीदारी भी संभव है।
- **कन्या :** घर में व्यवस्था बनाए रखने तथा रखरखाव संबंधी काम की अधिकता रहेगी, परंतु आप पूरे मनोयोग और उर्जा से उन्हें संपन्न करने में सक्षम भी रहेंगे। किसी नजदीकी व्यक्ति की मुसीबत में उसका सहयोग करने से आत्मिक खुशी मिलेगी।
- **तुला :** इस समय प्रैक्टिकल तरीके से अपने कार्यों को अंजाम दें, क्योंकि भावनाओं में आकर आप नुकसान कर सकते हैं। कोई प्रॉपर्टी संबंधी मसला हल होने की संभावना है। इसलिए प्रयासरत रहे। युवा वर्ग को अपनी मेहनत के अनुरूप शुभ परिणाम भी हासिल होंगे।
- **वृश्चिक :** प्रॉपर्टी अथवा वाहन से संबंधित लोन लेने का प्रयास कर रहे हैं तो आज आपकी समस्या हल हो सकती हैं। आज का दिन परिवार के साथ आराम और मौजमस्ती में व्यतीत होगा।घर के बदलाव संबंधी योजनाएं क्रिया रूप में परिणित हो सकती हैं।
- **धनु :** पारिवारिक व्यवस्था को लेकर कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे। पैतृक संपत्ति या किसी भी प्रकार का विवाद आज किसी की मध्यस्थता से सुलझाने का उचित समय है।
- **मकर :** राजनीतिक संबंधों द्वारा पिछले काफी समय से कोई रुका हुआ मामला हल हो जाएगा। इस समय कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी मिलने की संभावना है। भूमि संबंधी किसी गतिविधि में निवेश करने के लिए समय अनुकूल है। अपने ऊपर अतिरिक्त कार्यभार ले लेने से अत्यधिक थकान और परेशानी महसूस करेंगे।
- **कुंभ :** आज का दिन घर की सुख सुविधा संबंधी कार्य और जरूरत संबंधी वस्तुओं की खरीदारी में व्यतीत होगा। घर के बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद व स्नेह परिवार पर बना रहेगा।
- **मीन :** अपनी दिनचर्या व्यवस्थित करने से आपके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। अनुभवी तथा प्रभावशाली लोगों के साथ संपर्क बनेंगे तथा नई-नई जानकारियां भी हासिल होगी। किसी धार्मिक स्थल पर भी जाने का प्रोग्राम बन सकता है।

पीड़ित मुक्त राजस्थान अभियान की शुरूआत

सड़क किनारे बैठे आश्रयहीन, असहाय, बीमार, लावारिस प्रभुस्वरूप पीड़ितों का करेंगे इलाज, देगें सहारा

धौलपुर, 15 अक्टूबर। राजस्थान को आश्रयहीन, असहाय, नि:शक्त, लावारिस मुक्त कराने के उद्देश्य से संस्था मां माधुरी बृज वारिस सेवा सदन ''अपना घर'' तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के संयुक्त तत्वाधान में विशेष रेस्क्यू अभियान संपूर्ण राजस्थान में एक साथ चलाया जा रहा है।

इसी कड़ी में जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी के निर्देशन में अपना घर संस्थान धौलपुर एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग धौलपुर की ओर से सोमवार को विशेष रेस्क्यू अभियान की शुरुआत की गई। इस दौरान धौलपुर शहर जैसे रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड, सार्वजनिक स्थल, धार्मिक स्थल सहित ग्रामीण क्षेत्र में टीमें निरीक्षण करते हुए निराश्रितों का इलाज करने के साथ ही उन्हें रहवासीय सुविधा भी उपलब्ध करवायी जायेगी। अभियान 19 अक्टूबर 2024 तक चलाते हुए प्रभुजनों को भर्ती किया जायेगा। रेस्क्यू किये प्रभुजनों की सूचना संबंधित थाने में इंद्राज की जायेगी एवं उनका पुनर्वास किया जायेगा।

संस्था अपना घर आश्रम बाड़ी द्वारा अपना हेल्पलाइन नंबर 8949838684 जारी किया गया है। हेल्पलाईन नंबर पर जिले का कोई भी आम नागरिक सूचना दे सकता है। सोमवार को जिले से विशेष रेस्क्यू अभियान का शुभारम्भ आव्हाद निवृत्ती सोमनाथ मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद द्वारा एम्बुलेंस को हरी झंडी दिखाकर किया गया।

इस अवसर पर देवेन्द्र सिंह जांगल, जिला समाज कल्याण अधिकारी, अपना घर आश्रम से सुनील गर्ग, सरंक्षक, राजुद्दी खान, अध्यक्ष, वासुदेव गर्ग, संरक्षक, एड. मुकेश बंसल, एड. कीर्ति राजावत, एड. जितेन्द्र चौहान, श्याम मनोहर कुलश्रेष्ठ, समाज कल्याण विभाग से बीएसएसओ मनीराम शर्मा आदि उपस्थित रहे।

शरद महोत्सव के दौरान आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने हेतु दिए दिशा निर्देश

धौलपुर, 15 अक्टूबर। शरद महोत्सव के दौरान आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने हेतु एवं मेले की तैयारियों हेतु जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में संबंधित विभागीय अधिकारियों को मेले की तैयारियों हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। उन्होंने महोत्सव के दौरान मेला नियंत्रण कक्ष एवं ऑवर्जेवेशन रूम स्थापित कर पर्याप्त मात्रा में आवश्यक संसाधनों सहित स्थापित करने के निर्देश दिए। साथ ही मेला स्थल पर पेयजल, बिजली, चिकित्सा आदि सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि समस्त विभाग आपस में समन्वय स्थापित करते हुए पर्यटन विभाग द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुसार आवश्यक व्यवस्थाएं करना सुनिश्चित करें। उन्होंने आयुक्त नगर परिषद को दुकाने व पार्किंग, लाइट्स आदि के संबंध में आवश्यक व्यवस्थाएं किये जाने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने पुलिस विभाग को मेले के दौरान शांति व्यवस्था, यातायात प्रबंधन एवं सुरक्षात्मक व्यवस्था हेतु निर्देश दिए। इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी डॉ. साधना शर्मा, नगर परिषद आयुक्त अशोक शर्मा सहित अन्य उपस्थित रहे।

भारतीय संस्कृति और कला आधारित होंगी विभिन्न प्रतियोगिताएं, दूसरे दिन उपमुख्यमंत्री बैरवा होंगे मुख्य अतिथि

उदयपुर, 15 अक्टूबर। मीरा-प्रकाश वर्मा फाउंडेशन के तत्वावधान में उदयपुर में 16 और 17 अक्टूबर 2024 को 69वां मीरा महोत्सव मनाया जाएगा। इसके तहत विविध सांस्कृतिक आयोजन व प्रतियोगिताएं होंगी। महोत्सव के दूसरे दिन समापन समारोह में उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा मुख्य अतिथि के रूप में सान्निध्य प्रदान करेंगे।

फाउंडेशन के अध्यक्ष लव वर्मा ने बताया कि पिछले 68 वर्षों से यह संस्थान मीरा बाई के जीवन दर्शन, लोक कला के संरक्षण और कलाकारों को मंच प्रदान करने में अग्रणी रहा है। यह संस्थान उदयपुर का एकमात्र ऐसा केंद्र है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए कार्य कर चुका है।

इस वर्ष का महोत्सव उदयपुर के सेक्टर-11 स्थित प्रकाश वर्मा ऑडिटोरियम में किया जा रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत 16 अक्टूबर को सुबह 9 बजे से होगी, जिसमें मीरा बाई भजन, समूह गायन, और नृत्य प्रतियोगिताएं होंगी। इनमें उदयपुर के विभिन्न विद्यालय और विश्वविद्यालय के छात्र भाग लेंगे। इसके साथ ही मीरा बाई से संबंधित चित्रकला, निबंध, और वीडियो क्लिप प्रतियोगिताएं भी होंगी। तीनों प्रतियोगिताओं में प्रतिभागी मीरा बाई के जीवन दर्शन के संबंध में बना सकते हैं जो वर्तमान समाज के लिए भी प्रासंगिक हों। प्रतिभागियों को अपनी प्रविष्टियां 16 अक्टूबर सुबह 10 बजे तक जमा करानी होंगी। प्रतिभागी अपनी प्रविष्टियां 8000980177 व 9351773281 पर भेज सकेंगे।

दोनों दिन शाम को सांस्कृतिक संध्या होंगी। सायं 7 बजे से शहर और अन्य स्थानों के प्रतिष्ठित कलाकार मीरा नृत्य नाटिका, लोक कला, शास्त्रीय संगीत, और वाद्य यंत्रों का प्रदर्शन करेंगे। महोत्सव में मीरा बाई के जीवन और उनकी कला को जीवंत करने का यह एक अनूठा प्रयास होगा।

पहले दिन के समारोह के मुख्य अतिथि नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ व राजसमंद सांसद महिमा कुमारी मेवाड़ होंगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी राजकुमार फत्तावत करेंगे तथा मुख्य वक्ता आलोक संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत होंगे। वे 'भक्ति और शक्ति का प्रतीक- मीरा बाई' विषय पर उद्बोधन देंगे।

दूसरे दिन के समारोह के मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा होंगे। अध्यक्षता उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा करेंगे। मुख्य वक्ता इतिहासविद प्रताप सिंह झाला होंगे। वे 'मीरा बाई की तथ्यपरक प्रामाणिक जीवनी' पर उद्बोधन देंगे।

वर्मा ने बताया कि इस वर्ष डॉ. प्रेम भण्डारी, पंडित हरिओम वर्मा, श्रीमती मदना बनावत व श्रीमती सरस्वती देवी धांधड़ा को कलापुरोधा श्री प्रकाश वर्मा कला सम्मान प्रदान किया जाएगा।

कृषि महाविद्यालय बसेड़ी पर तीन दिवसीय खेल एवं सांस्कृतिक टूर्नामेंट का हुआ शुभारम्भ

धौलपुर, 15 अक्टूबर। कृषि महाविद्यालय बसेडी पर तीन दिवसीय खेल एवं सांस्कृतिक टूर्नामेंट का शुभारम्भ सोमवार को महाविद्यालय के डीन डॉ. उदय भान सिंह ने फीता काटकर किया। खेल प्रभारी डॉ. भवानी सिंह मीणा ने बताया कि कबड्डी पुरुष वर्ग में कृषि स्नातक चतुर्थ वर्ष ने प्रथम वर्ष को 26-13 से हराया तथा महिला वर्ग में प्रथम वर्ष ने तृतीय वर्ष को 16-8 से हराया। टेबिल टेनिस पुरुष वर्ग में वीरेन्द्र भील ने विशाल को 2-0 से व महिला वर्ग में प्रिया सैनी ने खुशी नामा को 2-0 से हराया। सांस्कृतिक सचिव डॉ. निधि त्यागी ने बताया कि रंगोली प्रतियोगिता में टीना वर्मा, क्ले मोडलिंग में आर्या कुमावत, काटूर्निंग में विजय नागर तथा स्पोट पेटिंग में विजय नागर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। डॉ. रवि कुमार मीणा, डॉ. आशीष शीरा, चन्द्रगुप्त मौर्य व नरेन्द्र ने रेफरी की भूमिका निभाई। डॉ. उदय भान सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए पढाई के साथ खेल-कूद व सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेना जरूरी है। इससे मानसिक विकास के साथ शारीरिक विकास होता है, व्यक्ति में टीम भावना पनपती है व व्यक्ति अनुशासन में रहना सीखता है। डॉ. अरविंद कुमार ने कहा कि खेल को हार-जीत से ऊपर खेल भावना से खेलना चाहिए। इस अवसर पर डॉ. शिवमूरत मीणा, डॉ. एस.के. दूबे, किरन मीणा सहित समस्त स्टाफ व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संघ समाज में संस्कार व देशभक्ति की भावना भरने का कार्य कर रहा है - पुलक सागर जी महाराज

इंडिया गुलामी का प्रतीक है हमें भारत ही बोलना चाहिए - पुलक सागर जी महाराज

भगवान बिरसा मुण्डा की 150वीं जन्म जयंती पर्व को सर्व समाज मिलकर मनाए - निम्बाराम

उदयपुर, 15 अक्टूबर। ऋषभदेव भगवान की पावन धरा पर आरएसएस का विजयादशमी उत्सव कार्यक्रम संपन्न हुआ, कार्यक्रम की शुरुआत मे संचलन निकला जिसमें पूर्ण गणवेश में स्वयंसेवकों ने घोष के वाहन के साथ कदम से कदम मिलाकर नगर संचलन किया।

नगर में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, समाज के प्रबुद्ध जन, व मातृशक्ति ने जगह जगह स्वागत सत्कार किया। संचलन में कुछ दूरी तक पूज्य राष्ट्रीय संत पुलक सागर जी गुरुदेव भी संचलन के आगे चले। संचलन टाउन हॉल मैदान से शुरू होकर नगर भ्रमण के बाद पुन: टाउन हॉल पहुंचा, जहाँ पुलक सागर जी महाराज व निम्बाराम जी क्षेत्रीय प्रचारक के द्वारा सर्वप्रथम शस्त्र पूजन हुआ, उन्होंने संघ के 100 वें वर्ष में प्रवेश के साथ ही प्रत्येक मंडल,व ग्राम स्तर तक शाखाओ की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है। शाखाओ के माध्यम से व्यक्ति निर्माण का कार्य चल रहा है, समाज मे विभिन्न सामाजिक सरोकार के कार्य को आज करने की आवश्यक्ता है।निम्बाराम जी ने कहा छुआछूत ऐसी गंभीर बीमारी है इसे खत्म कर प्रत्येक हिन्दू को गले लगाना होगा, हमें संयुक्त परिवार को बढ़ावा देना होगा,आगामी 15 नवम्बर को भगवान बिरसा मुण्डा के 150 वी जन्म जयंती वर्ष पर सभी समाज मिलकर के महापुरुष की जयंती मनाए।

बिरसा मुंडा ने समाज जागरण के।लिए अपना सर्वस्व जीवन लगा दिया। अहिल्याबाई होलकर ने समाज के लिए श्रेष्ठ कार्य किया आज उनकी 350 वीं जन्म जयंती पर्व को सभी मिलकर मनाएं, उन्होंने कहा की महापुरुष किसी एक समाज के नही होते, वे सभी के होते है। अंत में उन्होंने समाज में पर्यावरण, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य, समरसता एवं स्वदेशी के विषय भी व्यक्तिगत व परिवारों में ले जाने की आवश्यकता बताते हुए कहाँ की इन पञ्च परिवर्तन से एक सशक्त समाज और समाज से समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होगा।

उन्होंने एक गीत संस्कृति सबकी एक चिरंतन खून रगों में हिन्दू है... की पंक्ति का गान करते हुए अपने विचार रखे।

समापन पर पूज्य संत पुलक सागर जी ने कहा भारत शक्तिशाली राष्ट्र बना है जिसमे संघ की बड़ी भूमिका है, देश भक्ति, अनुशासन, चरित्र व सत्यनिष्ठा स्वयंसेवकों से सीखनी चाहिए, संघ किसी पार्टी, जाति या धर्म का विरोधी नही है।

प्रत्येक स्वयंसेवक के लिए राष्ट्र प्रथम है, देश के पतन का कारण संस्कृति, सभ्यता, भाषा, व संस्कार समाप्त होने से है, भारत को खतरा दुश्मनों से नहीं भारत मे रहने वाले षड़यंत्रकारी तत्वों से है, षड़यंत्रकारी शक्तियां हिन्दू समाज को जातियों मे बाटने का कुत्सित प्रयास कर रहे है। स्वयंसेवक इनकी मंशा को सफल ना होने देंगे, इंडिया गुलामी का प्रतिक है हमें भारत ही बोलना चाहिए, भारत जमीन का टुकड़ा नहीं हम सब भारत है, मै संचलन मे चला तो ऐसा लगा पूरा देश मेरे साथ चल रहा है। इस अवसर पर समाज के कई प्रबुद्धजन, मातृशक्ति भी बड़ी संख्या में उपस्थित रही।

आरपीएफ बैरक कोटा में भारत स्काउट एवं गाइड की सातवीं राज्य रैली का आयोजन

कोटा, 15 अक्टूबर। पश्चिम मध्य रेल भारत स्काउट एवं गाइड की पाँच दिवसीय सातवीं राज्य रैली का आयोजन 15 अक्टूबर से रेल सुरक्षा बल (आरपीएफ) बैरक रिजर्व लाइन कोटा में आयोजित किया जा रहा है। जिसमे कोटा सहित जबलपुर एवं भोपाल मंडल के कुल 390 प्रतिभागी शामिल होंगें।

इस भारत स्काउट एवं गाइड की राज्य रैली में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। जिसमें लोकनृत्य, प्रश्नमंच, भक्तिगीत, प्रदर्शनी, कैंपफायर, कलर पार्टी, रंगोली, आपदा प्रबंधन, एथनिक फैशन शो एवं बौद्धिक प्रतियोगिता मनोरंजन और खेलों पर आधारित गतिविधियाँ इत्यादि आयोजित किये जाएंगे। इस राज्य रैली कार्यक्रम उद्घाटन में मुख्य अतिथि मण्डल रेल प्रबंधक मनीष तिवारी एवं समापन अवसर 18 अक्टूबर को मुख्य अतिथि पश्चिम मध्य रेलवे महाप्रबंधक शोभना बंदोपाध्याय होंगी। भारत स्काउट एवं गाइड की सातवीं राज्य रैली कार्यक्रम दिनांक 15.10.2024 से 19.10.2024 तक चलेगी। पश्चिम मध्य रेल भारत स्काउट एवं गाइड की सातवीं राज्य रैली के आयोजन की समस्त तैयारियों को कोटा मंडल द्वारा पूरा कर लिया गया। इसका उद्घाटन डीआरएम द्वारा 15 अक्टूबर शाम 04.00 बजे किया जाएगा।

संत निरंकारी यूथ सिंपोजियम क्रिकेट बैडमिंटन प्रतियोगिता में उत्साह के साथ खिलाड़ियों ने खेल कर अच्छा संदेश दिया, नयापुरा स्टेडियम में संपन्न हुआ

कोटा, 15 अक्टूबर। 14 अक्टूबर संत निरंकारी मंडल के तत्वाधान में कोटा जोन का क्रिकेट बैडमिंटन एवं खेलकूद प्रतियोगिता से कुशल संपन्न हुई। जिसमें 19 क्रिकेट टीमों के बीच उत्साह के साथ बैडमिंटन युवतियां एवं क्रिकेट युवाओं ने भरपूर उत्साह के साथ खेल कर एक अच्छा संदेश दिया। जोनल इंचार्ज संत बृजराज सिंह जी यादव ने कहा कि यह बच्चे सारे स्टूडेंट है व सेवा, सिमरन, सतसंग से जुडे हुए है इनमें अच्छे संस्कार है पढ़ाई में भी यह बच्चे प्रथम रहते हैं खेलकूद में भी आगे रहते हैं यह सौभाग्य का विषय होता है जब ऐसे अवसर प्राप्त होते हैं। अच्छे बच्चे बुराई और फिजूल की बातों से दूर रहते हैं। सत्संग से जुड़े हुए बच्चे अपनी एनर्जी ऊर्जा का सदुपयोग करते हैं इस अवसर पर पूर्व महापौर डॉ रत्ना जैन ने कहा कि बचपन से ही बच्चों को अच्छे संस्कार देने से बच्चों का भविष्य उज्जवल होता है क्योंकि बच्चे गीली मिट्टी होते हैं जैसे डालो ढल जाते हैं हर माता-पिता का कर्तव्य है बच्चों को बचपन से ही सेवा सिमरन सत्संग से जोड़ना चाहिए जिससे बच्चों में पेशेंस सहनशीलता नम्रता करुणा दया प्रेम प्यार मानवता भाईचारा आए हर बच्चों में हिंडोली के मुख्य संत जसविंदर जी ने कहा कि सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की कृपा से क्रिकेट बैडमिंटन प्रतियोगिता कार्यक्रम संपन्न हुआ है आगामी उदयपुर में 20 सितम्बर को एक विशाल कार्यक्रम संपन्न होगा युवाओं का जिसमें गुजरात राजस्थान के युवा बालक बालिकाएं भाग लेंगे।

अवैध भंडारण करने पर 4 गैस सिलेंडर जब्त

कोटा, 15 अक्टूबर। जिले में घरेलू सिलेंडर के दुरुपयोग की रोकथाम अभियान के तहत 4 गैस सिलेंडर जब्त किए। सम्बन्धित फर्म के विरुद्ध आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 6 ए के अन्तर्गत कार्यवाही की जाएगी।

जिला रसद अधिकारी प्रथम, कोटा कार्तिकेय मीणा के निर्देशन में सोमवार को प्रवर्तन अधिकारी अदिति जगरवाल, संध्या सिन्हा, प्रवर्तन निरीक्षक कृष्ण कुमार यादव विज्ञान नगर क्षेत्र में घरेलू गैस सिलेण्डरों के दुरूपयोग व अवैध भण्डारण की जॉच बाबत मौके पर पहुंचे।

विज्ञान नगर में छत्रपुरा तालाब में स्थित अल जहूर व्हील एलाइनमेंट एण्ड कार वॉशिंग सेंन्टर, के मालिक मोहम्मद हुसैन निवासी 1-ए-10 विज्ञान नगर, कोटा द्वारा अवैध रूप से गैस सिलेंडर का भण्डारण करने पर मौके से से 1 घरेलू तथा 3 वाणिज्यिक गैस सिलेंडर को जब्त किया गया। जब्त कुल 04 गैस सिलेंडर को सुरक्षा एवं साक्ष्य की दृष्टि से नजदीकी गैस ऐजेन्सी को सुपुर्दगी में दिया गया एवं सम्बन्धित फर्म के विरुद्ध आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 6 ए के अंतर्गत न्यायालय श्रीमान जिला कलक्टर महोदय, कोटा में प्रकरण दर्ज कराया जायेगा।

स्टेशनों पर प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के लिए चलाया गया अभियान

कोटा, 15 अक्टूबर। मंडल में 15 दिवसीय स्वच्छता पखवाड़ा एवं स्वच्छता अभियान 4.0 डीआरएम मनीष तिवारी के मार्गदर्शन में चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत प्रतिदिन विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

इस अभियान के अंतर्गत 14 अक्टूबर को सिंगल यूज प्लास्टिक उपयोग न करने के प्रति जागरूकता के लिए कोटा सहित मंडल के प्रमुख रेलवे स्टेशनों जैसे- सवाई माधोपुर, भरतपुर एवं गंगापुर सिटी पर संचालित खानपान स्टालों का खानपान निरीक्षकों द्वारा औचक निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के दौरान कोटा में दो, सवाई माधोपुर में दो एवं गंगापुर में एक खानपान स्टाल पर सिगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करते पाया गया जिसे तुरंत ही नष्ट कराया गया साथ ही भविष्य में इसका उपयोग न करने के संबध में सख्त चेतावनी दी गयी।

साथ ही खान-पान यूनिटों, स्टालों, फूड प्लाजा, रिफ्रेशमेंट रूमों और स्वास्थ्य यूनिटों की स्वच्छता, खाद्य सामग्री की गुणवत्ता और उनकी वैधता तिथि की जांच की गई। इसके अतिरिक्त स्टेशन परिसर, प्लेटफार्मों, कांकोर्स एरिया, सर्कुलेटिंग एरिया, एफओबी, रेलवे ट्रैक और यार्ड क्षेत्रों की गहन सफाई सुनिश्चित की। स्वच्छता पखवाड़ा के अग्रिम/अंतिम चरण में स्वच्छता जागरूकता रैली निकाला जाएगा।

यात्रियों से अपील की गई कि सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करें और स्टेशन की स्वच्छता बनाए रखने में रेल प्रशासन का सहयोग करें।

अंतर विभागीय समन्वय एवं विभिन्न योजनाओं की प्रगति समीक्षा बैठक

कोटा, 15 अक्टूबर। अंतर विभागीय समन्वय एवं विभागीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा बैठक सोमवार अतिरिक्त जिला कलक्टर (एडीएम) मुकेश चौधरी की अध्यक्षता कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों की योजनाओं की समीक्षा की गई और आवश्यक निर्देश दिए गए। अतिरिक्त जिला कलक्टर ने पशुपालन विभाग को निर्देश दिए कि गौशालाओं में मौजूद सभी पशुओं का नियमित टीकाकरण सुनिश्चित किया जाए।

आरएनटी स्पोर्ट्स क्रिकेट क्लब ने 15 रनों से अजमेर को हराया

उदयपुर, 15 अक्टूबर। राज्य स्तरीय पंचम नर्सेज एवं पेरामेडिकल कोरोना वारियर्स क्रिकेट खेलकुद प्रतियोगिता जयपुर में आयोजित की जा रही हैं।

मिडिया प्रभारी नरेश पूर्बिया ने बताया कि आरएनटी स्पोर्ट्स क्लब उदयपुर व अजमेर के बीच खेला गया। उदयपुर के कप्तान गुलाम नबी ने टोस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए टीम ने दस ओवर में पांच विकेट खोकर 75 रन बनाए।

प्रशांत सोनी ने पहली गेंद पर चौका लगातें हुए 11 गेंद खेलकर 11 रन बनाए।गौरव सिंह राठौड़ ने 24 गेंद खेल कर चार चौके के बदोलत 30 रन बनाए। मनीष जीनगर ने 16 गेंद में 13 रन, पीयूष शर्मा ने 2 गेंद में 1 रन, मुकेश वेद ने 4 गेंद खेलकर 3 रन, मुकेश रेगर ने 1 गेंद खेलकर 1 रन, सार्वेश ने 2 गेंद खेलकर 4 रन बनाए। एक्स्ट्रा 12 रन के बदोलत 5 विकेट खोकर 75 रन बनाए। प्रशांत सोनी ने घातंक गेंदबाजी करते हुए 2 ओवर कर 12 रन देकर 3 महत्वपूर्ण विकेट लिए। सार्वेश ने 2ओवर कर 6 रन देकर 2 विकेट लिए।

पुखराज सोलंकी ने 2 ओवर कर 7 रन देकर 2 विकेट लिए। मनीष जीनगर ने 1ओवर कर 3 रन दिए।गौरव पंडिया ने 1ओवर कर 10 रन, मुकेश वेद ने 2ओवर कर 17 रन दिए। एक्स्ट्रा 17 रन के बदोलत 9 विकेट खोकर 10ओवर में 60 रन ही अजमेर बना पाई। उदयपुर ने अजमेर को 15 रनों हराया।

हंसराज मीणा, गोविंद ने शानदार फिल्डिंग की। भोम सिंह व मनीष शर्मा ने दौड़ दौड़ कर पानी पिला कर रिहाइड्रेशन किया व खेल सामग्री पहुंचाई। कोच सचिन वैष्णव ने बताया कि मैन आफ मैच प्रशांत सोनी को दिया गया।

एक दर्जन से अधिक देशों में देखा जा रहा दशहरा मेला, निगम के यूट्यूब पर रोज बढ़ रहे दर्शक

कोटा, 15 अक्टूबर। 131वां राष्ट्रीय दशहरा मेला सोशल मीडिया के माध्यम से अब अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाता हुआ दिख रहा है। इस बार मेला समिति की ओर से नवाचार करते हुए दशहरे मेले का प्रचार-प्रसार सोशल मीडिया पर भी शुरू किया गया है। इसके लिए फेसबुक, यूट्यूब व इंस्टाग्राम पर पेज तैयार कर लाइव प्रसारण किया जा रहा है। मेला समिति अध्यक्ष विवेक राजवंशी ने बताया कि राष्ट्रीय दशहरा मेला के कार्यक्रमों को यूट्यूब चौनल पर एक दर्जन से अधिक देशों में देखा जा रहा है। भारत के अलावा अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, इंग्लैंड, वेल्स, स्कॉटलैंड, नॉर्दर्न आयरलैंड, बांग्लादेश, कनाडा, नेपाल, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, फिलिपींस, सऊदी अरब जैसे देशों में रहने वाले भारतीय अब तक निगम के यूट्यूब चौनल के माध्यम से अब तक हुए आयोजनों का आनंद ले चुके हैं।

भारत के 500 से अधिक शहरों और कस्बों में भी पहुंच: राजवंशी ने बताया की विदेशों के साथ भारत में भी कोटा का दशहरा मेला शहरों और कस्बों तक अपनी पहुंच बना रहा है। दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, चेन्नई, पुणे, हैदराबाद जैसे महानगरों, पिंपरी-चंचवाड़, इंदौर, अहमदाबाद बढ़ते शहरों से लेकर छोटे शहरों और कस्बों में भी यूट्यूब के माध्यम से कोटा के दशहरा मेला को देखा जा रहा है।

कार्यक्रम का लिंक जल्द देने का प्रयास: मेले के कार्यक्रमों का अपडेट देने के लिए यूट्यूब पर सीधे प्रसारण की लिंक तीन दिन पहले देने की कोशिश की जा रही है। चेयरमैन विवेक राजवंशी ने लोगों से भी आग्रह किया है कि मेले से जुड़े हुए अपडेट और कार्यक्रमों के लाइव प्रसारण के लिंक को अन्य शहरों, राज्यों और विदेशों में रहने वाले दोस्तों, परिचितों और रिश्तेदारों से भी साझा करें।

कार्यालय नगरपालिका पावटा-प्रागपुरा जिला कोटपूतली-बहरोड

क्रमांक :- न.पा.पा.प्रा./मानव संसाधन/2024-25/1145 दिनांक :- 10/10/2024

ई-निविदा सूचना (08/2024-25 NIB CODE - DLB2425A3292)

एतद्द्वारा यह है कि राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिए राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों/एनजीओ/संस्था/फर्म/सप्लायर्स से निर्धारित प्रपत्र में मोहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाईट **www.sppp.rajasthan.gov.in** एवं **www.eproc.rajasthan.gov.in** पर उपलब्ध हैं एवं किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय में आकर देखी जा सकती है।

UBN NO.- DLB2425SLRC10447

राज.संवाद/सी/24/6468 अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय नगरपालिका पावटा-प्रागपुरा जिला कोटपूतली-बहरोड

क्रमांक :- न.पा.पा.प्रा./मानव संसाधन/2024-25/1154 दिनांक :- 10/10/2024

ई-निविदा सूचना (11/2024-25 NIB CODE - DLB2425A3295)

एतद्द्वारा यह है कि राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिए राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों/एनजीओ/संस्था/फर्म/सप्लायर्स से निर्धारित प्रपत्र में मोहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाईट **www.sppp.rajasthan.gov.in** एवं **www.eproc.rajasthan.gov.in** पर उपलब्ध हैं एवं किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय में आकर देखी जा सकती है।

UBN NO.- DLB2425SLRC10450

राज.संवाद/सी/24/6475 अधिशाषी अधिकारी

पशु आहार संयंत्र, नदबई (भरतपुर) राजस्थान

RCDF/CFPNAD/F.( )/2024-25/ 3534-45 Date :- 04/10/2024

निविदा सूचना

कैटल फीड प्लान्ट नदबई पर निम्नलिखित कार्यो की निविदायें आमंत्रित की जाती है -

क्र. सं.	निविदा का नाम	अनुमानित लागत	निविदा का माध्यम	यूबीएन नम्बर
1.	पशु आहार परिवहन कार्य।	200 लाख	ऑनलाईन	CDF2425SLRC00723
2.	कम्प्यूटर-लैपटोप आपूर्ति।	4.50 लाख	सील बन्द लिफाफा	CDF2425GSOB00721
3.	प्रयोगशाला उपकरण व कैमीकल आपूर्ति।	5.00 लाख	सील बन्द लिफाफा	CDF2425GSRC00722
4.	मोटर रिवाईडिंग कार्य।	2.00 लाख	सील बन्द लिफाफा	CDF2425SSRC00720

निविदा से सम्बन्धित समस्त सूचनायें, निविदा प्रपत्र मय शर्तो के विभाग की बेबसाईट www.sarasmilkfed.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in, https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड जा सकती है।

प्रबन्धक, सीएफपी नदबई

राज.संवाद/सी/24/6455

जीवन में भरे रस-हमारा प्यारा

कार्यालय नगर निगम, भरतपुर

क्रमांक :- न.नि.भ./निर्माण/2024-25/483-489 दिनांक :- 09.10.2024

ई-निविदा सूचना-07/2024-25

नगर निगम, भरतपुर द्वारा स्वायत्त शासन विभाग में उपयुक्त श्रेणी में एवं अन्य विभागों के "A"&"AA" श्रेणी में पंजीकृत, अनुभवी संवेदकों एवं पंजीकृत अनुभवी एन.जी.ओ. से निर्धारित प्रपत्र में ई प्रोक्योरमेन्ट प्रकिया से वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। समस्त कार्यो के लिए धरोहर राशि के अनुमानित लागत पर नगर निगम में पंजीकृत सक्षम संवेदक द्वारा 1/2 प्रतिशत राशि एव अन्य विभागों के "A"&"AA" श्रेणी के सवेंदक द्वारा 2 प्रतिशत राशि पृथक-पृथक रूप खाते में RTGS/NEFT के माध्यम से जमा कराना होगा। निविदा की महत्वपूर्ण शर्तें एवं विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in/ पर देखा जा सकता है।

कार्यो की संख्या	02 कार्य ।
कार्यों की कुल लागत	49.88 लाख
वेब साईट http://eproc.rajasthan.gov.in से निविदा डाउनलोड करने की समय व तिथि	दिनांक 09.10.2024 से 22.10.2024 तक एवं सायं 6.00 बजे
वेब साईट http://eproc.rajasthan.gov.in से ऑनलाईन निविदा अपलोड करने की अन्तिम समय व तिथि	दिनांक 22.10.2024 सायं 6.00 बजे
नगर निगम में प्रोसेसिंग शुल्क निविदा शुल्क एवं अमानत राशि की यू.टी.आर. स्लिप भौतिक रूप से जमा कराने की तिथि	दिनांक 23.10.2024 दोपहर 12.00 बजे
निविदा खोलने की समय व तिथि	दिनांक 23.10..2024 दोपहर 3.00 बजे

UBN Number:-
1. DLB2425SLOB10508 2. DLB2425WSOB10509

राज.संवाद/सी/24/6486 आयुक्त नगर निगम, भरतपुर

Govt. Rajasthan
Office Of The Medical Superintendent
Govt. Medical College Allied Hospital, Bharatpur
email:- pmobpr@gmail.com

Order No. 5829 Date: 07.10.2024

E-tenders are invited Rate contract for Gauze & Bandage at Governmenment R.B.M. Hospital Bharatpur till date 17.10.2024 Other Details, Rules & Regulation and other conditions can you seen or download form **http://sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in.** NIB No:- MHS2425A2354, UBN No:- MHS2425GLRC03357
Estimate: 40.00 Lac

DIPR/C/9732/2024 **Medical Superintendent Govt. Medical College Allied Hospital Bharatpur**

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, सा.नि.वि. खण्ड-भरतपुर

क्रमांकः 3586 दिनांकः 08.10.2024

-:: निविदा सूचना संख्या 10/2024-25 ::-

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से इस खण्ड के अधीन **03 नं. कार्य एवं निविदा की कुल राशि रु. 136.00** लाख हेतु मोहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। जिससे संबंधित विवरण एवं सूचनाएं वेबसाइट **www.pwd.rajasthan.gov.in** एवं **www.dipr.rajasthan.gov.in** एवं **(http://sppp.rajasthan.gov.in)** पर देखी जा सकती हैं।
NIB Code: PWD2425A2054
UBN No.: 1. PWD2425WSOB07494, 2. PWD2425WSOB07495, 3. PWD2425WSOB07496

डीआईपीआर/सी/9768/2024 अधिशाषी अभियंता, सा.नि.वि. खण्ड-भरतपुर

आज का दिन

आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी, विक्रम सं. 2081, शक संवत् 1946, हिजरी 1446, तद्नुसार अंग्रेजी दिनांक 15 अक्टूबर, सन् 2024 ईस्वी। वार- मंगलवार, सूर्य-दक्षिणायण, ऋतु-शरद

सम्पादकीय

महाराष्ट्र चुनाव से पहले ओबीसी वोटों पर निशाना

महाराष्ट्र की महायुति सरकार ने गुरुवार को जिस तरह से ओबीसी आरक्षण के लिए निर्धारित नॉन क्रीमी लेयर सीमा को लगभग दोगुना करवाने का संकेत दिया, उससे दो बातें बिल्कुल साफ हो गई हैं। एक तो यह कि सत्तारूढ़ एनडीए खेमा हरियाणा में मिली अप्रत्याशित जीत से बने उत्साहपूर्ण माहौल में एक पल भी गंवाए बगैर अपना पूरा ध्यान महाराष्ट्र चुनाव पर लगा चुका है। दूसरी बात यह कि हरियाणा के अनुभव की रोशनी में उसने यहां सबसे बड़ा दांव ओबीसी समुदाय के वोटरों पर लगाने का फैसला किया है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से ऐन पहले की गई इस घोषणा का हरियाणा में भाजपा को मिली जीत से ही नहीं, वहां अपनाई गई रणनीति से भी सीधा संबंध है। चुनाव से पहले के हालात हरियाणा में भी भाजपा के अनुकूल नहीं थे। वहां मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने इसी साल जून महीने में ओबीसी समुदायों से जुड़े एक कार्यक्रम के दौरान नॉन-क्रीमी लेयर की सीमा बढ़ाने का वादा किया। कई एक्सपर्ट मानते हैं कि इस वादे ने अंदर ही अंदर इस समुदाय के वोटरों पर निर्णायक प्रभाव डाला।

महाराष्ट्र की राजनीति के संदर्भ में देखें तो यह फैसला और ज्यादा अहमियत रखता है। यहां मराठा आरक्षण की मांग पिछले कुछ समय से खासी चर्चित रही है। लोकसभा चुनावों से पहले राज्य सरकार ने मराठा समुदाय को ओबीसी कोटे के अंदर से ही रिजर्वेशन देने की घोषणा की थी। माना जाता है कि महायुति को इसका खामियाजा ओबीसी वोटरों की नाराजगी के रूप में भुगतना पड़ा। इस लिहाज से महायुति सरकार के ताजा फैसले को लोकसभा चुनावों की गलती को दुरुस्त करने के प्रयास के रूप में भी देखा जा रहा है। यह मांग कुछ कोनों से उठाई भी जा रही थी। आठ लाख की मौजूदा सीमा के कारण ओबीसी परिवारों का एक बड़ा हिस्सा जो इस सीमा से थोड़ा ही ऊपर था, वंचित महसूस कर रहा था। आर्थिक तौर पर सशक्त न होने के बावजूद वह आरक्षण का फायदा नहीं उठा पा रहा था। अगर यह सीमा 15 लाख रुपए सालाना कर दी जाती है, और जैसा कि राज्य सरकार के स्तर पर संकेत दिया जा रहा है, संभवत: जल्दी ही कर भी दी जाएगी, तो ऐसे तमाम परिवार इससे प्रभावित होंगे। एनडीए को उम्मीद है कि इससे न सिर्फ उसे वोटों का फायदा होगा बल्कि अपने अनुकूल माहौल बनाने में भी सहायता मिलेगी। बहरहाल, चुनावी नफा-नुकसान से थोड़ा अलग हटकर देखें तो तय है कि इस तरह के दाव-पेच न तो अच्छे नीतिगत फैसलों को जन्म देते हैं और न ही आम लोगों के दीर्घकालिक हितों को पूरा कर सकते हैं। फिर भी अगर ये चुनाव-दर-चुनाव चलते चले आ रहे हैं तो इससे राजनीति की क्वॉलिटी ही नहीं वोटरों की प्रायॉरिटी भी रेखांकित होती है।

विदेशी अखबारों से

श्रीलंका की नई सरकार ने कई हाई-प्रोफाइल मामलों की पुनः जांच के आदेश दिए

श्रीलंका की नई सरकार ने पुलिस को कुछ हाई-प्रोफाइल मामलों की फिर से जांच करने का आदेश दिया है, जिसमें 2019 के 'ईस्टर संडे' आतंकवादी हमले और 2005 में एक तमिल अल्पसंख्यक समुदाय के पत्रकार की हत्या का मामला भी शामिल है। पिछले महीने राष्ट्रपति चुनाव में जीत हासिल करने वाली सत्तारूढ़ नेशनल पीपुल्स पावर (एनपीपी) ने उन पिछले मामलों की फिर से जांच करने का वादा किया था, जिनका समाधान नहीं हो पाया था। सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय ने यह निर्णय इसलिए लिया है, ताकि जांच में किसी भी तरह की चूक की पहचान की जा सके।

पुलिस प्रवक्ता निहाल थलदुवा ने शनिवार को कहा, मंत्रालय ने कार्यवाहक पुलिस प्रमुख से कहा है कि इन मामलों की पुन: जांच की जानी चाहिए। जिन मामलों की फिर से जांच की जानी है, उनमें 2015 में सेंट्रल बैंक बॉण्ड जारी करने में कथित घोटाला शामिल है, जिसके लिए पूर्व राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे की तत्कालीन सरकार को दोषी ठहराया गया था। इसके अलावा 2019 के 'ईस्टर संडे' आतंकवादी हमले की भी जांच की जानी है, जिसमें 11 भारतीयों सहित 270 से अधिक लोग मारे गए थे। आतंकवादी हमले का गवाह बना कैथोलिक चर्च इस मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग करता रहा है।

उसका आरोप है कि पिछली सरकारों ने राजनीति से प्रेरित होकर इस हमले पर पर्दा डाल दिया था। जिन अन्य मामलों की जांच की जानी है उनमें तमिल अल्पसंख्यक समुदाय के पत्रकार डी. शिवराम की 2005 में हुई हत्या और उस समय पूर्वी विश्वविद्यालय के प्रमुख रहे एक तमिल अल्पसंख्यक शिक्षाविद का 2006 में अपहरण किये जाने और लापता होने का मामला भी शामिल है।

प्रेरक प्रसंग

पेड़ पौधे करते हैं बातें

एक दिन महात्मा बुद्ध एक वृक्ष को नमन कर रहे थे। दूर खड़े एक भिक्षु ने देखा तो उसे हैरानी हुई। वह बुद्ध के पास गया और पूछा, भंते! आपने इस वृक्ष को नमन क्यों किया? भिक्षु की बातें सुनकर बुद्ध ने जवाब में कहा, क्या इस वृक्ष को मेरे नमन करने से कुछ अनहोनी हो गई? शिष्य बोला, नहीं भगवन! ऐसी बात नहीं, पर मुझे यह देखकर थोड़ी हैरानी अवश्य हुई कि आप जैसा ज्ञानी महापुरुष इस वृक्ष को नमस्कार कर रहा है, जबकि यह न तो आपकी किसी बात का उत्तर दे सकता है और न ही आपके नमन करने पर अपनी प्रसन्नता जाहिर कर सकता है। बुद्ध मुस्कराए और उन्होंने कहा, वत्स! तुम्हारा सोचना गलत है। वृक्ष भले बोलकर उत्तर न दे सकता हो, पर जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की एक भाषा होती है, उसी प्रकार प्रकृति की भी अपनी भाषा होती है। वृक्ष में भी प्राण हैं, उसकी भी अपनी भाषा है। इस वृक्ष के नीचे बैठकर मैंने साधना की है। इसकी घनी पत्तियों ने मुझे शीतलता प्रदान की है। चिलचिलाती धूप, वर्षा से इसने मेरा बचाव किया है। प्रत्येक पल इसने मेरी सुरक्षा की। इसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य है। और बात सिर्फ इस पेड़ की नहीं है। प्रत्येक जीव को समस्त प्रकृति का कृतज्ञ होना चाहिए। आगे बुद्ध ने समझाया कि तुम इस वृक्ष की ओर ध्यान से देखो। इसकी हिलती हुई टहनियों को देखो, इसके हिलते हुए पत्तों को देखो। इससे आने वाली मंद-मंद हवा को महसूस करो। धीरे-धीरे तुम इससे जुड़ने लगोगे। फिर महसूस करोगे कि ये वृक्ष बातें भी करते हैं।

महाराष्ट्रः भय और आतंक के माहौल में चुनाव

शकील अख्तर

मुंबई में लंबी लिस्ट है पिछले दिनों हुई राजनीतिक हत्याओं की। गोलियां चलाकर आतंक पैदा करने की। फिल्म एक्टर सलमान खान जो गुजरात में मोदी जी का समर्थन करने गए थे उनके घर के बाहर अभी गोलियां चलाई गईं। और जिस अपराधी लारेंस बिश्नोई पर आरोप है उसने अभी बाबा सिद्दकी की हत्या की जिमेमेदारी ले ली है। पंजाबी गायक सिद्धु मुसेवाला की हत्या की जिम्मेदारी भी इसी गेंग ने ली थी। डबल इंजन की सरकार है। गैंग लीडर लारेंस बिश्नोई गुजरात की जेल में बंद है मगर आश्चर्य वह सुपारी ले रहा है और हत्याएं करवा रहा है। क्या मतलब है इसका? इतने ताकतवर प्रधानमंत्री राज्य में उनकी सरकार और गुजरात की जेल में बंद एक गैंगस्टर द्वारा मुंबई में एक के बाद एक राजनीतिक हत्याएं! आतंक का माहौल! किस लिए? चुनाव में किसी को फायदा पहुंचाने के लिए? महाराष्ट्र की विपक्षी पार्टियों को यही आशंका है।

मुंबई में यह किस में डर पैदा करने की कोशिश है? महाराष्ट्र में चुनाव हैं और उससे पहले राजनीतिक हत्याओं का यह सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। बाबा सिद्दिकी तो राज्य सरकार के उप मुख्यमंत्री अजीत पवार की पार्टी में आ गए थे। वाय श्रेणी की सुरक्षा थी मगर फिर भी मारे गए। और वह क्या पुलिस थाने में भाजपा विधायक ने राज्य सरकार में शामिल शिंदे गुट के नेता पर गोलियां चला दी थीं। अजीत पवार की पार्टी एनसीपी के तो 8 दिन में यह दूसरे नेता की हत्या है। और इस साल में तीसरे नेता की। मुंबई में लंबी लिस्ट है पिछले दिनों हुई राजनीतिक हत्याओं की। गोलियां चलाकर आतंक पैदा करने की। फिल्म एक्टर सलमान खान जो गुजरात में मोदी जी का समर्थन करने गए थे उनके घर के बाहर अभी गोलियां चलाई गईं। और जिस अपराधी लारेंस बिश्नोई पर आरोप है उसने अभी बाबा सिद्दकी की हत्या की जिमेमेदारी ले ली है। पंजाबी गायक सिद्धु मुसेवाला की हत्या की जिम्मेदारी भी इसी गेंग ने ली थी। डबल इंजन की सरकार है। गेंग लीडर लारेंस बिश्नोई गुजरात की जेल में बंद है मगर आश्चर्य वह सुपारी ले रहा है और हत्याएं करवा रहा है। क्या मतलब है इसका? इतने ताकतवर प्रधानमंत्री राज्य में उनकी सरकार और गुजरात की जेल में बंद एक गेंगस्टर द्वारा मुंबई में एक के बाद एक राजनीतिक हत्याएं! आतंक का माहौल! किस लिए? चुनाव में किसी को फायदा पहुंचाने के लिए? महाराष्ट्र की विपक्षी पार्टियों को यही आशंका है। सबसे प्रमुख विपक्षी दल शिवसेना यूबीटी के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के बेटे आदित्य ठाकरे ने कहा है कि इस हत्या ने महाराष्ट्र की कानून व्यवस्था की कलई खोल दी।

राज्यसभा सांसद संजय राउत ने इसे मुख्यमंत्री की विफलता बताया है। उन्होंने गृह मंत्री देवेन्द्र फडणवीस को बर्खास्त करने की मांग की है। उद्धव ठाकरे की पार्टी की ही राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने भी कड़े सवाल उठाते हुए कहा है कि अगर सत्ता पक्ष का नेता सुरक्षित नहीं है तो फिर महाराष्ट्र में कौन सुरक्षित है? महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री राज्य का लूटने में लगे हैं उन्हें कानून व्यवस्था की कोई चिंता नहीं है। प्रियंका चतुर्वेदी ने बड़ा सवाल उठाया कि विधानसभा चुनाव की घोषणा में इतनी देर क्यों की जा रही है?

यही मुख्य सवाल है। चुनाव में देर क्यों की जा रही है? क्या राज्य में डर व आतंक का वातावरण बनाने के लिए? गुजरात की साबरमती जेल में बंद एक गेंगस्टर कैसे इतना ताकतवर हो सकता है कि डबल इंजन और गुजरात में भी सरकार है तो ट्रिपल इंजन की सरकार कह सकते हैं वह देश के हर राज्य में और विदेश में कनाडा तक में हत्याएं करवा रहा हो और महाराष्ट्र गुजरात की राज्य सरकारें केन्द्र सरकार कोई कुछ नहीं कर पा रहा हो? कोशिश यही है कि महाराष्ट्र में विपक्ष में इतना डर और आतंक पैदा कर दो कि वह ठीक से चुनाव ही नहीं लड़ पाए। क्या यह संभव है? राहुल गांधी को डराया जा सकता है ? उद्धव ठाकरे को कोई डरा सकता है? शरद पवार किसी से डरेंगे? संभव ही नहीं है। यह सारी कोशिशें बेकार जाएंगी। उल्टे महाराष्ट्र में यह संदेश जाएगा कि मोदी एकनाथ शिंदे अजीत पवार यह कोई उन्हें सुरक्षा नहीं दे सकता है। यह सब इन्हीं की जेल में बंद एक गेंगस्टर के सामने लाचार हैं। राज लारेंस बिश्नोई का चल रहा है प्रधानमंत्री मोदी, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उप मुख्यमंत्री अजीत पवार का नहीं। सोचिए तीन बार के एमएलए, राज्य सरकार में मंत्री रहे, बेटा जिशान सिद्दीकी अभी भी एमएलए और उप मुख्यमंत्री की अजीत पवार की पार्टी में शामिल फिर भी दशहरे के दिन, भीड़ भाड़ वाले इलाके बान्द्रा ईस्ट इलाके में शाम को गोली मार दी जाती है। बाबा सिद्दकी कोई सामान्य नेता नहीं थे। हर पार्टी में सब उन्हें जानते थे। फिल्म स्टारों में उनकी पूछ थी। जिन्दगी भर कांग्रेस में रहे अभी इसी साल के शुरू में अजीत पवार की पार्टी में गए थे। बिहार के रहने वाले थे। मगर मुबंई में आकर जैसे बहुत सारे दूसरे लोगों ने कांग्रेसी बनकर अपना उद्धार किया था वैसे ही वे भी थे। जब केन्द्र और राज्य दोनों जगह कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई तो वे सत्ता में शामिल अजीत पवार के साथ चले गए। जाते तो कांग्रेस छोड़कर बहुत सारे लोग हैं मगर एकाध ही होता है जो जाने के बाद कांग्रेस पर सोनिया राहुल पर गंदे आरोप नहीं लगता। प्रियंका चतुर्वेदी एक उदाहरण हैं। बाकी लोग तो अपने स्वार्थों से गए मगर प्रियंका चतुर्वेदी के साथ तो बदतमीजी हुई थी। उन्होंने पार्टी में ही रुककर इसकी शिकायत भी की। मगर कोई सुनवाई नहीं हुई तब उन्होंने कांग्रेस छोड़ी। लेकिन छोड़ने के बाद कभी कांग्रेस के खिलाफ नहीं बोला। बाबा सिद्दकी और उनके बेटे जिशान बहुत गंदे आरोप लगाते हुए कांग्रेस से गए थे। मगर देखिए राहुल को इसके बाद भी उनका मन साफ था। कोई गुस्से नाराजगी की भावना नहीं। खुद उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने परिवार के साथ संवेदना व्यक्त की। और बहुत कड़े सवाल उठाते हुए कहा कि इस भयावह घटना ने महाराष्ट्र की कानून व्यवस्था की सारी पोल खोल दी है। राहुल की और कांग्रेस की यही खासियत है जो उन्हें दूसरों से अलग बनाती है। खाली महाराष्ट्र की ही बात की जाए तो यहां से कितने कांग्रेसी नेताओं ने पार्टी छोड़ी? गिनते जाइए! लंबी लिस्ट है। और सब वह हैं जो दूसरे राज्यों से साधारण हैसियत से आकर यहां कांग्रेस में शामिल हुए और नाम, नामा रसूख सब बनाया। वैसे सबको सम्मान दो के सिद्धांत पर हम साधारण हैसियत लिख रहे हैं नहीं तो कुछ भी नहीं कि स्थिति में कांग्रेस में आए थे। कृपाशंकर सिंह (यूपी से), मिलिंद देवड़ा (इनके पिता मुरली देवड़ा राजस्थान से आए थे) बाबा सिद्दकी (बिहार से) कई नाम हैं। जब कांग्रेस सत्ता में नहीं रही तो सत्ताधारी पार्टियों की तरफ चले गए। गए तो संजय निरुपम भी हैं। वे भी बिहार से हैं मगर उन्होंने नाम शिवसेना में बनाया था। कांग्रेस में बाद में आए। सांसद यहां भी बने। ऐसे ही जाने वालों की लंबी लिस्ट है। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण भी।

खैर यह स्वार्थी, अवसरवादी, डरपोक नेताओं का कांग्रेस से जाना ऐसे ही चलता रहता है। आना भी। जब सत्ता में कांग्रेस आएगी तो यह लोग सबसे पहले राहुल की जय जयकार करते हुए वापस आएंगे। और कांग्रेस इन्हें लेगी भी। यह कांग्रेस की समस्या है। अब इसे राहुल दूर करेंगे या नहीं मालूम नहीं। लेकिन अगर वे इस बारे में साफ कहें तो इससे कांग्रेस को फायदा होगा। पार्टी के साथ वफादारी से जुड़े लोगों का उत्साह बढ़ेगा। और फेंस पर जाने को बैठे लोगों में डर बैठेगा। लेकिन राहुल अनुशासन के मामले में कितने सख्त हो पाते हैं कितने नहीं यह कहना मुश्किल है। लेकिन फिलहाल तो उनके सामने महाराष्ट्र चुनाव है। जहां इंडिया गठबंधन की स्थिति काफी अच्छी दिख रही है। लोकसभा में भी महाराष्ट्र ने मोदी जी को बड़ी चोट पहुंचाई थी। 48 सीटों में से एनडीए को केवल 17 सीटें मिलीं। 31 सीटों पर इंडिया गठबंधन जीती। इनमें भी कांग्रेस ने सबसे ज्यादा 13 सीटें और बाद में जीता एक निर्दलीय उसमें शामिल हो गया तो 14 सीटें जीतीं। अब विधानसभा चुनाव में मोदी जी के लिए महाराष्ट्र बचाना बहुत कठिन चुनौति है। कांग्रेस और इंडिया गठबंधन हरियाणा के ताजे अनुभव से काम लेकर वहां ज्यादा चौकसी से चुनाव लड़ेगा। आन्तरिक कलह पर कड़ाई से रोक लगाएगा। देखते हैं इंडिया गठबंधन कितनी जल्दी सीट शेयरिंग करता है।

किसानी को महिलाएं ही बचा सकती हैं

बाबा मायाराम

परंपरागत खेती-किसानी का अधिकांश कार्य महिलाओं पर निर्भर रहा है। वे खेत में बीज बोने से लेकर उनके संरक्षण, संवर्धन और भंडारण तक का काम बड़े जतन से करती हैं। पशुपालन से लेकर विविध तरह की हरी सब्जियां व फलदार वृक्ष लगाना व उनके परवरिश का काम करती हैं। जंगलों से फल-फूल, पत्ती के गुणों की पहचान करना व संग्रह करने में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। वे जैव विविधता की संरक्षक रही हैं। आज इस कॉलम में खेती में उनके योगदान को याद करना चाहूंगा, जिससे अभूतपूर्व संकट के दौर से गुजर रही खेती को समझा जा सके, बचाया जा सके। मैंने पिछले कुछ बरसों से देश भर में घूम-घूमकर खेती को नजदीक से देखा-समझा है।

मिट्टी की बड़ी कोठियों में, लकड़ी के पटाव पर, मिट्टी की हंडी में व ढोलकी में बीज रखे जाते थे। इसके अलावा, तूमा (लौकी की एक प्रजाति) बांस के खोल में बीजों का भंडारण किया जाता था। इसी प्रकार, बीजों को धूप में सुखा कर, कोठी या भंडारण के स्थान पर धुआं किया जाता था, जिससे पतंगे या घुन नहीं लगता। कीड़ों से बचाव के लिए लकड़ी या गोबर से जली राख या रेत भी बीजों में मिलाते हैं। परंपरागत खेती-किसानी का अधिकांश कार्य महिलाओं पर निर्भर रहा है। वे खेत में बीज बोने से लेकर उनके संरक्षण, संवर्धन और भंडारण तक का काम बड़े जतन से करती हैं। पशुपालन से लेकर विविध तरह की हरी सब्जियां व फलदार वृक्ष लगाना व उनके परवरिश का काम करती हैं। जंगलों से फल-फूल, पत्ती के गुणों की पहचान करना व संग्रह करने में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। वे जैव विविधता की संरक्षक रही हैं। आज इस कॉलम में खेती में उनके योगदान को याद करना चाहूंगा, जिससे अभूतपूर्व संकट के दौर से गुजर रही खेती को समझा जा सके, बचाया जा सके। मैंने पिछले कुछ बरसों से देश भर में घूम-घूमकर खेती को नजदीक से देखा-समझा है। किसानों के खेतों में गया हूं और उनसे मिलकर खेती के बारे में जाना है। महिला किसानों से भी चर्चा की है। इस आधार पर खेती में उनके योगदान पर कुछ बातें कही जा सकती हैं। कड़कड़ाती ठंड हो या मूसलाधार बारिश या फिर चिलचिलाती तेज धूप महिलाएं सभी परिस्थितियों में खेती का काम करती रही हैं। खेती के विकास में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, भोजन के लिए ईंधन जुटाना, खाना बनाना, मवेशियों को खेतों से घास लाना, खेतों में काम करने जाना और फिर खेत से आकर घर का काम करना आदि उनकी जिम्मेदारियों में शामिल है। निंदाई-गुड़ाई के दौरान विजातीय पौधे और खरपतवार को फसल से अलग करना भी उनके काम का हिस्सा हुआ करता था। जब पौधों में फूल आ जाते हैं तब वे ऐसे विजातीय पौधों को आसानी से पहचान कर अलग कर देती थीं। कुछ फसलों में निंदाई-गुड़ाई तीन-चार बार करनी पड़ती थी। यह काम भी वे करती थीं। लेकिन अब नींदानाशक आने से उनकी भूमिका कम हो गई है।

इसके अलावा, बीजों के चयन में उनकी खास भूमिका होती थी। पहले खेतों में ही बीजों का चयन हो जाता था, इसमें देखा जाता था कि सबसे अच्छे स्वस्थ पौधे कि खेत में हैं। किस खेत के हिस्से में अच्छी बालियां हैं। वहां किसी तरह के कमजोर और रोगी पौधे नहीं होने चाहिए। अगर ऐसे पौधे फसलों के बीच होते थे तो उन्हें हटा दिया जाता था। फिर अच्छी बालियों को छांटकर उन्हें साफ कर और सुखा लिया जाता था। इसके बाद बीजों का भंडारण किया जाता था। इन सब कामों में महिलाओं की प्रमुख भूमिका होती थी।

बीज भंडारण, पारंपरिक खेती का एक अभिन्न हिस्सा है। अलग-अलग परिस्थिति और संस्कृति के अनुरूप किसानों ने बीजों की सुरक्षा के कई तरीके और विधियां विकसित की हैं। मक्का के बीज को घुन और खराब होने से बचाने के लिए चूल्हे के ऊपर छींके पर रखते हैं और सतपुड़ा अंचल में खुले में मक्के के भुट्टे को खंबे को छिलका समेत उल्टे लटका कर रखते हैं। छिलका बरसाती या छाते का काम करता है और बारिश का पानी भी उन्हें खराब नहीं कर पाता। मिट्टी की बड़ी कोठियों में, लकड़ी के पटाव पर, मिट्टी की हंडी में व ढोलकी में बीज रखे जाते थे। इसके अलावा, तूमा (लौकी की एक प्रजाति) बांस के खोल में बीजों का भंडारण किया जाता था। इसी प्रकार, बीजों को धूप में सुखा कर, कोठी या भंडारण के स्थान पर धुआं किया जाता था, जिससे पतंगे या घुन नहीं लगता। कीड़ों से बचाव के लिए लकड़ी या गोबर से जली राख या रेत भी बीजों में मिलाते हैं। बीज के अभाव में बीजों का आदान-प्रदान हुआ करता था। कई बार महिलाएं उनके मायके से ससुराल बीज ले आती थीं। और कुछ हद तक यह सिलसिला अब भी जारी है। खासतौर से सब्जियों के बीज की अदला-बदली रिश्तेदार और परिवारजनों में होना आम बात थी। हाल ही में छत्तीसगढ़ में कुनकुरी के पास एक गांव में एक किसान से मिला था। उन्होंने बताया कि उनके पास मक्का व बरबटी का बीज उनके पुरखों के जमाने का है। यह देसी बीज वे पीढ़ियों से इस्तेमाल करते हैं। हर साल बोते हैं और बीज के लिए बचाकर रखते हैं। यानी बीज उनके पुरखों की विरासत भी है, और उसके साथ उसे बोने से लेकर भंडारण तक का परंपरागत ज्ञान भी उनके पास है।

धान रोपाई का काम तो महिलाएं करती हैं। जब वे रंग-बिरंगे कपड़ों में गीत गाते हुए धान रोपाई करती हैं तो देखते ही बनता है। इनमें कई स्कूली लड़कियां भी होती हैं। वे स्कूल में भी पढ़ती हैं और खेतों में भी काम करती हैं। लड़कियां कृषि में ज्ञान और कौशल सीखती हैं। सतपुड़ा अंचल में धान रोपाई को स्थानीय भाषा में लबोदा कहा जाता है। पहले हर घर में सब्जी बाड़ी (किचन गार्डन) हुआ करती थी, जिसे जैव विविधता का केन्द्र भी कहा जा सकता है। इसमें कई तरह की हरी सब्जियां, मौसमी फल और मोटे अनाज लगाए जाते थे। जैसे भटा, टमाटर, हरी मिर्च, अदरक, भिंडी, सेमी (बल्लर), मक्का, ज्वार आदि होते थे। मुनगा, नींबू, बेर, अमरूद आदि बच्चों के पोषण के स्रोत होते थे। इसमें न अलग से पानी देने की जरूरत थी और न खाद की। जो पानी रोजाना इस्तेमाल होता था उससे ही बाड़ी की सब्जियों की सिंचाई हो जाती थी। लेकिन इनमें कई कारणों से कमी आ रही है। ये सभी काम महिलाएं ही करती थीं। हालांकि, अब भी कई इलाकों में सब्जी बाड़ी की जाती हैं। सब्जी बाड़ी में अदरक, तुलसी, पुदीना, हल्दी जैसे औषधीय महत्व के पौधे भी होते थे, जो पारंपरिक चिकित्सा व नुस्खों में काम आते थे। इसके अलावा, जंगल में औषधीय पौधों, फलों व जड़ी-बूटियों की जानकारी भी महिलाओं को होती है। वे कई तरह के औषधीय पौधों के गुणधर्म जानती हैं, और कई छोटी-मोटी स्वास्थ्य समस्याओं का स्थानीय स्तर पर समाधान कर लेती हैं। जंगल क्षेत्र में रहने वाले लोगों की आजीविका जंगल पर ही निर्भर है। खेत और जंगल से उन्हें काफी अमौद्रिक चीजें मिलती हैं, जो पोषण के लिए निःशुल्क और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती हैं। ये सभी चीजें उन्हें अपने परिवेश और आस-पास से मिल जाती है। जैसे बेर, जामुन, अचार, आंवला, महुआ, मकोई, सीताफल, आम, शहद और कई तरह के फल-फूल, जंगली कंद और हरी पत्तीदार भाजियां सहज ही उपलब्ध हो जाती हैं। यानी खेती एक तरह की जीवन पद्धति है जिसमें जैव विविधता का संरक्षण होता है। मिट्टी, पानी और पर्यावरण का संरक्षण होता है और इन सबमें महिलाओं की भूमिका अहम है। कुछ समय पहले मैं उत्तराखंड गया था, वहां अधिकांश गांवों के लोग रोजगार की तलाश में शहरों में पलायन कर गए हैं। वहां महिलाओं ने घर में बच्चों की परवरिश के साथ खेती की जिम्मेदारी भी संभाली।

हास्य-व्यंग्य

आलोक पुराणिक

वो तो सब खा चुके हैं...

राष्ट्र कर क्या रहा है।

एक तिहाई राष्ट्र वीडियो रील बना रहा है।

एक तिहाई राष्ट्र वो वीडियो रील देख रहा है।

बचा एक तिहाई राष्ट्र सोच रहा है कि क्या रील ही राष्ट्र है। एक परिचित की पत्नी रास्ते में कुत्ते के साथ डांस करने की कोशिश कर रही थीं। कुत्ता इस कोशिश पर परेशान कम हैरान ज्यादा था। परिचित की पत्नी ने बताया कि रील में कुछ यूनिक होना चाहिए, इसलिए कुत्ते के साथ डांस कर रही हैं। यूनिक के चक्कर में बंदा और बंदी कतई बेवकूफ हुए जा रहे है, पर इस बात को कह देना परम बेवकूफी है। अक्लमंदी इस दौर में चुप रहने में ही है।

रील ऐसी ऐसी बन रही हैं कि और रील का बनना कमाल नहीं है, ऐसी रील लाखों की तादाद में देखी जा रही हैं, ये कमाल है। कुत्ता डांस देखने के लिए वह राष्ट्र समय निकाल रहा है, जो आम तौर पर बिजी ही पाया जाता है। रीलें कमाल कर रही हैं।

राष्ट्र कुछ समय श्राद्ध में व्यस्त था।

एक बहुत भ्रष्ट अफसर का श्राद्ध कराके आया। पिछले साल वह दिवंगत हुए थे। श्राद्ध पक्ष शुरु होने से पहले भ्रष्ट अफसर पत्नी के सपने में आकर गुहार लगाते थे-डीयर श्राद्ध में पूड़ी-खीर खिलाने भर से काम ना चलेगा,खूब खिलाना, सब कुछ खिलाना।

दिवंगत अफसर की पत्नी परेशान. क्या खिलायें-मैंने पूछा-दिवंगत किन-किन विभागों में कार्यरत रहे, कमीशन-रिश्वत कितने परसेंट खाते थे। सब पता करके श्राद्ध पैकेज मैंने बनाया-एक थाली में किताब-कापी आधी फाड़कर, एक आधे टूटे हुए पुल की फोटू, एक टूटी नाली की फोटू, एक बच्चों के खिलौने की जीप का आधा हिस्सा सजाया, खाऊ मंदिर के तौर पर एक स्विस बैंक की फोटू लगायी थाली में। दिवंगत अफसर शिक्षा विभाग में रहे थे, कापी-किताब खरीद में घोटाला करके पचास परसेंट कमीशन खाया, फिर पीडब्लूडी में रहकर आधा पुल खा गये थे रिश्वत में। नाली भी आधी गड़प की थी उन्होने, जीप खरीद घोटाले में पचास परसेंट कमीशन उन्होने खाया था। वही उन्हे श्राद्ध में खाने को दिया गया। ओम खा हा, ओम खा हा, करके श्राद्ध संपन्न किया। भ्रष्ट अफसर ने पत्नी के सपने में आकर थैंकू बोला। साहब ऐसे-ऐसे विकट खाऊ इस धरा पर अवतरित हुए हैं, पूड़ी-खीर से कहां निपटेंगे ये। कुछ नये रचनात्मक श्राद्ध पैकेज लाये जाना जरुरी है। नेताओं के श्राद्ध में कुछ इस किस्म के पैकेज हो सकते हैं-किसी दिवंगत नेता के श्राद्ध में मोबाइल फोन रखा जाए, गुरु ने टेलीकाम घोटाले में खाया था। किसी दिवंगत नेता के श्राद्ध में थाली में तरह-तरह कोयले सजे हुए हैं, आपने कोयला-खदान में कांड में किये थे।

अंबुजा सीमेंट्स ने मॉडल आंगनबाड़ी के साथ जी सैदपुर के बच्चों को आधुनिक शिक्षा से परिचित कराया

उत्तराखंड, एजेंसी। विविधतापूर्ण अदाणी समूह की सीमेंट और निर्माण सामग्री कंपनी अंबुजा सीमेंट्स सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। सीएसआर प्रयासों के माध्यम से, कंपनी ने अंबुजा सीमेंट्स रुड़की के पास हरिद्वार जिले के जी सैदपुर में एक मॉडल आंगनबाड़ी का उद्घाटन किया है।

इस पहल को बच्चों के लिए एक जीवंत, सुरक्षित शिक्षण वातावरण प्रदान करके प्रारंभिक बचपन की शिक्षा और सामुदायिक स्वास्थ्य का समर्थन करने के लिए डिजाइन किया गया है। जी सैदपुर में हाल ही में शुरू की गई मॉडल आंगनबाड़ी जीवंत बाला (सीखने में सहायक के रूप में भवन) भित्ति चित्र हैं जो दृश्यों के माध्यम से सीखने को बढ़ावा देते हैं, जबकि शिक्षा और स्वास्थ्य पर सूचनात्मक बोर्ड बच्चों और समुदाय के लिए बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं। सुविधा में आरामदायक बेंच और डेस्क एक अनुकूल सीखने का माहौल सुनिश्चित करते हैं, जबकि बच्चों के विकास के सटीक आकलन के लिए वजन तराजू, शिशु मीटर और मध्य-ऊपरी-बांह परिधि मापने वाले टेप सहित व्यापक माप उपकरण उपलब्ध हैं।

आंगनबाड़ी एक समर्पित पोषण ज्ञान केंद्र भी है, जहां सहायक नर्स मिडवाइफ़ (एएनएम) और सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी समुदाय के सदस्यों के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच करते हैं, जिससे स्वास्थ्य और निवारक स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा मिलता है। आईसीडीएस दिशा-निर्देशों के अनुसार जन्मदिन समारोह, अन्नप्राशन और गोद भराई जैसी आकर्षक मासिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जिससे सामाजिक संपर्क और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा मिलता है।

आंगनबाड़ी पानी और स्वच्छता सुविधाओं के लिए भी सहायता प्रदान करती है, जिससे बच्चों के लिए स्वच्छ और स्वास्थ्यकर वातावरण सुनिश्चित होता है। अंबुजा सीमेंट्स सामुदायिक विकास के लिए लंबे समय से प्रतिबद्ध है, इसने पहले क्षेत्र के दाउदबासी, छापुर और लाव्वा गांवों में इस तरह के आदर्श आंगनबाड़ी केंद्र स्थापित किए हैं। यह चौथा आंगनबाड़ी बच्चों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए अंबुजा सीमेंट्स के समर्पण को और मजबूत करता है, सामुदायिक बुनियादी ढांचे को बढ़ाकर और शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों पर ध्यान केंद्रित करके ग्रामीण परिवारों के जीवन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

सुदर्शन केमिकल ने ह्यूबैक ग्रूप के अधिग्रहण के लिए किया निर्णायक समझौता

मुंबई, एजेंसी। सुदर्शन केमिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड (एससीआईएल या कंपनी) ने आज घोषणा की है कि उसने एक परिसंपत्ति और शेयर सौदे के संयोजन में अधिग्रहण पर जर्मनी स्थित ह्यूबैक समूह के साथ एक निर्णायक समझौता किया है। इस रणनीतिक अधिग्रहण से एक वैश्विक पिगमेंट कंपनी बनेगी, जो एससीआईएल के परिचालन और विशेषज्ञता को ह्यूबैक की तकनीकी क्षमताओं के साथ जोड़ेगी।

अधिग्रहण के बाद, संयुक्त कंपनी के पास उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों का एक व्यापक पिगमेंट पोर्टफोलियो होगा और यूरोप और अमेरिका सहित प्रमुख बाजारों में इसकी मजबूत उपस्थिति होगी। यह एससीआईएल के उत्पाद पोर्टफोलियो को बढ़ाएगा, जिससे इसे ग्राहकों तक पहुंच मिलेगी और वैश्विक स्तर पर 19 साइटों पर एक विविध परिसंपत्ति पदचिह्न मिलेगा। संयुक्त कंपनी का नेतृत्व श्री राजेश राठी और उच्च प्रदर्शन करने वाली प्रबंधन टीम द्वारा किया जाएगा, जिसमें गुणवत्ता निष्पादन कौशल और तकनीकी योग्यता होगी।

ह्यूबैक समूह का 200 साल का इतिहास है और 2022 में क्लेरिएंट के साथ एकीकरण के बाद यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा पिगमेंट समूह बन गया। ह्यूबैक का वित्त वर्ष 21 और वित्त वर्ष 22 में एक अरब यूरो से अधिक का राजस्व था, जिसमें विशेष रूप से यूरोप, अमेरिका और एपैक क्षेत्र में वैश्विक पहुंच थी। बढ़ती लागत, इन्वेंट्री मुद्दों और उच्च ब्याज दरों के कारण समूह को पिछले दो वर्षों में वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एससीआईएल द्वारा ह्यूबैक का अधिग्रहण एक स्पष्ट टर्नअराउंड योजना के साथ इन चुनौतियों का समाधान करेगा।

लेन-देन पर टिप्पणी करते हुए, एससीआईएल के प्रबंध निदेशक श्री राजेश राठी ने कहा, हम इस लेन-देन से खुश हैं जो दो व्यवसायों को एक साथ लाता है जो प्रमुख वैश्विक बाजारों की सेवा करेंगे। हम इन दोनों कंपनियों को वास्तव में वैश्विक पिगमेंट कंपनी बनाने के लिए सावधानीपूर्वक एकीकृत करेंगे, जिसमें फ्रैंकफर्ट रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान बना रहेगा। एससीआईएल अपनी चपलता और दक्षता के लिए जाना जाता है, और हम इस संस्कृति को संयुक्त कंपनी में शामिल करेंगे ताकि इसे सबसे अधिक ग्राहक-केंद्रित और लाभदायक पिगमेंट कंपनियों में से एक बनाया जा सके।

हेउबैक के ब्रैम डी होंड्ट ने कहा, एससीआईएल के साथ हाथ मिलाकर, हमारा लक्ष्य उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के साथ ग्राहकों की सेवा करने की अपनी 200+ साल की विरासत को पुनः प्राप्त करना है। साथ मिलकर, हम ग्राहक केंद्रितता और उत्पाद उत्कृष्टता के सिद्धांतों पर निर्माण करके पिगमेंट उद्योग के भविष्य को आकार देंगे। हमारी संयुक्त क्षमताएँ हमें अपने ग्राहकों को बेहतर सेवा देने में सक्षम बनाएंगी। हम इस अगले अध्याय में प्रवेश करते हुए एससीआईएल के साथ काम करने के लिए उत्सुक हैं। क्रॉफर्ड बेली और नोएर सुदर्शन के कानूनी सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे हैं और डीसी एडवाइजरी वित्तीय सलाहकार के रूप में कार्य कर रही है।

चुस्ती की संस्कृति और ग्राहक फोकस इस एकीकरण के केंद्र में होंगे। संयोजन के रणनीतिक और वित्तीय लाभ इस प्रकार हैं: ग्राहक केंद्रितता (सेवा) पर आधारित कंपनी: अधिग्रहण के बाद एससीआईएल सभी ग्राहकों के लिए पसंदीदा आपूर्तिकर्ता बनने की परिकल्पना करता है। कंपनी के पास विभिन्न खंडों और अनुप्रयोगों में विस्तृत उत्पाद पोर्टफोलियो होगा और यह ग्राहकों को सर्वश्रेष्ठ श्रेणी के उत्पाद पोर्टफोलियो की पेशकश करने में सक्षम होगी। एससीआईएल की आरएंडडी और नवाचार क्षमताएं वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला नेटवर्क के साथ मिलकर कंपनी को कुशलतापूर्वक ग्राहकों की सेवा करने में सक्षम बनाएंगी।

सबसे मूल्यवान वैश्विक पिगमेंट कंपनी: संयुक्त इकाई का लक्ष्य दुनिया की सबसे मूल्यवान पिगमेंट कंपनी बनना है, जिसके पास बेहतरीन वित्तीय ताकत और लाभप्रदता है। इस अधिग्रहण से वैश्विक बाजारों में स्ट्ढुरुके उत्पाद पोर्टफोलियो की चौड़ाई बढ़ती है, इसे वैश्विक ग्राहकों, खासकर यूरोप और अमेरिका में सेवा देने का अवसर मिलता है, और 19 वैश्विक साइटों पर एक विविध परिसंपत्ति फुटप्रिंट मिलता है।

एक चुस्त संगठन: एकीकरण से चुस्ती और दक्षता की संस्कृति बनेगी, जिसमें सभी कार्यों में महत्वपूर्ण तालमेल की उम्मीद है। संयुक्त कंपनी हितधारकों के लिए मूल्य को अधिकतम करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को लागू करेगी

विश्वस्तरीय प्रबंधकों और पिगमेंट विशेषज्ञों का नेतृत्व: एससीआईएल गुणवत्तापूर्ण निष्पादन कौशल और तकनीकी योग्यता के साथ एक उच्च प्रदर्शन करने वाली प्रबंधन टीम तैयार करेगा। लेन-देन के समापन के बाद संयुक्त कंपनी का नेतृत्व एससीआईएल के प्रबंध निदेशक राजेश राठी करेंगे।

ह्यूबैक के पास एक विस्तृत और उच्च गुणवत्ता वाला उत्पाद पोर्टफोलियो है जिसमें अनुकूलित उत्पादों सहित विशेषताओं का एक बड़ा प्रतिशत शामिल है। यह कोटिंग, प्लास्टिक, स्याही, ऑटोमोटिव, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स में अनुप्रयोगों के साथ वैश्विक ब्लू-चिप ग्राहकों के एक मजबूत ग्राहक आधार को सेवा प्रदान करता है। ह्यूबैक के पास वैश्विक स्तर पर 17 विनिर्माण स्थल हैं जो किसी भी भू-राजनीतिक और आपूर्ति श्रृंखला चुनौतियों के दौरान स्थिरता प्रदान करते हैं, आपूर्तिकर्ताओं और ग्राहकों के साथ दीर्घकालिक संबंध सुनिश्चित करते हैं।

महाजेनको को सोलर पीवी मॉड्यूल की आपूर्ति के लिए सात्विक सोलर ने 302 करोड़ रुपये का कॉन्ट्रैक्ट हासिल किया

नई दिल्ली, एजेंसी। सात्विक ग्रीन एनर्जी लिमिटेड ने आज घोषणा की है कि उसने महाराष्ट्र स्टेट पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड (MAHAGEN-CO) के साथ महाराष्ट्र भर में विभिन्न स्थानों पर 200 मेगावाट के अत्याधुनिक N-TOPCon 580Wp मॉड्यूल्स की सप्लाई के लिए अनुबंध हासिल किया है।

ऑर्डर का कुल मूल्य 302 करोड़ रुपये होने का अनुमान है। इन मॉड्यूल की तैनाती महाराष्ट्र की अक्षय ऊर्जा क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, जिससे स्वच्छ और हरित ऊर्जा समाधानों की दिशा में राज्य की पहल को समर्थन मिलेगा।

यह साझेदारी सर्वश्रेष्ठ श्रेणी के उत्पादों और रणनीतिक सहयोगों के माध्यम से अक्षय ऊर्जा संक्रमण को सशक्त बनाने के सात्विक के दृष्टिकोण को दर्शाती है।

महाजेनको भारत की सबसे बड़ी बिजली उत्पादन कंपनियों में से एक है, और यह ऑर्डर अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में उच्च दक्षता वाली सौर प्रौद्योगिकियों के एक विश्वसनीय प्रदाता के रूप में सात्विक की बढ़ती उपस्थिति और प्रतिष्ठा की पुष्टि करता है। कंपनी ने सात्विक एन-टॉपकॉन 580Wp मॉड्यूल का ऑर्डर दिया है, जिसका उपयोग इस अनुबंध को पूरा करने के लिए किया जाएगा, जो सात्विक के पोर्टफोलियो में सबसे उन्नत और मांग वाले उत्पादों में से एक है। अपनी बेहतरीन दक्षता और प्रदर्शन के लिए जाने जाने वाले इन मॉड्यूल को चुनौतीपूर्ण पर्यावरणीय परिस्थितियों में भी बेहतर ऊर्जा उत्पादन देने के लिए इंजीनियर किया गया है।

इस अवसर पर सात्विक ग्रीन एनर्जी के सीईओ प्रशांत माथुर ने कहा, हम सात्विक में इस परियोजना के लिए महाजेनको द्वारा चुने जाने पर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। यह ऑर्डर न केवल सौर प्रौद्योगिकी में नवाचार और उत्कृष्टता को आगे बढ़ाने की हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, बल्कि बड़े पैमाने पर, टाइम सेंसिटिव प्रोजेक्ट्स को पूरा करने की हमारी क्षमता को भी उजागर करता है।

हमारे एन-टॉपकॉन मॉड्यूल को उच्चतम उद्योग मानकों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो आने वाले वर्षों के लिए स्थायी ऊर्जा उत्पादन सुनिश्चित करता है। हम महाराष्ट्र के अक्षय ऊर्जा लक्ष्यों में योगदान देने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

सात्विक ग्रीन एनर्जी अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में आगे रहने के लिए कई प्रमुख बुनियादी ढांचा तकनीकी इनोवेशंस को सक्रिय रूप से आगे बढ़ा रही है।

कंपनी उच्च दक्षता वाले सौर पीवी मॉड्यूल विकसित कर रही है, जिसमें हाफ-कट मॉड्यूल और प्रीमियम मॉड्यूल शामिल हैं, जिनमें '0 बज़ बार' और '24 बज बार' तकनीक जैसी उन्नत सुविधाएं मॉड्यूल निर्माण के अलावा, यह ऊर्जा भंडारण क्षमताओं को बढ़ाने के लिए इलेक्ट्रोलाइज़र बैटरी निर्माण और भंडारण समाधानों में निवेश की भी संभावना तलाश रही है।

कंपनी का R&D बुनियादी ढांचा और इन-हाउस विनिर्माण कौशल फर्म को भारतीय और वैश्विक दोनों बाजारों में उच्च दक्षता वाले सौर मॉड्यूल की बढ़ती मांग को पूरा करने में सक्षम बनाता है।

त्योहारों का जश्न मनाएं टीवीएस आईक्यूब इलेक्ट्रिक स्कूटर पर आकर्षक ऑफर्स के साथ, रु 30,000 तक के कैशबैक के फायदे पाएं

बैंगलोर, एजेंसी। त्योहारों का मौसम ढेरों खुशियां और जश्न का माहौल लेकर आता है। इसी के मद्देनज़र दोपहिया और तिपहिया सेगमेन्ट में संचालन करने वाली दुनिया की प्रमुख ऑटोनिर्माता टीवीएस मोटर कंपनी अपने टीवीएस आईक्यूब इलेक्ट्रिक स्कूटर वेरिएन्ट्स पर रु 30,000 तक के स्पेशल फेस्टिव कैशबैक ऑफर लेकर आई है। ये आकर्षक ऑफर्स

चुनिंदा राज्यों में 31 अक्टूबर 2024 तक उपलब्ध हैं, जो मात्र रु 85,650 (प्रभावी एक्स-शोरूम कीमत, राजस्थान) में उपभोक्ताओं को भारत का पसंदीदा फैमिली ईवी खरीदने का मौका देंगे। टीवीएस आईक्यूब एस वेरिएन्ट के लिए, तमिलनाडु, पुडुचैरी, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, कर्नाटक, केरल, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, गुजरात, उड़ीसा और महाराष्ट्र के उपभोक्ता बिना किसी अतिरिक्त लागत के 5 साल/ 7000 किलोमीटर के लिए रु 5999 कीमत की एक्सटेंटेड वारंटी का फायदा पा सकते हैं। इसके अलावा कंपनी आकर्षक रीटेल फाइनैंस ऑफर्स भी लेकर आई है जैसे चुनिंदा बैंक कार्ड पर रु 10,000 तक का कैशबैक, मात्र रु 7999 की डाउन पेमेंट और रु 2399 से शुरू होने वाली आसान ईएमआई के विकल्प। ऐसे में त्योहारों के इस सीज़न टीवीएस आईक्यूब खरीदना बेहद आसान हो गया है। इस तरह के ऑफर्स इलेक्ट्रिक परिवहन की ओर बदलाव को लुभावना बनाते हैं, साथ ही स्थायित्व एवं आधुनिक इनोवेशन्स के लिए टीवीएस मोटर कंपनी की प्रतिबद्धता को समर्थन प्रदान करते हैं।

बड़ौदा बीएनपी पारिबा म्यूचुअल फंड ने लॉन्च किया निफ्टी मिडकैप 150 इंडेक्स फंड, हाई ग्रोथ वाली कंपनियों में निवेश का अवसर, एनएफओ की क्या है खूबी

मुंबई, एजेंसी। बड़ौदा बीएनपी पारिबा म्यूचुअल फंड ने अपना न्यू फंड ऑफर (एनएफओ), बड़ौदा बीएनपी पारिबा निफ्टी मिडकैप 150 इंडेक्स फंड लॉन्च किया है। यह एनएफओ 14 अक्टूबर 2024 को सब्सक्रिप्शन के लिए खुल रहा है और 28 अक्टूबर 2024 तक इसमें सब्सक्राइब किया जा सकता है। यह पैसिवली मैनेज्ड, लो कास्ट (कम लागत वाला) इक्विटी फंड निवेशकों को संभावित रूप से हाई ग्रोथ वाले मिडकैप शेयरों में निवेश का अवसर देता है। यह स्कीम एनएसई निफ्टी 50 इंडेक्स की तुलना में निवेशकों को अलग अलग सेक्टर में बेहतर तरीके से डाइवर्सिफाइड पोर्टफोलियो प्रदान करती है। इस स्ट्रैटेजी से किसी एक ही सेक्टर में निवेश करने को लेकर जो रिस्क होता है, वह कम होता है।

बड़ौदा बीएनपी पारिबा निफ्टी मिडकैप 150 इंडेक्स फंड का लक्ष्य निफ्टी मिडकैप 150 टोटल रिटर्न इंडेक्स के प्रदर्शन को ट्रैक करना है, जिसमें ऐसी मिडकैप कंपनियां शामिल होता है जो भविष्य में लार्ज कैप की कैटेगरी में आने की क्षमता रखती हैं। इस फंड में निवेश के जरिए, निवेशक कैपिटल गुड्स, केमिकल्स, रियल एस्टेट और टेक्सटाइल जैसे सेक्टर में एक्सपोजर हासिल कर सकते हैं, जिनका निफ्टी 50 इंडेक्स में या तो बहुत कम प्रतिनिधित्व है या वे इंडेक्स में मौजूद ही नहीं हैं। बड़ौदा बीएनपी पारिबा एसेट मैनेजमेंट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सीईओ सुरेश सोनी ने एनएफओ पर कहा कि एसएंडपी इंडेक्स बनाम एक्टिव रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 10 साल में 75 फीसदी मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंडों ने अपने बेंचमार्क से कम प्रदर्शन किया है। हमारा एनएफओ एक कम लागत वाला, पैसिव इन्वेस्टमेंट सॉल्यूशन प्रदान करता है, जिसका उद्देश्य निफ्टी मिडकैप 150 इंडेक्स की तरह रिटर्न देना है। साथ ही इसका उद्देश्य खराब प्रदर्शन के जोखिम को कम करना और ग्रोथ के लिए बेहतर अवसर प्रदान करना है। बड़ौदा बीएनपी पारिबा निफ्टी मिडकैप 150 इंडेक्स फंड का एक प्रमुख लाभ ऐतिहासिक रूप से इसके बेंचमार्क इंडेक्स की मजबूत प्रदर्शन करने की क्षमता है। अप्रैल 2005 से निफ्टी मिडकैप 150 टीआरआई में निवेशकों द्वारा किया गया निवेश 18.7% सीएजीआर की दर से करीब 28 गुना हो गया। उनका कहना है कि इंडेक्स में शामिल कंपनियों की स्वाभाविक रूप से हाई ग्रोथ रेट, व्यापक रूप से स्टॉक व सेक्टर का चयन और री-रेटिंग के अवसरों को देखते हुए, हम उम्मीद करते हैं कि निफ्टी मिडकैप 150 इंडेक्स लार्ज कैप इंडेक्स की तुलना में ज्यादा रिटर्न देगा। हमारी रिसर्च से पता चलता है कि जब निवेशकों ने अपना निवेश 10 साल बनाए रखा तो इस दौरान 94 फीसदी समय में निफ्टी मिडकैप 150 टीआरआई ने 10त्न या उससे ज्यादा कंपाउंडेड एनुअल रिटर्न दिया। 10 साल के दौरान के निवेश पर रिटर्न देखें तो कभी भी निगेटिव रिटर्न देखने को नहीं मिला है।

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) शुरू करने के लिए भी यह फंड एक बेहतर विकल्प है। पिछले 15 साल में निफ्टी मिडकैप 150 टीआरआई में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी की वैल्यू अब 1 करोड़ रुपये से अधिक हो गई, जो रेगुलर निवेश के जरिए वेल्थ क्रिएशन की क्षमता को दर्शाता है। डायवर्सिफिकेशन, उभरते ग्रोथ सेक्टर में निवेश और लंबी अवधि में हाई रिटर्न की क्षमता चाहने वाले निवेशक बड़ौदा बीएनपी पारिबा निफ्टी मिडकैप 150 इंडेक्स फंड पर विचार कर सकते हैं। लागत प्रभावी और पैसिवली मैनेज्ड इन्वेस्टमेंट के माध्यम के रूप में, यह फंड निवेशकों को भारत के तेजी से ग्रोथ करते मिडकैप सेगमेंट से हाई रिटर्न हासिल करने का अवसर देता है।

स्किल इंडिया मिशन के लिए एआई असिस्टेंट और वीआर/एमआर में 5 उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना के लिए कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय ने मेटा के साथ साझेदारी की

नई दिल्ली, एजेंसी। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) ने दो पहलों के शुभारंभ के लिए आज मेटा के साथ साझेदारी की घोषणा की है। ये पहल हैं- स्किल इंडिया मिशन के लिए एक एआई असिस्टेंट और वर्चुअल रियलिटी (वीआर) और मिक्स्ड रियलिटी (एमआर) में 5 उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) स्थापित करना। इसके तहत, स्किल इंडिया डिजिटल (एसआईडी) पोर्टल पर शिक्षार्थियों के अनुभव को और बेहतर बनाने के लिए मेटा के ओपन-सोर्स लामा मॉडल द्वारा संचालित एक अभिनव एआई-आधारित चैटबॉट विकसित किया जाएगा। मेटा के ओपन-सोर्स एआई मॉडल को भारत के एआई इकोसिस्टम के लिए सुलभ बनाकर, हम भारत के एआई मिशन के अनुरूप एक सहयोगी ई-गवर्नेंस फ्रेमवर्क की कल्पना करते हैं। इस फ्रेमवर्क के तहत बड़े पैमाने पर सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को तेजी से आगे बढ़ाने की क्षमता वाले प्रभावशाली एआई समाधानों को अपनाने के प्रयासों में तेजी लाने का प्रयास किया जाएगा। इसके अलावा, हैदराबाद, बेंगलुरु, जोधपुर, चेन्नई और कानपुर में स्थित राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थानों (एनएसटीआई) में 5 उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) कायम किए जाएंगे। ये केंद्र शिक्षार्थियों और प्रशिक्षकों को सुरक्षित और बेहतर वातावरण में मौजूदा कौशल सीखने और बढ़ाने के लिए नवीनतम वीआर तकनीक से लैस करेंगे।

एआई असिस्टेंट पर साझेदारी का उद्देश्य सूचना पहुँच को सुव्यवस्थित करना, सीखने के परिणामों में सुधार करना और छात्रों को सहज डिजिटल इंटरफ़ेस के माध्यम से सहज सहायता प्रदान करना है। 5 उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) रियलिस्टक सिमुलेशन भी प्रदान करेंगे, जुड़ाव में सुधार करेंगे और कौशल विकास प्रशिक्षण तक पहुँच बढ़ाएँगे। साझेदारी पर टिप्पणी करते हुए, कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री जयंत चौधरी ने कहा, मंत्रालय में हमारा मिशन भारत के युवाओं को आज के प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल के साथ और मजबूत बनाना है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और मिक्स्ड रियलिटी जैसी तकनीकों को स्किल इंडिया इकोसिस्टम के साथ जोड़ते हुए हमारी कोशिश है कि देश के सभी युवाओं के लिए लर्निंग से संबंधित अत्याधुनिक तकनीकों को पहुँचाया जाए। आज मेटा के साथ हमारी साझेदारी इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मेटा इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट और हैड ऑफ पब्लिक पॉलिसी शिवनाथ ठुकराल ने कहा, "मेटा में, हम भारत के आर्थिक विकास के लिए सार्थक प्रभाव पैदा करने के लिहाज से एआई, वीआर और एमआर जैसी अग्रणी तकनीकों का लाभ उठाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमडीएसई) के साथ ये साझेदारी तकनीक और शिक्षा के बीच के फासले को दूर करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। ओपन-सोर्स लामा जैसी उन्नत तकनीकों के इंटीग्रेशन के माध्यम से हमारा लक्ष्य न केवल छात्रों, बल्कि शिक्षकों और उद्यमियों को भी सशक्त बनाना है, और उन्हें आज की डिजिटल-प्रथम दुनिया में कामयाब होने के लिए आवश्यक उपकरणों से लैस करना है।"

स्किल इंडिया डिजिटल पोर्टल आज देश के कौशल संबंधी ईको सिस्टम की आधारशिला बन गया है, जिसमें लाखों छात्र अपनी रोजगार क्षमता में सुधार करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रमों तक पहुँच बना रहे हैं। एआई चैटबॉट के लॉन्च के साथ, एमएसडीई और मेटा मिलकर पाठ्यक्रम सामग्री के साथ छात्रों के जुड़ाव और उनके फ्यूचर रेडी होने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहे हैं।

एआई असिस्टेंट प्रोजेक्ट के लिए टैक्नीकल पार्टनर सर्वम, चैटबॉट के विकास और तैनाती के लिए जिम्मेदार होगा, जिसे छह महीने की अवधि में पायलट किया जाएगा। चैटबॉट, जिसे एसआईडी पोर्टल में एकीकृत किया जाएगा, उपयोगकर्ताओं को 24/7 सहायता प्रदान करेगा, जिससे पाठ्यक्रम की जानकारी की त्वरित खोज, पाठ्यक्रम सामग्री के लिए इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर और संशोधन के लिए व्याख्यान सारांश और प्रासंगिक वीडियो तक पहुंच संभव होगी।

व्हाट्सएप पर उपलब्ध, चैटबॉट अंग्रेजी, हिंदी और हिंग्लिश के साथ-साथ आवाज संबंधी क्षमताओं को सपोर्ट करेगा, जिससे यह भारत भर के विभिन्न प्रकार के उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक सुलभ हो जाएगा। इसके अलावा, उपयोगकर्ता विशिष्ट पाठ्यक्रम विषयों की खोज कर सकते हैं, कौशल केंद्र तलाश सकते हैं, स्थान और रुचि के आधार पर नौकरी लिस्टिंग का पता लगा सकते हैं और निरंतर सुधार के लिए फीडबैक प्राप्त कर सकते हैं।

चैटबॉट प्लेटफॉर्म को और अधिक अनुकूलित करने के लिए एमएसडीई को मूल्यवान विश्लेषण भी प्रदान करेगा। इसके अलावा, उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) की स्थापना के लिए तकनीकी साझेदार स्किलवेरी, शिक्षार्थियों और प्रशिक्षकों को नवीनतम तकनीक से लैस करने के लिए अत्याधुनिक वीआर और एमआर रिसोर्सेज, पाठ्यक्रम और प्रशिक्षित पेशेवर प्रदान करेगा।

भारतीय नौसेना ने नौसेना के नागरिकों को बीमा प्रदान करने के लिए बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

पुणे, एजेंसी। भारतीय नौसेना के नागरिक कर्मियों को जीवन बीमा से संबंधित सॉल्यूशंस उपलब्ध कराने के लिए भारतीय नौसेना ने देश की अग्रणी निजी जीवन बीमा कंपनियों में से एक बजाज आलियांज लाइफ के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

08 अक्टूबर 2024 को किए गए इस समझौता ज्ञापन के तहत बजाज आलियांज लाइफ किफायती दरों पर व्यापक कवरेज सुनिश्चित करते हुए विभिन्न प्रकार के जीवन बीमा प्रॉडक्ट उपलब्ध कराएगा।

'नौसेना नागरिकों के वर्ष' के तहत आयोजित गतिविधियों के एक भाग के रूप में इस अवसर के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, कार्मिक प्रमुख वाइस एडमिरल संजय भल्ला ने बजाज आलियांज लाइफ द्वारा प्रस्तुत उन जीवन बीमा समाधानों की सराहना की, जिन्हें विशेष रूप से भारतीय नौसेना के नागरिकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है।

बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस के एमडी और सीईओ श्री तरुण चुघ ने कहा, "बजाज आलियांज लाइफ में हम सभी के लिए यह वास्तव में गर्व का क्षण है कि हमें भारतीय नौसेना के कर्मियों को जीवन बीमा सेवाएँ प्रदान करने का अवसर मिला है।

भारतीय नौसेना के '2024 - नौसेना नागरिकों के वर्ष' के अनुरूप - हम नौसेना नागरिकों के लिए अपनी सेवाएं उपलब्ध करा रहे हैं। मेरा मानना है कि यह जीवन बीमा के लाभों को और अधिक भारतीयों तक पहुँचाने और हमारे देश के भीतर बीमा पैठ की खाई को दूर करने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि हम भारतीय नौसेना को केवल सबसे प्रभावी और सहज-सरल समाधान प्रदान करें।"

इस भागीदारी के तहत बजाज आलियांज लाइफ जीवन बीमा से संबंधित विभिन्न प्रॉडक्ट उपलब्ध करा रहा है। ये ऐसे प्रॉडक्ट हैं, जो भारतीय नौसेना से जुड़े नागरिकों के विभिन्न जीवन लक्ष्यों को पूरा करने के लिहाज से बहुत उपयोगी हैं। भारतीय नौसेना के नागरिक कर्मियों को उनके जीवन लक्ष्यों को सुरक्षित करने के लिए टर्म इंश्योरेंस और पर्याप्त जीवन बीमा कवरेज के महत्व को समझने में मदद करने के लिए शैक्षिक सेमिनार और सत्र भी आयोजित किए जाएंगे।

कंपनी नौसेना के नागरिकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने वाली अनूठी प्रक्रियाओं को भी पेश करेगी। भारतीय नौसेना ने नौसेना के नागरिकों को बीमा सोल्यूशंस प्रदान करने के लिए बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

इस दौरान भारतीय नौसेना के कार्मिक प्रमुख वाइस एडमिरल संजय भल्ला, और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री अमित जायसवाल, चीफ डिस्ट्रिब्यूशन ऑफिसर - प्रोप्राइटरी सेल्स फोर्स और बजाज आलियांज लाइफ की उनकी टीम भी मौजूद थी।

हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड की आरंभिक सार्वजनिक पेशकश 15 अक्टूबर, 2024 को खुलेगी

जयपुर। हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड ('कंपनी') ने मंगलवार, 15 अक्टूबर, 2024 को इक्विटी शेयरों की अपनी आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ - 'ऑफर') खोलने का प्रस्ताव किया है। कंपनी Hyundai Motor समूह की अंग है, जो क्रिसिल रिपोर्ट के अनुसार कैलेंडर वर्ष 2023 में यात्री वाहन बिक्री के आधार पर दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी ऑटो ओईएम थी। एंकर इन्वेस्टर बोली की तारीख बोली/ऑफर खुलने की तारीख से एक कार्य दिवस पहले है, जो सोमवार, 14 अक्टूबर, 2024 है। बोली/ऑफर बंद होने की तारीख गुरुवार, 17 अक्टूबर, 2024 है।

ऑफर का प्राइस बैंड रु.1,865 प्रति इक्विटी शेयर से रु.11,960 प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। न्यूनतम 7 इक्विटी शेयरों और उसके बाद 7 इक्विटी शेयरों के गुणकों के लिए बोली लगाई जा सकती हैं। कंपनी के आईपीओ में हुंडई मोटर (प्रमोटर सेलिंग शेयरहोल्डर) द्वारा 142,194,700 इक्विटी शेयरों का ऑफर फॉर सेल शामिल है।

कंपनी को इस प्रस्ताव से कोई आय (प्रस्ताव आय) प्राप्त नहीं होगी। यह ऑफर प्रतिभूति अनुबंध (विनियमन) नियम, 1957 के विनियम 19(2)(बी) के अनुसार किया जा रहा है, जिसे संशोधित किया गया है (एससीआरआर) और यह सेबी आईसीडीआर विनियमनों के विनियमन 31 के साथ संलग्न है। यह ऑफर सेबी आईसीडीआर विनियमनों के विनियमन 6(1) के अनुसार बुक बिल्डिंग प्रक्रिया के जरिए किया जा रहा है। इसमें नेट ऑफर का 50% तक (यह 50% से अधिक नहीं हो सकता) हिस्सा आनुपातिक आधार पर पात्र संस्थागत खरीदार (क्यूआईबी) (क्यूआईबी पोर्शन) को आवंटित करने के लिए उपलब्ध होगा, हालांकि हमारी कंपनी, बीआरएलएम के परामर्श से, एंकर इन्वेस्टर को क्यूआईबी हिस्से का 60% तक आवंटित कर सकती है और इस तरह के आवंटन का आधार सेबी आईसीडीआर विनियमनों (एंकर इन्वेस्टर पोर्शन) के अनुसार, बीआरएलएम के परामर्श से हमारी कंपनी द्वारा विवेकाधीन आधार पर होगा, जिसमें से एक तिहाई घरेलू म्यूचुअल फंड के लिए आरक्षित होगा। यह घरेलू म्यूचुअल फंड से एंकर इन्वेस्टर को आवंटन किए गए मूल्य (एंकर इन्वेस्टर एलोकेशन प्राइस) पर या इससे अधिक पर वैध बोलियां प्राप्त होने पर निर्भर होगा।

इसके अलावा, नेट क्यूआईबी पोर्शन का 5% आनुपातिक आधार पर केवल म्यूचुअल फंड को आवंटित करने के लिए उपलब्ध होगा, बशर्ते ऑफर मूल्य पर या इससे ऊपर वैध बोलियां प्राप्त हों, और नेट क्यूआईबी हिस्से का शेष हिस्सा आनुपातिक आधार पर सभी क्यूआईबी (एंकर निवेशकों के अलावा) को आवंटित करने के लिए उपलब्ध होगा, जिसमें म्यूचुअल फंड भी शामिल हैं, बशर्ते कि ऑफर मूल्य पर या इससे ऊपर वैध बोलियां प्राप्त हों। इसके अलावा, शुद्ध प्रस्ताव का कम से कम 15% गैर-संस्थागत निवेशकों (गैर-संस्थागत श्रेणी) को आवंटन के लिए उपलब्ध होगा। इसमें से गैर-संस्थागत श्रेणी का एक-तिहाई हिस्सा रु.200,000 से अधिक और रु.1,000,000 तक के आवेदन आकार वाले बोलीदाताओं को आवंटन के लिए उपलब्ध होगा और गैर-संस्थागत श्रेणी का दो-तिहाई हिस्सा रु.1,000,000 से अधिक के आवेदन आकार वाले बोलीदाताओं को आवंटन के लिए उपलब्ध होगा। साथ ही गैर-संस्थागत श्रेणी की इन दो उप-श्रेणियों में से किसी एक में कम-सब्सक्रिप्शन को सेबी आईसीडीआर विनियमों के अनुसार गैर-संस्थागत श्रेणी की अन्य उप-श्रेणी में बोलीदाताओं को आवंटित किया जा सकता है, बशर्ते कि प्रस्ताव मूल्य पर या इससे ऊपर वैध बोलियां प्राप्त हों।

युवती ने अश्लील फोटो-वीडियो वायरल करने से परेशान होकर कुंड में कुदी

हनुमानगढ़, 15 अक्टूबर। के गोगामेड़ी थाना क्षेत्र के ललाना बास दिखनादा गांव में एक युवती ने अश्लील फोटो-वीडियो वायरल करने से परेशान होकर कुंड में कूदकर जान दे दी। परिजनों को युवती के सुसाइड करने के समय इस बात का पता नहीं चला। इस कारण उन्होंने पुलिस को सूचना दिए बिना युवती के शव का अंतिम संस्कार कर दिया। तीन दिन बाद इस बात का पता चलने पर उन्होंने पुलिस को सूचना दी। इस मामले में गोगामेड़ी पुलिस थाने में दो युवकों के खिलाफ सुसाइड के लिए उकसाने का मामला दर्ज हुआ है। एएसआई महावीर प्रसाद ने बताया कि लीलाधर (19) पुत्र रामेश्वर नाई निवासी ललाना बास दिखनादा ने लिखित रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसकी बहन कविता (24) बीएड कर रही थी। कविता की शादी के लिए मलवास तहसील सिद्धमुख जिला चूरू निवासी राकेश नाई के साथ रिश्ता तय किया था। जो करीब डेढ़ वर्ष तक रहा। वे कविता की शादी करने वाले थे। उसी समय मनीष पुत्र विनोद कुमार उर्फ शेरसिंह नाई निवासी ललाना बास दिखनादा ने उसकी बहन की फोटो वीडियो और गलत व्हाट्सएप मैसेज कर राकेश से रिश्ता तुड़वा दिया। इस पर उन्होंने पंचायत की। पंचायत में मनीष और उसके परिवार वालों को उलाहना दिया। पंचायत में मनीष की ओर से रिश्ता तुड़वाने की गलती स्वीकार कर इसके बाद किसी प्रकार की गलती नहीं करने का आश्वासन दिया गया। उसके बाद करीब 8 महीने पहेल उसकी बहन का रिश्ता सहवाला के दिनेश नाई के साथ तय कर दिया।

इसका पता चलने पर राकेश पुत्र धर्मपाल निवासी मलवास ने अन्य व्यक्ति के साथ मिलकर राकेश सैन नाम से इन्स्टाग्राम आईडी तैयार कर उसकी बहन की अश्लील फोटो और मैसेज उसके होने वाले बहनोई दिनेश के मोबाइल नम्बर पर भेज दिए। वीडियो कॉल कर पूर्व की फोटो निकालकर फोटो और मैसेज भेजे। इस पर उसके बहनोई ने 9 अक्टूबर की रात करीब साढ़े 9 बजे उसकी बहन के फोन नम्बर पर कॉल कर फेक आईडी, अश्लील फोटो और मैसेज के बारे में बात की। राकेश और अन्य व्यक्ति ने उसके परिवार की अन्य बहन और औरतों के फोन नम्बर पर भी अश्लील फोटो और वीडियो भेजे थे। राकेश और अन्य व्यक्ति की ओर से मैसेज और अश्लील फोटो-वीडियो वायरल करने से समाज परिवार में हुई बदनामी से तंग आकर उसकी बहन कविता ने 9 अक्टूबर को घर में बने कुंड में कूदकर सुसाइड कर ली। लीलाधर के अनुसार दाह संस्कार के समय उन्हें उसकी बहन की अश्लील फोटो और मैसेज के बारे में और परिवार की अन्य औरतों के पास आए मैसेज और वीडियो का पता नहीं था। बाद में परिवार के सदस्यों ने बताया कि कविता ने मनीष और राकेश की ओर से परेशान करने पर सुसाइड किया है। पुलिस ने बीएनएस की धारा 108 के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एएसआई महावीर प्रसाद ने बताया कि लीलाधर (19) पुत्र रामेश्वर नाई निवासी ललाना बास दिखनादा ने लिखित रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसकी बहन कविता (24) बीएड कर रही थी। कविता की शादी के लिए मलवास तहसील सिद्धमुख जिला चूरू निवासी राकेश नाई के साथ रिश्ता तय किया था। जो करीब डेढ़ वर्ष तक रहा। वे कविता की शादी करने वाले थे। उसी समय मनीष पुत्र विनोद कुमार उर्फ शेरसिंह नाई निवासी ललाना बास दिखनादा ने उसकी बहन की फोटो वीडियो और गलत व्हाट्सएप मैसेज कर राकेश से रिश्ता तुड़वा दिया। इस पर उन्होंने पंचायत की।

पंचायत में मनीष और उसके परिवार वालों को उलाहना दिया। पंचायत में मनीष की ओर से रिश्ता तुड़वाने की गलती स्वीकार कर इसके बाद किसी प्रकार की गलती नहीं करने का आश्वासन दिया गया। उसके बाद करीब 8 महीने पहेल उसकी बहन का रिश्ता सहवाला के दिनेश नाई के साथ तय कर दिया। इसका पता चलने पर राकेश पुत्र धर्मपाल निवासी मलवास ने अन्य व्यक्ति के साथ मिलकर राकेश सैन नाम से इन्स्टाग्राम आईडी तैयार कर उसकी बहन की अश्लील फोटो और मैसेज उसके होने वाले बहनोई दिनेश के मोबाइल नम्बर पर भेज दिए। वीडियो कॉल कर पूर्व की फोटो निकालकर फोटो और मैसेज भेजे। इस पर उसके बहनोई ने 9 अक्टूबर की रात करीब साढ़े 9 बजे उसकी बहन के फोन नम्बर पर कॉल कर फेक आईडी, अश्लील फोटो और मैसेज के बारे में बात की। राकेश और अन्य व्यक्ति ने उसके परिवार की अन्य बहन और औरतों के फोन नम्बर पर भी अश्लील फोटो और वीडियो भेजे थे। राकेश और अन्य व्यक्ति की ओर से मैसेज और अश्लील फोटो-वीडियो वायरल करने से समाज परिवार में हुई बदनामी से तंग आकर उसकी बहन कविता ने 9 अक्टूबर को घर में बने कुंड में कूदकर सुसाइड कर ली। लीलाधर के अनुसार दाह संस्कार के समय उन्हें उसकी बहन की अश्लील फोटो और मैसेज के बारे में और परिवार की अन्य औरतों के पास आए मैसेज और वीडियो का पता नहीं था। बाद में परिवार के सदस्यों ने बताया कि कविता ने मनीष और राकेश की ओर से परेशान करने पर सुसाइड किया है। पुलिस ने बीएनएस की धारा 108 के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुरुष मित्रों के साथ मिलकर पति को पिलाया जहर

इलाज के दौरान मौत, अवैध संबंधों के चलते दिया वारदात को अंजाम

हनुमानगढ़, 15 अक्टूबर। अवैध संबंधों के चलते पत्नी ने अपने दो पुरुष मित्रों के साथ मिलकर पति के साथ मारपीट की। फिर पति को जबरन कीटनाशक दवा पिला दी। अस्पताल में इलाज के दौरान पति की मौत हो गई। इस संबंध में भादरा पुलिस थाने में मृतक की पत्नी सहित तीन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ है। पुलिस के अनुसार बलवंत पुत्र हरिसिंह धाणक निवासी रामबास ने मामला दर्ज कराया है। रिपोर्ट में बताया कि उसके छोटे भाई सुभाष की शादी शर्मिला के साथ हुई थी। इनके दो बच्चे हैं। सुभाष की पत्नी शर्मिला के राजकुमार पुत्र मानसिंह धाणक निवासी भाड़ी से पिछले एक वर्ष से अवैध संबंध थे। उसने, उसके चाचा प्रताप, पिता हरिसिंह, वेदप्रकाश व सज्जन आदि ने शर्मिला व राजकुमार को कई बार समझाया, लेकिन वे नहीं माने और उनके अनैतिक संबंध वैसे ही जारी रहे। इसी दौरान शर्मिला के सुरेश कुमार पुत्र चिमनाराम जाट निवासी रामबास से भी अवैध संबंध बन गए। शर्मिला के पास सुरेश कुमार व राजकुमार का काफी आना-जाना बढ़ गया। दो अक्टूबर की रात 10.30 बजे राजकुमार व सुरेश उसके भाई सुभाष की ढाणी आए। दोनों ने सुभाष के साथ मारपीट की, जिससे वह बेसुध हो गया। शर्मिला ने उसके भाई वेदप्रकाश को रात 11 बजे फोन कर बताया कि तुम्हारे भाई सुभाष को पता नहीं क्या हो गया और वह बेसुध पड़ा है। इस पर व उसका भाई वेदप्रकाश बाइक लेकर सुभाष के खेत में बनी ढाणी में गए और सुभाष को संभाला तो वह जोर-जोर से कराह रहा था। तब सुभाष ने उन्हें बताया कि राजकुमार व सुरेश कुमार ने उसके साथ मारपीट की और जबरदस्ती कीटनाशक दवा पिला दी। तुम लोग मुझे बचा लो, ये लोग मुझे जान से मार कर छोड़ेंगे। तब वह व उसका भाई वेदप्रकाश गाड़ी के जरिए सुभाष को हॉस्पिटल में लेकर गए। उसके भाई सुभाष ने रास्ते में बताया कि राजकुमार व सुरेश ने शर्मिला के साथ अवैध संबंधों के चलते उसके साथ मारपीट की और फिर शर्मिला के साथ मिलकर जबरदस्ती कीटनाशक दवा पिला दी। रास्ते में सुभाष की तबीयत और ज्यादा बिगड़ने लगी। वे सुभाष को लेकर अस्पताल पहुंचे और भर्ती करवाया, लेकिन इलाज के दौरान अपराह्न करीब 3 बजे उसके भाई सुभाष की मृत्यु हो गई। पुलिस ने बीएनएस की धाराओं व एससीएसटी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया है। जांच भादरा वृताधिकारी संजीव कटेवा कर रहे हैं।

आबूरोड में सांप के डंसने की दो घटना

आबूरोड, 15 अक्टूबर। आबूरोड के पास स्थित दो गावों में सांप काटने से एक युवक और एक महिला की मौत हो गई। पहली घटना झामर में हुई, जहां एक विवाहिता महिला टीलीबाई (20) पत्नी प्रभुराम गरासिया रविवार रात को खाना बना रही थी। तभी बिजली गुल हो गई। विवाहिता जहां खाना बना रही थी वहां दीवार पर एक छेद से सांप आया और गर्दन के नीचे काट दिया। सांप के काटते ही महिला बेहोश हो गई। आनन-फानन में परिवार विवाहिता को लेकर अस्पताल के लिए निकले तभी रास्ते में उसकी मौत हो गई। महिला गर्भवती थी। दूसरी घटना भाखर क्षेत्र के ग्राम पंचायत पाबा के रतोरा फली में हुई। जहां 19 वर्षीय छात्र गणेश कुमार पुत्र लसमाराम गरासिया को रविवार देर रात को घर के पास में सांप ने काट लिया। सांप के काटने के बाद छात्र भी बेहोश हो गया। जिसने गुजरात अंबाजी अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया।

हादसे में युवक के सीने के आर-पार हुआ पेचकस

पाली, 15 अक्टूबर। पाली के बांगड़ हॉस्पिटल में भर्ती हादसे में घायल युवक। वैन पलटने के दौरान उसमें रखा नुकिला पेचकस युवक के सीन के आर-पार हो गया। सड़क पर बैठे दो पशुओं से तेज रफ्तार वैन टकराकर दो-तीन बार पलटी। वैन में तीन युवक सवार थे। हादसे के दौरान वैन में रखा पेचकस एक युवक के सीने के आर-पार हो गया। घटना पाली जिले के मारवाड़ जंक्शन थाना इलाके में खारड़ा बस स्टैंड के पास रविवार रात 9 बजे हुई। मारवाड़ जंक्शन सरोज बैरवा ने बताया- पाली के बड़ा गुड़ा (बगड़ी नगर) से तीन युवक कमलेश नायक (27) पुत्र श्रवण, राहुल और अर्जुन वैन से बजरंग बाड़ी (पाली) जा रहे थे। इस दौरान खारड़ा बस स्टैंड के पास रोड पर बैठे पशु इन्हें दिखाई नहीं दिए और तेज रफ्तार से वैन पशुओं से टकरा गई। वैन दो-तीन बार पलटी। तीनों युवक घायल हो गए। कमलेश के सीने में वैन में रखा पेचकस आर-पार धंस गया। बाकी दोनों युवक भी घायल हो गए। हादसे की सूचना पर मौके पर पहुंचे। तीनों घायलों को मारवाड़ जंक्शन हॉस्पिटल ले गए। कमलेश को देर रात पाली के बांगड़ हॉस्पिटल रेफर कर दिया गया। जहां उसका इलाज चल रहा है। हादसे में वैन क्षतिग्रस्त हो गई और चपेट में आए दोनों पशु मर गए। क्षतिग्रस्त वैन सड़क किनारे करवाकर यातायात सुचारु कराया। घायल कमलेश नायक ने बताया- कल में अपने कजिन भाइयों राहुल और अर्जुन के साथ बजरंग बाड़ी जा रहा था। राहुल के फुफेरे भाई रोहित की बर्थ-डे पार्टी थी। हादसे में पेंचकस आर-पार हो गया। बांगड़ हॉस्पिटल के डॉ सौरभ गौड ने बताया- युवक को देखने पर लगा कि जैसे गोली आर-पार हुई हो। गनीमत रही कि नुकीली वस्तु ने दिल को डैमेज नहीं किया। वरना युवक की जान जा सकती थी।

नाबालिग ने लगाया छेड़छाड़ करने का आरोप

2 महिलाओं सहित 6 लोगों के खिलाफ पॉक्सो एक्ट में मामला दर्ज

चूरू, 15 अक्टूबर। शहर के महिला पुलिस थाने में एक नाबालिग ने दो महिलाओं सहित 6 लोगों के खिलाफ पॉक्सो एक्ट में मामला दर्ज करवाया है। शहर के महिला पुलिस थाने में एक नाबालिग ने दो महिलाओं सहित 6 लोगों के खिलाफ पॉक्सो एक्ट में मामला दर्ज करवाया है। शहर के महिला पुलिस थाने में एक नाबालिग ने दो महिलाओं सहित 6 लोगों के खिलाफ पॉक्सो एक्ट में मामला दर्ज करवाया है। महिला थाना पुलिस ने नाबालिग की रिपोर्ट पर एक पत्रकार, एक अधिकारी, एक एनजीओ संचालक, दो महिलाओं और एक युवक के खिलाफ पॉक्सो एक्ट में मामला दर्ज किया है। मामले की जांच कर रहे सदर थानाधिकारी बलवंत सिंह ने बताया कि नाबालिग ने रिपोर्ट में बताया कि दो साल पहले वह चूरू सदर थाना क्षेत्र में रहती थी। जहां एक एनजीओ संचालक, एक अधिकारी व एक पत्रकार ने उससे छेड़छाड़ व अश्लील हरकत करते थे। इस घटना के बारे में वहां रहने वाली एक महिला को बताया तो उसने चुप रहने की बात कही। वह उसको बहुत डराती रहती थी। वहीं, मकान की छत पर स्थित कमरे में शराब परोसने भेजती थी। जहां एक अधिकारी, एक पत्रकार और एनजीओ संचालक उसके साथ अश्लील हरकत करते थे। इस बारे में वहां रहने वाली दोनों महिलाओं को बताया। तब एक महिला ने डरा धमकाकर चुप रहने की बात कही। इसके अलावा घटनास्थल पर स्थित कमरे में अन्य लड़कियां भी बुलाई जाती थी। वहां रहने वाली एक महिला अन्य लड़कियों को भी बहुत डराती थी। जांच अधिकारी बलवंत सिंह ने बताया कि मामले की जांच गंभीरता के साथ की जा रही है। जांच में किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही नहीं बरती जाएगी।

पिपलेश्वर महादेव मंदिर में चोरी

सिरोही, 15 अक्टूबर। चोर मंदिर से करीब 20 तोला वजन के चांदी के गहने और अन्य कीमती सामान चोरी कर फरार हो गए। स्वरूपगंज थाना क्षेत्र के पिपलेश्वर महादेव मंदिर में चोरों ने रविवार रात मंदिर के ताले तोड़े। चोर मंदिर से करीब 20 तोला वजन के चांदी के गहने और अन्य कीमती सामान चोरी कर फरार हो गए। मंदिर के पुजारी मफतलाल महाराज ने स्वरूपगंज पुलिस को सूचना दी कि रविवार रात को वह मंदिर में पूजा पाठ और अन्य कार्य करके घर में सोने के लिए चले गए थे। सुबह उठकर देखा तो मंदिर के ताले टूटे हुए थे और वहां रखा हुआ सभी समान बिखरा पड़ा था। मंदिर में रखे सामानों की जब जांच की तो चांदी के तीन मुकुट, एक शिवलिंग का मुखारविंद चोर चोरी कर ले गए। घटना की सूचना मिलते ही स्वरूपगंज थाने के हेड कॉन्स्टेबल सोनाराम टीम के साथ मौके पर पहुंचे और मौका मुआयना किया। पुलिस ने मामला दर्ज करने के साथ ही इस मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस इस मामले में पुराने चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले लोगों की कॉल डिटेल के साथ ही अन्य सूचनाएं एकत्र कर रही है।

2 दिन से लावारिस खड़ी थी गाड़ी, क्रेन से थाने में ले गई पुलिस

बीकानेर, 15 अक्टूबर। दिल्ली से स्कॉर्पियो चुराने वाले चोरों ने गाड़ी को बीकानेर के नापासर इलाके में एक होटल के बाहर लावारिस छोड़ दिया। चोरों ने स्कॉर्पियो के पीछे वाले शीशे पर माफीनामा भी लिखा है। चोरों ने स्कॉर्पियो के पीछे वाले शीशे पर अंदर से कागज चिपकाया है। जिस पर लिखा- दिल्ली के पालम से चोरी हुई है, सॉरी। राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और क्रेन की मदद से गाड़ी को थाने में खड़ा करवाया है। पुलिस आसपास के इलाके में लगे कैमरों की फुटेज खंगालने के साथ आरोपियों की तलाश कर रही है। आसपास के लोगों ने पूछताछ में बताया कि गाड़ी पिछले 2 दिनों से यहां खड़ी थी। नापासर थानाधिकारी जसवीर कुमार ने बताया- सुबह करीब 9 बजे एक राहगीर का फोन आया था। उसने बताया- जयपुर रोड पर स्थित ग्रीन गार्डन होटल के पास एक सफेद रंग की स्कॉर्पियो लावारिस हालत में खड़ी है।

इस पर कागज चिपकाया हुआ है, जिसमें गाड़ी चोरी की होने की बात लिखी है। थानाधिकारी ने बताया- राहगीर की सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। जांच करने पर स्कॉर्पियो लॉक थी। आसपास के लोगों से पूछताछ करने पर सामने आया कि खाड़ी पिछले 2 दिनों से यहां खड़ी थी। उन्होंने बताया- गाड़ी के पीछे वाले शीशे पर अंदर से 2 कागज चिपकाए हुए थे। पहले पर लिखा था- गाड़ी दिल्ली पालम से चोरी की हुई है। इसके बाद गाड़ी के नंबर लिखे थे और अंत में सॉरी लिखा था। वहीं दूसरे कागज पर आई लव माय इंडिया लिखा था। कागजों पर लिखे गाड़ी नंबर से मालूम करवाया तो यह न्यू दिल्ली की पालम कॉलोनी के विनय कुमार के नाम से रजिस्टर्ड निकली। पुलिस के अनुसार, विनय कुमार से बात की गई तो पता चला कि यह गाड़ी 9-10 तारीख को उनके पालम कॉलोनी स्थि घर के आगे से चोरी हुई थी। इसकी रिपोर्ट पालम थाने दर्ज करवाई हुई है। पालम थाने के हेड कॉन्स्टेबल संदीप कुमार से संपर्क करके स्कॉर्पियो के बारे में जानकारी साझा की गई। गाड़ी को क्रेन की मदद से थाने में लाया गया है। न्यू दिल्ली की पालम पुलिस और विनय कुमार के आने पर कागजी कार्रवाई कर गाड़ी सौंप दी जाएगी। पुलिस ने शक जताया है कि किसी वारदात में गाड़ी का उपयोग किया गया है। वारदात पूरी होने के बाद गाड़ी को नापासर में छोड़कर बदमाश यहां से फरार हो गए हैं। पुलिस आसपास के इलाके में लगे सीसीटवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है।

पीट-पीटकर युवक की हत्या

श्रीगंगानगर, 15 अक्टूबर। श्रीगंगानगर जिले के हिंदुमलकोट थाना क्षेत्र में पीट-पीटकर एक युवक की हत्या का मामला सामने आया है। युवक का आरोपियों के परिवार की एक युवती से प्रेम संबंध था। शनिवार रात वह युवती को मोबाइल फोन गिफ्ट करने के लिए निकला था। इस दौरान उसके साथ उसका एक दोस्त भी था। ये लोग गांव में कुछ ही दूर निकले थे। इसी दौरान युवती के परिजनों ने उससे मारपीट कर दी। इससे युवक की मौत हो गई। हिंदुमलकोट थाना क्षेत्र के एक गांव के रहने वाले राजू ने बताया कि उसके भाई का गांव की ही एक युवती से प्रेम संबंध था। शनिवार रात वह युवती को मोबाइल फोन गिफ्ट करने के लिए घर से निकला था। इसकी जानकारी युवती के परिजनों को हो गई। युवती के परिवार के आरोपी युवकों ने पंजाब से आए अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर युवक को घेर लिया। आरोपियों ने उससे मारपीट की और उसे गंभीर चोटें पहुचाईं। इससे उसकी मौत हो गई। राजू ने बताया कि आरोपी करीब 8 से 10 थे। इन लोगों ने उसके भाई को चोटें पहुंचाई। मामले की जांच एसएचओ महेश कुमार कर रहे हैं।

फायरिंग में किशोर हुआ घायल

गाली देने से मना करने पर पुरानी रंजिश में 12 बोर बंदूक से किया फायर

जैसलमेर, 15 अक्टूबर। जैसलमेर के पूनम नगर गांव में एक किशोर पर फायरिंग करने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार पुरानी रंजिश के चलते एक व्यक्ति ने 16 साल के दशरथ सिंह पर फायरिंग कर दी। 12 बोर बंदूक से हुए फायर में किशोर बच गया, मगर उसके 2 जगह छर्रे लग गए। परिजन दशरथ सिंह को लेकर रामगढ़ हॉस्पिटल आए, जहां प्राथमिक इलाज के बाद उसे जैसलमेर स्थित जवाहिर हॉस्पिटल रेफर किया गया। फिलहाल दशरथ सिंह की हालत खतरे से बाहर है। वहीं रामगढ़ पुलिस ने फायर करने वाले जयपाल सिंह की तलाश शुरू कर दी है। घटना रविवार देर शाम की बताई जा रही है। पीड़ित दशरथ सिंह के चाचा ने बताया कि दशरथ सिंह पुत्र नरपत सिंह कोल्ड ड्रिंक पीने अपने चाचा के लड़के के साथ गांव की दुकान पर गया था। इस दौरान वहां पहले से ही बैठे जितेंद्र सिंह ने दशरथ सिंह के साथ गाली गलौज कर दी। इसके बाद दशरथ ने गाली देने से मना करने के बाद दोनों के बीच कहासुनी हो गई। वहां जितेंद्र सिंह के साथ बैठे जयपाल सिंह ने बंदूक निकाल कर दशरथ पर फायर कर दिया। जिससे बंदूक के छर्रे दशरथ सिंह के हाथ व पेट में चले गए। घटना के तुरंत बाद दशरथ सिंह को रामगढ़ सीएचसी ले जाया गया। जहां से उसे जैसलमेर रेफर कर दिया गया है। फायरिंग की सूचना मिलने पर रामगढ़ पुलिस का जाब्ता मौके पर पहुंचा। घायल दशरथ सिंह के मामा भूरसिंह रामगढ़ ने बताया कि इन दोनों परिवारों के बीच पुरानी रंजिश है। जिसको लेकर जयपाल सिंह पुत्र केसर सिंह व उसके चाचा के लड़के जितेंद्र सिंह पुत्र तखत सिंह हर बार शराब पीकर हो हल्ला मचाते रहते हैं। रविवार को दशरथ के साथ जितेंद्र सिंह के गाली गलौच करने के बाद शराब के नशे में जयपाल सिंह ने बंदूक से फायर कर दिया। जिससे दशरथ सिंह के पेट में 3 व हाथ में एक छर्रा लगा। गनीमत रही कि उसको गोली नहीं लगी, अन्यथा उसकी जान जा सकती थी। रामगढ़ पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दुल्हन की विदाई से पहले दूल्हे के भाई की मौत

सिरोही, 15 अक्टूबर। सिरोही में दुल्हन की विदाई से पहले दूल्हे के छोटे भाई और रिश्तेदार की मौत हो गई। दोनों युवक बाइक से जा रहे थे। दुल्हन के घर से टेंट का सामान लेकर आ रही पिकअप ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे के बाद शादी के घर में मातम छा गया। हादसा कैलाशनगर थाना क्षेत्र में मनादर कस्बे के देवनगर में रविवार सुबह 7:30 बजे हुआ। थानाधिकारी कानाराम सीरवी ने बताया- जालोर के मेडा उपला से सोमाराम की बारात शनिवार शाम मनादर कस्बे के देवनगर में आई थी। रात को शादी होने के बाद सुबह दुल्हन की विदाई की तैयारियां चल रही थीं। रविवार सुबह 7 बजे दूल्हे का भाई दिनेश (30) पुत्र कानाराम रेबारी और देवनगर निवासी निंबाराम (18) पुत्र मानाराम रेबारी बाइक से सामान लेने के लिए गए थे। यह पिकअप दुल्हन के घर से टेंट का सामान लेकर आ रही थी। इसी ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे दोनों युवकों की मौत हो गई। थानाधिकारी ने बताया- वहां से लौटते समय देवनगर निवासी कालूराम देवासी के घर के सामने पहुंचे थे। तभी दुल्हन के घर से टेंट का सामान लेकर आ रही पिकअप ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार दोनों युवक गंभीर घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। दोनों घायलों को एंबुलेंस से कैलाश नगर अस्पताल ले जाया गया। हालत गंभीर होने पर प्राथमिक इलाज के बाद उन्हें सिरोही सरकारी अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया। इस दौरान रास्ते में निंबाराम की मौत हो गई। दिनेश को सिरोही के सरकारी अस्पताल से उदयपुर के लिए रेफर कर दिया। एंबुलेंस के मोरस के पास पहुंचते ही रास्ते में उसकी भी मौत हो गई। सिरोही सरकारी अस्पताल की मॉर्च्युरी के बाहर मृतकों के परिजन से जानकारी लेती पुलिस। थानाधिकारी कानाराम सीरवी ने बताया- दोनों शव को सिरोही सरकारी अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम करवाकर शव परिजन को सौंप दिए हैं। दोनों वाहनों को जब्त कर लिया है। परिजन की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सट्टा लगाते 2 युवक गिरफ्तार

4.84 लाख रुपए का मिला हिसाब, पुलिस ने 2 अलग-अलग जगह की कार्रवाई

हनुमानगढ़, 15 अक्टूबर। पुलिस ने सट्टे के खिलाफ दो अलग-अलग कार्रवाई करते हुए दो युवकों को गिरफ्तार किया है। हनुमानगढ़ की जंक्शन थाना पुलिस ने जुआ-सट्टा और ऑनलाइन गैम्बलिंग के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति के तहत गांधीनगर इलाके में दो अलग-अलग कार्रवाई करते हुए दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से 3720 रुपए नकद और 4.84 लाख रुपए का हिसाब बरामद हुआ।

इस मामले में दोनों युवकों के खिलाफ बीएनएस की धारा, आईटी एक्ट और आरपीजीओ के तहत अलग-अलग मामले दर्ज किए हैं। जंक्शन पुलिस थाना प्रभारी सतपाल बिश्नोई ने बताया कि पुलिस अधीक्षक अरशद अली की ओर से जिले में अवैध मादक पदार्थ, जुआ-सट्टा, क्रिकेट बुकी और अवैध धंधों की रोकथाम के लिए जीरो टॉलरेंस नीति के तहत सभी अधिकारियों को अपने-अपने थाना क्षेत्र में इस अभियान की सख्ती से पालना करवाए जाने के लिए निर्देशित किया गया है।

साथ ही आमजन से गुप्त रूप से सूचना देने के लिए अपील की गई है। इसी क्रम में रविवार रात को एसआई संतोष के नेतृत्व में गठित स्पेशल टीम को मुखबिर के जरिए सूचना मिली। सूचना पर अलग-अलग टीम को जंक्शन थाना क्षेत्र में रवाना किया गया। पहली टीम ने जंक्शन कस्बे के गांधीनगर इलाके में करणी सिंह (30) पुत्र विनोद कुमार मेहरा निवासी वार्ड 16, गांधीनगर को 3420 रुपए की सट्टा रकम सहित गिरफ्तार किया। इसके अलावा लैपटॉप में सट्टे का 8510 रुपए का हिसाब-किताब मिला। इस मामले में जांच एसआई चुंका को सौंपी है। थाना प्रभारी ने बताया कि दूसरी टीम ने मुखबिर की सूचना पर गांधीनगर इलाके में कार्रवाई करते हुए तुलसीदास (31) पुत्र उधवदास सिंधी निवासी वार्ड 16, गांधीनगर को 300 रुपए नकद सट्टा रकम सहित गिरफ्तार किया। इसके अलावा लैपटॉप में सट्टा का 4 लाख 76 हजार 86 रुपए का हिसाब-किताब मिला। कार्रवाई करने वाली पुलिस टीम में एसआई संतोष, एएसआई देवेन्द्र कुमार, हेड कॉन्स्टेबल शंकरदयाल, महेन्द्र सिंह, कॉन्स्टेबल संदीप कुमार, राजवंत सिंह, परमेश्वर और रामकरण शामिल रहे। इस कार्रवाई में हेड कॉन्स्टेबल श्रवण कुमार की विशेष भूमिका रही।

जैसलमेर में मिला सांचौर के युवक का शव

पिता की जगह 4 दिन पहले ही आया था काम पर, हत्या का जताया शक

जैसलमेर जैसलमेर के झिनझिनयाली थाना इलाके के खेत में बने टैंक में सांचौर के एक युवक का शव मिला।

खेत मालिक ने परिजनों को जानकारी देकर जैसलमेर बुलाया। परिजनों की मौजूदगी में पुलिस ने युवक पीराराम जाट (20) पुत्र कालूराम के शव को पानी के टैंक से बाहर निकाला। शव को जवाहिर हॉस्पिटल लाकर पोस्टमॉर्टम करवाया गया। परिजनों ने युवक की हत्या का अंदेशा जताते हुए जांच करने की मांग की है। झिनझिनयाली थाना प्रभारी सुरजाराम ने बताया कि परिजनों को समझाने के बाद वे शव को लेकर घर गए। घटनास्थल की एफएसएल जांच करवाई है ताकि युवक की मौत के कारणों का खुलासा हो सके। मृतक युवक के चाचा भूराराम ने बताया कि युवक पीराराम बाड़मेर में बीए फाइनल की पढ़ाई कर रहा था। इसके साथ ही वह आर्मी की तैयारी भी कर रहा था।

पीराराम के पिता कालूराम झिनझिनयाली थाना इलाके में मदन सिंह नामक व्यक्ति के खेत में मजदूरी का काम करते हैं। चार दिन पहले मृतक के पिता के मामा की मौत होने पर पिता ने पीराराम को अपनी जगह पर खेत की देखभाल के लिए बुला लिया।

भूराराम ने बताया कि 12 अक्टूबर की शाम को खेत मालिक मदन सिंह का फोन आया कि पीराराम खेत पर कहीं मिल नहीं रहा है। आप लोग आ जाओ। हम सभी देर रात करीब 11 बजे तक झिनझिनयाली पहुंचे। वहां पुलिस भी मौजूद थी। हमें बताया गया कि शव पानी के टैंक में मिला है। हमारी मौजूदगी में पीराराम को पानी के टैंक से बाहर निकाला।

उन्होंने बताया कि पीराराम के चेहरे पर चोट के निशान होने पर हमने हत्या का अंदेशा जताया। 13 अक्टूबर को जवाहिर हॉस्पिटल में शव का पोस्टमॉर्टम करवाया गया। पुलिस द्वारा एफएसएल जांच करवाने और मामले की जांच करने के आश्वासन पर हम 13 अक्टूबर की रात करीब 12 बजे शव लेकर घर रवाना गए। मृतक पीराराम पुत्र कालूराम जाट सांचोर के सोबडावास रहने वाला था।

पाली में सड़क हादसे में 4 घायल

दो व्यक्तियों के सिर में आई चोट, दो जनों के पांव में फ्रेक्चर

पाली, 15 अक्टूबर। कार की टक्कर से घायल बाइक सवार युवकों का पाली के बांगड़ हॉस्पिटल में उपचार करते नर्सिंगकर्मी। पाली में सोमवार को 3 अलग-अलग हादसों में चार जने घायल हो गए। हादसे में दो जनों के सिर में गंभीर चोट आई वहीं दो जनों के पांव में फ्रेक्चर हो गए। घायलों को उपचार के लिए पाली के बांगड़ हॉस्पिटल भर्ती किया गया। जहां उनका उपचार जारी है। पहला हादसा पाली जिले के फुलाद गांव के पास हुआ। बाइक पर आ रहे पाली जिले के धापुणिया बेरा सारण (सिरियारी) निवासी 35 साल के विजय सिंह पुत्र शेषूसिंह रावत और 40 साल के बाबूसिंह पुत्र रेणसिंह को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में दोनों घायल हो गए। जिन्हें उपचार के लिए पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लाया गया। दोनों घायलों के सिर और पांव में चोटे आई। इसी तरह बाइक से रोहट निवासी भुंडाराम(25) पुत्र गोविंद सरगरा रोहट से जालोर की तरफ सोमवार की सुबह जा रहा था। इस दौरान स्कोर्पियो चालक ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में युवक का एक हाथ फ्रेक्चर हो गया और सिर में भी चोट आई। पाली शहर के नया बस स्टैंड से कुछ आगे मनू सर्विस सेंटर के पास हाईवे पर तेज रफ्तार कार ने साइकिल सवार को पीछे से टक्कर मार दी।

शिव के तांडव के पीछे की कहानी

जानें कौन है नटराज के पैरों के नीचे

भगवान शिव नृत्यु क्यों करते हैं और नृत्य से कौन सी ऊर्जा का संचार करते हैं। साथ ही नटरजा के पैरों के नीचे कौन है, जिस पर वह नृत्य कर रहे हैं। आइए जानते हैं नटराज के पैरों के नीचे बौना राक्षस कौन है। उत्सव, खुशी, मिलन, कृतज्ञता, उत्साह और असीम शांति से भरी एक दिव्य अनुभूति है नृत्य। नृत्य में हमारी ऊर्जा ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ एक होने लगती है। नृत्य करती शिव की नटराज प्रतिमा दर्शाती है कि संसार गति से भरा है, और यहां का कण-कण नृत्य कर रहा है। शिव का नृत्य ही ब्रह्मांड है। इस नृत्य में गति है, और इस गति में नृत्य है। नृत्य की यही गति ब्रह्मांड है। इसी गति को पाना प्रभु को पाना है। जिसने भी प्रभु को पाया है, वे सब नाचे हैं, चाहे चैतन्य महाप्रभु हों या मीरा।

नृत्य परमात्मा की परम पूजा में लीन होना होता है। नृत्य कोई विचार नहीं है, बल्कि यह समस्त विचारों, मानसिक विकारों को वतर्मान से बाहर करने का मार्ग है। नृत्य में जब व्यक्ति अपनी सुध-बुध खोकर परमात्मा से एक हो जाना चाहता है, तब नृत्य उसके लिए पूजा बन जाता है। जब कोई नृत्य में होता है तो उसके लिए समय हो या विचार, सब ठहर जाते हैं। उसके अंदर जितने तरह के भय या दुख रहते हैं, विलीन हो जाते हैं। यहां तक कि भूत-भविष्य का भी लोप हो जाता है। रह जाता है सिर्फ वर्तमान और उसके साथ उस क्षण का वह आनंद जो परमात्मा से साक्षात मिलन का साक्षी होता है।

वैदिक काल से ही नृत्य भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। ऋग्वेद के कई श्लोकों में इंद्र को ब्रह्मांड को नचाने वाला कहा गया है। यजुर्वेद से पता चलता है कि वैदिक युग में नृत्य करने वाले खूब थे। अथर्ववेद में कहा है, 'स्यां गायंति नृत्यंति भूम्यां मर्त्यायैलिवाः, युद्धंते यस्यमा-न्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः।' यानी जहां आनंद के बाजे बज रहे हैं, लोग प्रसन्नता से नाचते-गाते हैं और वीर लोग उत्साह से राष्ट्र की रक्षा में तत्पर हैं।

स्कंद पुराण में शिव के नटराज मुद्रा में होने की कथा है। नटराज की मूर्ति देखें तो उनके पैरों तले कोई है। यह अपस्मरा नाम का राक्षस है। इस राक्षस को अभिमान और अज्ञानता का प्रतीक माना गया है।

मगर शिव क्या कर रहे हैं? वह इस राक्षस को क्रोधित होकर मार भी सकते थे। मगर मुस्कुराते हुए अपस्मरा पर चढ़कर नृत्य कर रहे हैं। वो नृत्य के आनंद में हैं, जिसके पैरों तले अभिमान और अज्ञानता नाम का राक्षस कुचला जा रहा है।

हमारे भारतीय जीवन में कोई भी उत्सव नृत्य के बगैर पूरा नहीं माना जाता। उत्सव जीवन में उजाला लेकर आते हैं, जिसमें नृत्य के जरिए अज्ञान और अभिमान को खत्म करना हमारी सांस्कृतिक विरासत है। इसीलिए भारत के हर प्रांत में अलग-अलग नृत्य प्रचलित रहे हैं। भरतनाट्यम्, कथकली, कथक, ओडिसी, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम, कुचिपुड़ी, सत्रीया नृत्य आदि भारत की विरासत हैं, जो परमात्मा के अलग-अलग रूपों की आराधना के लिए वर्णित हैं। भारत के अनेक पौराणिक मंदिर इन नृत्यों का इतिहास दर्शाते हैं। नृत्यों के माध्यम से कथाओं और कहानियों को भी दर्शाया जाता है। नृत्य करने और देखने वाले दोनों के लिए वह पल दिव्यता से भर जाता है।

भारत में शास्त्रीय नृत्य हों, या फिर पारंपरिक लोक नृत्य, भांगड़ा, गरबा से लेकर, शादी के नृत्य और western ballroom dance आदि हों, यह बस वास्तव में दिव्यता से एक हो जाने का अहसास कराते हैं। नृत्य करिए, अकेले में करिए और हो सके तो सबके साथ मिलकर करिए, ताकि जीवन के उत्सव का जश्न सामूहिक रूप से मनाया जा सके। आप अपने जीवन में dance करने का मौका कभी न छोड़िएगा। हां, जब शरीर से dance न कर रहे हों, तब परमात्मा का शुक्राना करते हुए मन ही मन dance कर चेहरे पर मुस्कुराहट को बनाए रखिएगा।

प्रभु श्रीराम भगवान शंकर के ज्ञान और धर्म से युक्त वचन रचना सुनकर संतुष्ट हो गए

भगवान शंकर ने यहां अपने मन की स्थिति व भगवान की आज्ञा का कितना सुंदर समन्वय बनाया। वे भगवान राम से रुष्ट भी तो हो सकते थे। वे कह सकते थे, कि हे प्रभु! आप भी कितनी कच्ची बात करते हैं। क्या आपको भी पत्नी के वियोग की पीड़ा समझानी पड़ेगी? भगवान श्रीराम जी ने, भगवान शंकर से विनती की, कि अब आप श्रीपार्वती जी से विवाह करने को तत्पर हों। जैसे ही श्रीराम जी के यह वचन भोलेनाथ ने सुने, तो वे बोले-

'कह सिव जदपि उचित अस नाहीं।
नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं।।
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा।
परम धरमु यह नाथ हमारा।।'

भगवान शिव बोले, कि यद्यपि विवाह करना हमारे लिए किंचित भी उचित नहीं है। किंतु स्वामी की बात भी मेटी नहीं जा सकती। हे नाथ! मेरा यही परम धर्म है, कि मैं आपकी आज्ञा को सिर पर रखकर उसका पालन करुं। भगवान शंकर ने यहाँ अपने मन की स्थिति व भगवान की आज्ञा का कितना सुंदर समन्वय बनाया। वे भगवान राम से रुष्ट भी तो हो सकते थे। वे कह सकते थे, कि हे प्रभु! आप भी कितनी कच्ची बात करते हैं।

क्या आपको भी पत्नी के वियोग की पीड़ा समझानी पड़ेगी? आपको तो पता ही है, कि श्रीसीता जी को जब रावण हरण करके ले गया था, तो आप कितनी असहनीय पीड़ा में चले गये थे। पत्तों-पत्तों, टहनियों व भंवरों से भी आप पूछ रहे थे, कि मेरी सीते कहाँ है। वह भी तब जब श्रीसीता जी तो केवल खोई थी। उन्होंने सती जी की भांति देह नहीं त्यागी थी।

इस परिस्थिति में कोई आपको कहता, कि हे राम जी! विलाप छोड़िए। अगर आपकी एक पत्नी का आपसे बिछोह हो गया है, तो आप दूसरी शादी कर इस पीड़ा से निकल भी तो सकते हैं। आपके पिता श्रीदशरथ जी ने कौन सी तीन शादियां नहीं की थी। अब आप बताइये, कि क्या इस विचार को आप मान लेते, कि आप श्रीसती जी को छोड़, एक अन्य विवाह कर लेते? ठीक इसी प्रकार से हमारा भी अब मन नहीं कि हम विवाह करें। किंतु क्योंकि हमें ऐसी आज्ञा देने वाले कोई और नहीं, बल्कि स्वयं श्रीनारायण हैं। तो ऐसे में तो मैं केवल एक ही बात कह सकता हूं।

शरद पूर्णिमा

श्रीकृष्ण गोपियों संग करते हैं महारास और महालक्ष्मी करती हैं पृथ्वी का भ्रमण

बुधवार, 16 अक्टूबर को शरद पूर्णिमा है। दीपावली (कार्तिक अमावस्या) से पहले आश्विन पूर्णिमा पर देवी लक्ष्मी पृथ्वी का भ्रमण करती हैं और जो भक्त रात में जागकर लक्ष्मी पूजा करते हैं, उन्हें देवी की विशेष कृपा मिलती है। ऐसी मान्यता है। एक अन्य मान्यता ये है कि इस तिथि की रात श्रीकृष्ण गोपियों संग महारास रचाते हैं। इस पर्व पर मथुरा-वृंदावन, गोकुल, गोवर्धन पर्वत, निधिवन में काफी अधिक भक्त पहुंचते हैं। शरद पूर्णिमा की रात खुले आसमान में चंद्र की रोशनी में खीर बनाने की परंपरा है। पौराणिक मान्यता है कि इस रात चंद्र की किरणें हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक रहती हैं। इसी वजह से शरद पूर्णिमा की रात खीर बनाई जाती है, रात में चांद की चांदनी में बैठते हैं, ध्यान करते हैं, मंत्र जप करते हैं। शरद पूर्णिमा को कोजागरी पूर्णिमा भी कहते हैं, क्योंकि देवी लक्ष्मी इस पर्व की रात में धरती का भ्रमण करती हैं और पूछती हैं कोजागृति यानी कौन जाग रहा है। इस रात में लोग जागते हैं और पूजा-पाठ करते हैं, उनसे देवी लक्ष्मी उनसे प्रसन्न होती हैं। शरद पूर्णिमा की रात चंद्रमा अपनी सभी सोलह कलाओं के साथ दिखाई देता है।

चंद्रदेव को लगाते हैं खीर का भोग

पौराणिक कथाओं में चंद्र को शांति और पवित्रता का प्रतीक माना है। चंद्र सबसे तेज चलने वाला ग्रह है, ये करीब ढाई दिन में ही राशि बदल लेता है, इसी वजह से ज्योतिष में चंद्र को मन का कारक कहते हैं। ये ग्रह कर्क राशि का स्वामी है। पूर्णिमा की रात चंद्र अपने पूरे प्रभाव में होता है। जिन लोगों की कुंडली में चंद्र से संबंधित दोष हैं, उन्हें पूर्णिमा की रात चंद्र देव की पूजा करनी चाहिए और खीर का भोग लगाना चाहिए। माना जाता है कि चंद्र देव को खीर अर्पित करने से चंद्र के दोषों का असर कम होता है।

शरद पूर्णिमा पर करें ये शुभ काम

देवी लक्ष्मी के साथ विष्णु जी अभिषेक करें। श्रीसूक्त, लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। पूजा में खीर का भोग लगाएं। हनुमान जी के सामने दीपक जलाएं। सुंदरकांड और हनुमान चालीसा का पाठ करें। आप चाहें तो राम नाम मंत्र का जप भी कर सकते हैं। भगवान गणेश, शिव जी, देवी पार्वती की भी पूजा करें। शिवलिंग पर चंदन का लेप करें। बिल्व पत्र, धतूरा, दूर्वा, आंकड़े के फूल चढ़ाएं। ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जप करें। जरूरतमंद लोगों को अनाज, धन, कपड़े, जूते-चप्पल का दान करें।

छोटी कन्याओं को पढ़ाई की चीजें दान करें। किसी गौशाला में गायों की देखभाल के लिए धन का दान करें।

किसी तालाब में मछलियों को आटे से बनी गोलियां खिलाएं। किसी मंदिर में पूजन सामग्री भेंट करें। देवी मां को लाल चुनरी चढ़ाएं।

पूजा-विधि और महत्व

इस महीने की पूर्णिमा को आश्विन पूर्णिमा के नाम से जाना जाएगा। उदया तिथि के चलते 17 अक्टूबर के दिन पूर्णिमा व्रत रखा जाएगा। हालांकि कई पंडितों और पुजारियों का कहना है कि शारदीय पूर्णिमा का व्रत 16 अक्टूबर को रखा जाएगा। पूर्णिमा तिथि पर लक्ष्मी मां की पूजा-उपासना करने से घर की सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा को अर्घ्य भी दिया जाता है। पवित्र नदी में स्नान करें या पानी में गंगाजल मिलकर स्नान करें

भगवान श्री हरि विष्णु और मां लक्ष्मी का जलाभिषेक करें

माता का पंचामृत सहित गंगाजल से अभिषेक करें

अब मां लक्ष्मी को लाल चंदन, लाल रंग के फूल और श्रृंगार का सामान अर्पित करें

मंदिर में घी का दीपक प्रज्वलित करें

संभव हो तो व्रत रखें और व्रत लेने का संकल्प करें

आश्विन पूर्णिमा की व्रत कथा का पाठ करें

श्री लक्ष्मी सूक्तम का पाठ करें

पूरी श्रद्धा के साथ भगवान श्री हरि विष्णु और लक्ष्मी जी की आरती करें

माता को खीर का भोग लगाएं

चंद्रोदय के समय चंद्रमा को अर्घ्य दें

अंत में क्षमा प्रार्थना करें

आश्विन पूर्णिमा का महत्व

आश्विन पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान स्नान और दान करने का खास महत्व है। आश्विन पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान करने से साधक को शुभ फल की प्राप्ति होती है।

साथ ही आश्विन पूर्णिमा के दिन चंद्र देव और धन की देवी मां लक्ष्मी की विधिपूर्वक पूजा और व्रत करने का विधान है। इसलिए आश्विन पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान किया जाता है। हिंदू धर्म में हर साल आश्विन माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को शरद पूर्णिमा मनाई जाती है। इस दिन धन की देवी लक्ष्मी और भगवान विष्णु की पूजा करने की परंपरा है। हिंदू धर्म में शरद पूर्णिमा की रात को बहुत खास माना जाता है।

कब है करवा चौथ ?

शुभ मुहूर्त और पूजा विधि

पति की लंबी उम्र के लिए करवा चौथ का निर्जला व्रत रखा जाता है। इस दिन महिलाएं सोलह श्रृंगार करती है और परंपारिक परिधान पहनती है। जब शाम के चंद्रोदय हो जाता है इसके बाद चंद्र को अर्घ्य देकर व्रत का पारण किया जाता है। सुहागिन महिलाओं के लिए करवा चौथ का व्रत बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। इस व्रत को ज्यादातर शादी-शुदा महिलाएं रखती हैं। पति की लंबी आयु के लिए निर्जला व्रत रखा जाता है। इस दिन महिलाएं अपने सुहाग के लिए सोलह श्रृंगार करती हैं। शाम के समय जब चंद्रोदय हो जाता है तो चंद्रमा के अर्घ्य देकर व्रत का पारण किया जाता है।

कब है करवा चौथ ?

इस साल करवा चौथ का व्रत 20 अक्टूबर 2024, दिन रविवार को रखा जाएगा। इस दिन सुहागिन महिलाएं कठिन व्रत का पालन करती हैं और विधिवत पूजा-अर्चना करती हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस व्रत को रखने से पति की लंबी उम्र और सुरक्षा प्राप्त होती है। इसके साथ ही घर में सुख-समृद्धि आती है।

पूजा का शुभ मुहूर्त

-चतुर्थी तिथि प्रारंभ- 20 अक्टूबर 2024 को 6.46 बजे

- चतुर्थी तिथि समाप्त - 21 अक्टूबर 2024 को 4.16 बजे

- करवा चौथ व्रत समय - सुबह 6.25 से शाम 7.54 - अवधि - 13 घंटे 29 मिनट्स

करवा चौथ पूजा मुहूर्त

- करवा चौथ पूजा मुहूर्त शाम 05.46 बजे से शाम 7.02 बजे तक है।

- अवधि 1 घंटा 16 मिनट्स

-करवा चौथ के दिन चंद्रोदय का समय- शाम 7.54 बजे

करवा चौथ व्रत सामग्री

मिट्टी या तांबे का करवा और ढक्कन, पान, सींक, कलश, अक्षत, चंदन, फल, पीली मिट्टी, फूल, हल्दी, लकड़ी का आसान, देसी घी, कच्चा दूध, दही, शहद, शक्कर का बूरा, रोली और मौली, मिठाई, चलनी।

करवा चौथ पूजा विधि

- सबसे पहले ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें।

- मंदिर और घर की सफाई करें।

- सभी देवी-देवताओं की विधि-विधान पूजा करें।

- इसके बाद करवा चौथ व्रत रखने का संकल्प लें।

- संध्या के समय शुभ मुहूर्त में करवा चौथ की व्रत कथा का पाठ करें।

- फिर चंद्रमा की पूजा करें।

- चंद्रोदय होने के बाद अर्घ्य दें।

- पति को छलनी से देखकर आरती उतारें।

- आखिर में पति द्वारा पत्नी को पानी पिलाकर व्रत पारण किया जाता है।

जयपुर में 25 सवारियों से भरी बस में आग

जयपुर, 15 अक्टूबर। रविवार की रात जयपुर के मालपुरा गेट इलाके में चलती बस में आग लग गई। जयपुर में रविवार (13 अक्टूबर) रात चलती प्राइवेट बस में आग लग गई। बस में सवार 25 यात्रियों ने किसी तरह अपनी जान बचाई। चलती बस के नीचे बाइक आ गई, जिसकी वजह से निकली चिंगारी से बस में आग लग गई। बस यात्रियों ने कहा कि लाखों की ज्वेलरी सहित उनके कीमती सामान जल गए। सांगानेर थाने के एएसआई लालचंद मीणा ने बताया- अभय ट्रैवल्स की बस जयपुर से उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जा रही थी। कोहिनूर सिनेमा मालपुरा गेट (सांगानेर) से रात करीब 10 बजे बस रवाना हुई थी। 15 मिनट बाद बस सांगानेर चौरड़िया पेट्रोल पम्प पहुंची थी। इसी दौरान एक बाइक बस के नीचे आ गई। उससे चिंगारियां निकलीं। इससे आग लग गई। ड्राइवर बस से कूद गया। सवारियों में चीख-पुकार मच गई। सवारियों भी किसी तरह बस से उतरीं। उनका सामान बस में ही रह गया था। मालपुरा गेट थाना पुलिस ने दो दमकलों की मदद से प्राइवेट बस में लगी आग पर करीब एक घंटे में काबू पाया। हादसे में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई है। SHO (मालपुरा गेट) हिम्मत सिंह ने बताया- बस को चपेट में आकर बाइक पूरी तरह से जल गई। बाइक के मालिक के बारे में जानकारी जुटाने के प्रयास कर रहे हैं। देर रात सड़क के बीचों बीच खड़ी बस में आग देख उधर से गुजरने वाले लोग सहम गए। कुछ लोग दूर से वीडियो बनाने लगे। कुछ ही देर में बस को आग की लपटों ने घेर लिया। बाहर से आग बुझने के बाद दमकल कर्मियों ने बस में चढ़कर अंदर से जलती सीटों और सामान की आग बुझाई। आग पर काबू पाया गया तो यात्रियों ने अपना सामान संभाला। बस में लोहे को छोड़कर बाकी सारा सामान राख हो गया था। आग बुझाने के बाद पुलिसकर्मियों ने बस का जायजा लिया। बस में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया। मौके पर मौजूद ट्रैफिक पुलिसकर्मी राकेश ने बताया- मैंने देखा तो केबिन में आग लग चुकी थी। पेट्रोल पंप से मैं अग्निशमन सिलेंडर लेकर आया। बुझाने की कोशिश की, लेकिन आग पर काबू नहीं पाया जा सका। उन्होंने बताया- एक्सीडेंट कैसे हुआ ये मैंने नहीं देखा। जैसे ही हादसे और आग की सूचना मिली तो कंट्रोल रूम को सूचित किया था। इसके बाद दमकल का वाहन आया और आग बुझाने की प्रक्रिया शुरू हुई। एक दंपती ने अपना जला हुआ सामान दिखाते हुए कहा- सोना-चांदी सब जल गया। इस बैग में यह गोल्ड की ज्वेलरी थी। हम बस में सवार थे। बैग ऊपर रखा था। एक्सीडेंट हुआ तो हम निकलकर भागे। बैग संभालने का मौका नहीं मिला। महिला ने कहा- हम भाई की शादी में यूपी के फर्रुखाबाद जा रहे थे। एक यात्री सईद हसन ने बताया- मैंने फर्रुखाबाद जाने के लिए टिकट लिया था। सांगानेर से बस गुजर रही थी। अचानक केबिन की तरफ रोशनी हुई तो ड्राइवर उतर कर भाग गया। उसने आवाज तक नहीं लगाई। हम परिवार के साथ थे। सबकी जान बचाने के लिए बस से उतर गए। सईद ने अपना जला हुआ मोबाइल दिखाया। उन्होंने कहा- सभी सवारियां अलग-अलग जगह जा रही थीं। अधिकतर सवारियां फर्रुखाबाद की थीं। सांगानेर से 15-20 सवारियां बस में बैठी थीं।

सड़क के पास झाड़ियों में मिला बम

जैसलमेर, 15 अक्टूबर। जैसलमेर के नाचना इलाके के सत्याया से आसकंद्रा जाने वाली सड़क के पास झाड़ियों में बम मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। जानकारी के अनुसार नाचना क्षेत्र के सत्याया से आसकंद्रा सड़क मार्ग के पास विक्रम सिंह पुत्र कूप सिंह के खेत के पास बमनुमा वस्तु ग्रामीणों को नजर आई। ग्रामीणों ने इसकी जानकारी नाचना थाना पुलिस को दी। नाचना थाना प्रभारी प्रेमाराम ने मौके पर जाकर बम का निरीक्षण कर उसको सुरक्षित रखवाया। एसएचओ प्रेमाराम ने बताया कि सेना को बम की जानकारी देने के साथ ही उच्चाधिकारियों को भी जानकारी दी गई। अब सेना ही इसको डिस्पोज करने का काम करेगी। प्रेमाराम ने बताया जिस जगह बम मिला, वहां एक खेत है। सेना की फील्ड फायरिंग रेंज के पास ही वो खेत स्थित है। ऐसे में स्थानीय ग्रामीणों ने अभ्यास के दौरान खेत में बम गिरने का अंदेशा लगाया। हालांकि बम कौनसा है इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है, मगर पुलिस ने बम को सुरक्षित मिट्टी के कट्टों और झाड़ियों आदि से ढककर रख दिया है। अब सेना का बम निरोधक दस्ता इसको डिस्पोज करेगा। तब तक लोगों को इससे दूर रहने और अपने पशुओं को भी दूर रखने की सलाह दी गई है।

सूने मकान से जेवरात और नकदी चोरी

अजमेर, 15 अक्टूबर। सूने मकान का ताला तोड़कर जेवर व नगदी चोरी का मामला सामने आया है। महिला ने अपने देवर और एक अन्य युवक पर चोरी का संदेह व्यक्त किया है। मामला नसीराबाद सदर थाना क्षेत्र के ग्राम मस्जिद का बाड़िया राजोसी का है। नसीराबाद सदर थाने में जैना पत्नी शमशुद्दीन ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। रिपोर्ट में बताया- वह 10 अक्टूबर को अपने मकान पर ताला लगाकर अपने पीहर ग्राम भीमपुरा गई थी। शाम को उसके पास पड़ोसी का फोन आया कि मकान का ताला टूटा हुआ है और दरवाजा खुला हुआ है। वह घर पहुंची तो एलसीडी टीवी, उसका बॉक्स और 5 हजार रुपए नगद व सोने का मांदलिया गायब था। पूछताछ में मोहल्ले के बच्चों ने बताया- उसका देवर सद्दाम और अन्य युवक दिलदार 2-3 दिन से उसके मकान के आस-पास व आंगन में घूम रहे थे। परवादियां ने उन पर उसके घर में चोरी करने का संदेह व्यक्त किया है। नसीराबाद सदर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

जयपुर में शेरनी ने शावक को जन्म दिया

जयपुर, 15 अक्टूबर। नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में शेरनी तारा ने रविवार देर रात एक शावक को जन्म दिया। नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में शेरनी तारा ने देर रात एक शावक को जन्म दिया। शेरनी तारा ने शावक की देखरेख और फीडिंग नहीं करवाई। इसके बाद वन विभाग के अधिकारियों ने शावक को नियो नेटल केयर यूनिट में रखा है। वन विभाग ने अधिकारी ने बताया- नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में शेरनी तारा ने रात करीब 1:15 बजे शावक को जन्म दिया। शेरनी तारा की ओर से शावक की केयर नहीं की जा रही थी। शावक की देखरेख नहीं करने के साथ ही शेरनी तारा ने शावक को फीडिंग भी नहीं करवाई। वन विभाग की टीम ने शावक की देखरेख के लिए रात करीब 3:30 बजे हॉस्पिटल में शिफ्ट किया। बायोलॉजिकल पार्क के ही नियो नेटल केयर यूनिट में शावक को रखा गया है। शावक की स्थिति सामान्य है। डॉक्टर व स्टाफ की ओर से गहनता से मॉनिटरिंग की जा रही है। फिलहाल उसे वन विभाग के अधिकारियों की देखरेख में ही रखा जाएगा। ताकि उसे स्वस्थ एवं सुरक्षित रखा जा सके। प्रदेश की पहली नाहरगढ़ लायन सफारी में तीन लायन लाए गए थे। शेरनी तेजिका के ये तीनों शावक तेजस, त्रिपुर और तारा हैं। शेरनी तारा का भी जन्म मई-2017 में नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में ही हुआ था। शेरनी तेजिका की मौत हो चुकी है। शेर तेजस और त्रिपुर का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इसके चलते ही लायन सफारी की अकेले शेरनी तारा शान बनी हुई है।

जयपुर में प्रोफेसर बेटे ने बुजुर्ग मां को बेसहारा छोड़ा

89 वर्षीय महिला को फोर्टिस में भर्ती कराया, ठीक होने के बाद लेने ही नहीं आया

जयपुर, 15 अक्टूबर। बुजुर्ग महिला का बेटा उनको लेने नहीं आया तो फोर्टिस हॉस्पिटल के स्टाफ ही दिन-रात उनका ख्याल रख रहा है। हॉस्पिटल के बेड पर लेटी हुई बुजुर्ग महिला की टकटकी दरवाजे पर लगी है। बार-बार समझाने के बावजूद वह यह मानने को तैयार नहीं कि उनका बेटा उन्हें यहां बेसहारा छोड़ गया है। 4 सितंबर से ही वह अपने बेटे का इंतजार कर रही हैं। हॉस्पिटल प्रशासन ने बेटे से संपर्क भी किया, पर वह नहीं आया। यह कहानी है 89 साल की रवि किरण जोशी की। बुढ़ापे में रवि किरण को उनका बेटा बेसहारा जयपुर के फोर्टिस हॉस्पिटल में छोड़ गया है। फोर्टिस हॉस्पिटल में इलाज कर रहे डॉ. पंकज आनंद कहते हैं- राजस्थान यूनिवर्सिटी में केमिस्ट्री विभाग के प्रोफेसर राहुल जोशी ने 4 सितंबर को अपनी 89 वर्षीय मां को दस्त होने व खाना नहीं खाने का बता डीलक्स रूम लेकर भर्ती करवाया था। उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ तो 7 सितंबर को आईसीयू में भर्ती किया। 4 दिन आईसीयू में रखने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार हो गया। उन्हें वार्ड में शिफ्ट कर लिया गया। वार्ड में शिफ्ट करने के बाद उनके बेटे से संपर्क किया, लेकिन वे खुद को अकेला होना बताकर हॉस्पिटल नहीं आए। इसके बाद हॉस्पिटल प्रशासन उनके एसएफएस अग्रवाल फार्म (मानसरोवर) स्थित घर गया। वे स्टाफ के सामने मानसिक रोगी की तरह हरकतें करने लग गए। काफी बुलाने के बाद भी हॉस्पिटल में मां को देखने के लिए नहीं आए। इसके बाद दूसरे बेटे दिल्ली निवासी प्रो. अनुराग जोशी (इग्नू) से संपर्क किया। वहां से कोई जवाब नहीं मिला। डॉ. पंकज आनंद ने बताया कि महिला को लेने कोई नहीं आया तो स्टाफ ने ही सेवा करनी शुरू कर दी। वे खुद भी दिन में 2 बार देखने जाते हैं। महिला गार्ड ड्यूटी समय में देखभाल करती हैं। इधर, हॉस्पिटल का नर्सिंग स्टाफ कपड़े बदलने से लेकर सिर के बाल बनाता है।

सीकर में स्टूडेंट 10 दिन से लापता

सीकर, 15 अक्टूबर। सीकर के उद्योग नगर इलाके में हॉस्टल में रहने वाला कोचिंग स्टूडेंट पिछले करीब 10 दिन से लापता है। स्टूडेंट हॉस्टल से कोचिंग जाने के लिए निकला था। जिसका अब तक कुछ पता नहीं चल पाया है। अब उद्योग नगर पुलिस स्टूडेंट की तलाश कर रही है। उद्योग नगर थानाधिकारी सुरेंद्र देगड़ा के अनुसार खैरथल जिले के मुंडावर क्षेत्र के रहने वाले रतिराम ने रिपोर्ट दी है कि उनका बेटा अंकित सीकर में प्राइवेट कोचिंग में पढ़ता है। वो 4 अक्टूबर को दोपहर करीब 12:30 बजे हॉस्टल से कोचिंग जाने के लिए निकला था। लेकिन अब तक कोचिंग नहीं पहुंचा। परिवार के लोगों ने रिश्तेदारी और आसपास के इलाकों में भी काफी पूछताछ की लेकिन अंकित का कुछ पता नहीं चल पाया। फिलहाल उद्योग नगर पुलिस ने रिपोर्ट पर गुमशुदगी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अजमेर में इलाज कराने के लिए आए बुजुर्ग की जेब से किसी ने 5 हजार नकद व कागजात चोरी कर लिए। बुजुर्ग हॉस्पिटल में डॉक्टर को दिखाने के लिए कतार में खड़ा था। इसी दौरान भीड़ का फायदा उठाकर वारदात को अंजाम दिया गया। भीमपुरा निवासी बीरम सिंह ने बताया कि वह इलाज के टीबी हॉस्पिटल आया था और डायरी व पर्ची जेब में रखकर कतार में खड़ा था। इसी दौरान भीड़ का फायदा उठाकर किसी ने डायरी जेब से निकाल ली।

हॉस्पिटल की लाइन में लगे बुजुर्ग मरीज की जेब काटी

अजमेर, 15 अक्टूबर। अजमेर में इलाज कराने के लिए आए बुजुर्ग की जेब से किसी ने 5 हजार नकद व कागजात चोरी कर लिए। बुजुर्ग हॉस्पिटल में डॉक्टर को दिखाने के लिए कतार में खड़ा था। इसी दौरान भीड़ का फायदा उठाकर वारदात की गई। कतार के दौरान भीड़ में बुजुर्ग मरीज की जेब काटी गई। भीमपुरा निवासी बीरम सिंह ने बताया कि वह इलाज के टीबी हॉस्पिटल आया था और डायरी व पर्ची जेब में रखकर कतार में खड़ा था।

नाम परिवर्तन

मैने अपना नाम रामस्वरूप से बदलकर रामस्वरूप परिहार रख लिया है।
मुझे भविष्य में इस नाम से जाना पहचाना जावें। पता-बस्सी मोहल्ला नागौर (राज.)

कार्यालय ग्राम पंचायत मांगलोद, पंचायत समिति जायल

क्रमांक: ग्रा.पं./मांगलोद/2024-25/181/538 दिनांक: 14.10.2024

ई-निविदा सूचना 2024-25/03

ग्राम पंचायत मांगलोद में विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास योजना के अंतर्गत निम्न निर्माण कार्य हेतु राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 के नियम 181 (1) राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता नियम 2013 के तहत अनुभव रखने वाले सक्षम श्रेणी के संवदेकों से बोली लगाने से विवर्जित/ब्लेक लिस्टेड नहीं हो, से ई-टेन्डरिंग की प्रक्रिया द्वारा निविदा आमंत्रित की जाती है। ई-निविदा में जमा कराये जाने योग्य शुल्कों की राशि व जमा करवाने का माध्यम तथा अन्य शर्तें एवं निविदा में संपादित करवाये जाने वाले कार्यों की राशि तथा अन्य विस्तृत विवरण ग्राम पंचायत मांगलोद मुख्यालय में कार्यालय समय में एवं राज्य लोक उपापन पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in तथा www.eproc.rajasthan.gov.in पर अवलोकन की जा सकती है।

सरपंच ग्राम पंचायत मांगलोद पं.स. जायल (नागौर)

ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत मांगलोद पं.स. जायल (नागौर)

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बासनी जिला-नागौर

•Email-nagarpalikabasnibelima@gmail.com Tel-01582-299300

क्रमांक-न.पा.बा./सामान्य/2024-25/493 दिनांक: 14.10.2024

आम-सूचना

इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित व्यक्तियों द्वारा अपनी खरीद भूमि का आवासीय/व्यवसायिक/मिश्रित प्रयोजनार्थ रूपान्तरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है अर्थात्:-

क्र.सं.	नाम व पता	प्रयोजनार्थ	मौजा	खसरा नं.	क्षेत्रफल
1.	App No.LSGCLU90A/2024-25/102553 श्री हबीबुर रेहेमान पुत्र हाजी जहुरुदीन निवासी बासनी	संस्थागत दारूल उलूम अहेले सुन्त फेजाने अशरफ शिक्षण संस्थान बासनी	बासनी	341	7969 वर्गमीटर

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-ए-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि प्रयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो, व इस नोटिस के प्रकाशन के 07 दिन के भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अद्योहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपयुक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक 14.10.2024 को जारी की गई।

(अलताफ बानो)
अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका मण्डल, बासनी

7 साल की मासूम से रेप मामला

बच्चों की सुरक्षा के लिए झोपड़ी से दूर सोए, वहां हैवान बन गया पड़ोस

जोधपुर, 15 अक्टूबर। जोधपुर के देवनगर थाना क्षेत्र में शनिवार रात 7 साल की मासूम से रेप के मामले में पीड़ित और आरोपी से पूछताछ में कई खुलासे हुए है। घटना वाले दिन पीड़िता का परिवार अपनी झोपड़ी में नहीं बल्कि घटना स्थल से कुछ दूरी पर सो रहा था। आरोपी भी उनका पड़ोसी था और वह भी उनसे कुछ दूरी पर घटना स्थल पर सो रहा था। बताया जा रहा है कि घटना वाले दिन कुछ शराबी बदमाश पीड़ित परिवार की झोपड़ी के पास झगड़ा कर रहे थे। ऐसे में पीड़िता के माता-पिता पीड़िता सहित तीनों बच्चों को लेकर घटना स्थल वाले घर के पास ही जाकर सो गए थे। वहां पीड़िता का पड़ोसी ही हैवान बन गया। सीकाउ सैल के एडीसीपी लाभूराम चौधरी ने बताया- पीड़िता की मां की रिपोर्ट पर आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी एमपी के रतलाम का रहने वाला है। करीब 15 साल से जोधपुर में रहकर मजदूरी कर रहा है। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर घटना के समय पहने हुए कपड़ों को उसके बैग से बरामद किया है। पुलिस ने रविवार को मासूम का मेडिकल करवाया था। मासूम की तबीयत अब ठीक है। यह घटना स्थल है, जहां आरोपी ने मासूम से हैवानियत की थी। इससे कुछ दूर पर ही मासूम का परिवार सो रहा था। यहां सीसीटीवी लगे थे ऐसे में मासूम के परिवार ने यहां अपने आप को सुरक्षित समझा था। यह घटना स्थल है, जहां आरोपी ने मासूम से हैवानियत की थी। इससे कुछ दूरी पर ही मासूम का परिवार सो रहा था।

यहां सीसीटीवी लगे थे ऐसे में मासूम के परिवार ने यहां अपने आप को सुरक्षित समझा था। शनिवार की रात को पीड़ित परिवार की झोपड़ियों के पास कुछ बदमाश झगड़ा कर रहे थे। ऐसे में सड़क पार करती ही सामने काफी दुकान व मकान है। सभी में सीसीटीवी कैमरे लगे हुए है। ऐसे में पीड़िता के परिवार के उन सीसीटीवी के आधार पर खुद को वहां सुरक्षित माना और रात को अपने बच्चों के साथ वहीं सो गए थे। जिसमें पीड़िता भी उनके पास ही सो रही थी।

बाड़मेर में 10.7 किलो डोडा-पोस्त किया बरामद

बाड़मेर, 15 अक्टूबर। बाड़मेर जिले की रीको और डीएसटी टीम ने ऑपरेशन भौकाल के तहत मादक पदार्थ के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से 10 किलो 710 ग्राम अवैध डोडा-पोस्त बरामद किया है। फिलहाल पुलिस आरोपी से मादक पदार्थ की खरीद-फरोख्त को लेकर पूछताछ कर रही है। पुलिस के अनुसार जोधपुर रेंज आईजी की ओर से स्पेशल अभियान ऑपरेशन भौकाल चलाया जा रहा है। इसी के तहत रीको थानाधिकारी देवाराम और डीएसटी प्रभारी विक्रमसिंह मय टीम ने गांव शिवकर में अवैध मादक की सूचना मिली थी। इस पर पुलिस की टीमों ने रामपुरा शिवकर में दबिश दी। गांव में माधाराम पुत्र हीराराम निवासी रामपुरा शिवकर को रुकवाकर तलाशी ली गई। तो उसके पास 10 किलो 710 ग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त मिला। इस पर पुलिस ने जब्त कर आरोपी को डिटेन किया। टीम रीको थाने ले गई। एसपी नरेंद्र सिंह मीना ने बताया आरोपी के खिलाफ रीको थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। गिरफ्तार उससे अवैध डोडा-पोस्त कहां से लेकर आया और क्या करने वाला था। इसको लेकर जांच पड़ताल जारी है। कार्रवाई में रीको थानाधिकारी देवाराम विश्नोई, हेड कॉन्स्टेबल केसराराम, कॉन्स्टेबल चोखाराम, हरजीराम, हरीश कुमार, ड्राइवर कॉन्स्टेबल कमल कुमार, महिला कॉन्स्टेबल केसु और डीएसटी टीम प्रभारी विक्रमदान चारण, एएसआई अमीन खान, कॉन्स्टेबल जामलसिंह, रमेश कुमार, गोपाल जाणी, कमांडो रमेश, उत्तम सिंह, ड्राइवर कॉन्स्टेबल स्वरूप सिंह शामिल रहे।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट की तैयारियां पूर्ण, कार्यक्रम 16 को

(नगर संवाददाता)

नागौर, 15 अक्टूबर। राईजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2024 के तहत जिले स्तर समिट 16 अक्टूबर को होटल मेघमाउंट एवं रिसोर्ट बीकानेर रोड़, नागौर में जिला इन्वेस्टर्स मीट आयोजित होंगी। जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र के महाप्रबंधक बजरंग सांगवा ने बताया कि एक दिवसीय इन्वेस्टर्स मीट में जिले के प्रस्तावित निवेशकों के साथ एमओयू साईन किए जाएंगे। इस दौरान जिले के प्रमुख उद्यमों एवं एमएसएमई की उत्पादित उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। कार्यक्रम के तहत नागौर जिले के कुल 93 उद्यमियों,निवेशकों के साथ एमओयू साईन किए जाएंगे, जिनका प्रस्तावित निवेश 3996.57 करोड़ तथा कुल प्रस्तावित रोजगार सृजन 4633 है। उक्त कार्यक्रम के सफल आयोजन के संबंध में जिला प्रशासन, जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र तथा रीको द्वारा संपूर्ण तैयारियां कर ली है। आयोजन के संबंध में जिले के महत्वपूर्ण स्थानों पर हॉर्डिंग तथा बैनर लगवा दिए गए है। जिले के महत्वपूर्ण पदाधिकारी,अधिकारी, निवेशकों, उद्यमियों को आमंत्रित किया है। उन्होंने बताया कि उक्त कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जिले के उद्यमियों, निवेशकों को अधिकाधिक संख्या में जिले में निवेश के लिए प्रोत्साहित करना है। ताकि जिले की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति सुदृढ़ हो एवं जिला, राज्य में औद्योगिक दृष्टि से विकसित जिलों की श्रेणी में सम्मिलित हो सके। महाप्रबंधक सांगवा ने कहा कि वर्तमान में जिले में खनन, लाईम स्टोन, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण आधारित एवं अन्य कई क्षेत्रों में निवेश की अत्यन्त संभावना है। राज्य सरकार द्वारा उक्त क्षेत्रों में राज्य में अधिकाधिक निवेश को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की विभागीय योजनाएं भी संचालित की जा रही है। सांगवा ने बताया कि जिले में भविष्य में नवीकरणीय ऊर्जा विशेष तौर से सौर ऊर्जा के उत्पादन एवं विकास की अत्यन्त संभावना है। राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा सौर ऊर्जा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की विभागीय योजनाएं भी संचालित की जा रही है।

झुंझुनूं के गुढ़ागौड़जी में सड़क पर घूमते दिखा लेपर्ड

झुंझुनूं, 15 अक्टूबर। झुंझुनूं के गुढ़ागौड़जी इलाके में लेपर्ड का मूवमेंट होने से लोगों में दहशत है। क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों से लेपर्ड देखे जा रहे हैं। बीती रात से ही इलाके के गुढ़ा बावनी में एक लेपर्ड सड़क पर घूमते हुए नजर आया। जिसका सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। जानकारी के अनुसार रविवार रात 8 बजे करीब एक लेपर्ड सड़क पर घूमते दिखाई दिया है। फुटेज सामने आने के बाद ग्रामीण दहशत में आ गए है। ग्रामीणों का कहना है कि पिछले कुछ दिनों से इलाके में लेपर्ड व अन्य अज्ञात जंगली जानवरों का मूवमेंट दिखाई दे रहा है। वन विभाग अधिकारी बनवारी ने बताया- लोगों ने लेपर्ड देखे जाने की सूचना विभाग को दी है। इसके बाद मौके पर वन विभाग की टीम को भेजा था। कर्मचारियों ने इलाके में कई स्थानों पर दूसरे जानवर के भी पद चिन्ह देखे है। अभी तक लेपर्ड देखे जाने की पुष्टि नहीं हुई है। हालांकि सीसीटीवी फुटेज की जांच करवा रहे है। बता दें कि पिछले कई दिनों से क्षेत्र में अज्ञात जानवरों का आतंक बना हुआ है। अकेले मनसा माता के तलहटी में बसे भोपालगढ़ में 100 से ज्यादा मवेशियों का शिकार हो चुका है। इसके अलावा आसपास के कई गांवों में किसानों के मवेशियों का शिकार हो चुका है। क्षेत्र में लेपर्ड की मूवमेंट से किसान चिंता में है।

जयपुर के खातीपुरा रेलवे स्टेशन पर मिला बम!

जयपुर, 15 अक्टूबर। खातीपुरा रेलवे स्टेशन पर रविवार शाम बम होने की सूचना पर हड़कम्प मच गया। जयपुर के खातीपुरा रेलवे स्टेशन पर रविवार शाम बम होने की सूचना पर हड़कंप मच गया। पुलिस प्रशासन ने एटीएस, क्यूआरटी, सिविल डिफेंस और बीडीएस टीम की मदद से सर्च ऑपरेशन चलाया। मॉक ड्रिल का पता चलने पर टीमों ने राहत की सांस ली। पुलिस के मुताबिक रविवार शाम खातीपुरा रेलवे स्टेशन पर बम होने की सूचना मिली। पुलिस कंट्रोल रूम को मिली सूचना पर पुलिस प्रशासन में हड़कंप मच गया। सूचना पर एटीएस,क्यूआरटी, सिविल डिफेंस, पुलिस, बीडीएस, फायर ब्रिगेड और जिला प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंचीं। टीमों ने स्टेशन पर आने-जाने वाले यात्रियों को ऑप्शनल रास्तों से निकाला। उसके बाद बम निरोधक दस्ते ने कचरा पात्र से बम निकालकर उसे डिफ्यूज किया। करीब 2 घंटे चले सर्च ऑपरेशन के बाद स्थिति को पूरी तरह कंट्रोल किया गया। मॉक ड्रिल होने का पता चलने पर प्रशासन सहित सभी टीमों ने राहत की सांस ली।

फाइनेंस कर्मचारी से लूट मामले में 3 आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर, 15 अक्टूबर। उदयपुर की बेकरिया थाना पुलिस ने हाईवे पर फाइनेंस कर्मचारी से लूट के मामले में तीन आरोपियों को बापर्दा गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी उत्तम सिंह ने बताया कि आरोपी राकेश पुत्र दुदाराम निवासी मालवा का चौरा, भगाराम पुत्र खेमाराम निवासी मालवा का चौरा और सुरेश पुत्र सौंगाराम आक्यावड़ को गिरफ्तार किया गया। थानाधिकारी ने बताया- जगदीश कुमार पुत्र सोपाराम निवासी सिरोही ने थाने में रिपोर्ट दी थी। जिसमें बताया था कि वह फाइनेंस कंपनी गोगुंदा में कर्मचारी है। वह 8 जुलाई 2024 को फाइनेंस के पैसे एकत्रित करके देवला से गोगुंदा जा रहा था। तब नेशनल हाईवे पर आक्यावड़ के पास अज्ञात बदमाशों ने उसे घेर लिया। बदमाशों ने उससे नकदी, जरूरी कागजात लूट लिए। फिर धमकी देते हुए फरार हो गए। पुलिस ने मामला दर्ज करते हुए आरोपियों की तलाश शुरू की। एएसपी गोपाल स्वरूप मेवाड़ा और डिप्टी राजेन्द्र सिंह राठौड़ के निर्देशन में पुलिस ने टीम गठित कर आरोपियों की पड़ताल शुरू की। जिसके बाद तीनों आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस आरोपियों से पूछताछ करते हुए आगे मामले की जांच में जुटी है।

नदी में डूबने से नाबालिग की मौत

उदयपुर, 15 अक्टूबर। एसडीआरएफ और सिविल डिफेंस की टीम को घटना से 150 मीटर दूर नाबालिग का शव मिला। उदयपुर के डबोक थाना क्षेत्र में ओरडी नांदवेल के पास बेड़च नदी में डूबने से एक नाबालिग की मौत हो गई। वह अपने नाबालिग दोस्त के साथ एक दिन पहले रविवार दोपहर को नदी में नहाने के लिए गया था। तभी पैर फिसलने से वह गहरे पानी में चला गया और डूबने से मौत हो गई। नाबालिग साथी ने उसे बचाने के लिए आस-पास आवाज लगाई लेकिन नदी सुनसान क्षेत्र में होने से आसपास कोई मौजूद नहीं था। इसके बाद नाबालिग ने मृतक के परिजनों को सूचना दी। जिसके बाद सूचना पर रविवार शाम को एसडीआरएफ और सिविल डिफेंस की टीम मौके पर पहुंची और सर्च ऑपरेशन शुरू किया। लेकिन अंधेरा होने से शव नहीं मिल सका। फिर दूसरे दिन सोमवार को वापस सर्च ऑपरेशन शुरू किया। 7 घंटे की मशक्कत के बाद शव बाहर निकाला जा सका। पानी में डूबने वाली जगह से करीब 150 मीटर दूर मृतक का शव पड़ा मिला। मौके पर पहुंची डबोक थाना पुलिस ने शव को डबोक सरकारी हॉस्पिटल में रखवाया। इसके बाद पोस्टमॉर्टम कराकर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया। सिविल डिफेंस से कैलाश मेनारिया, विजय नकवाल, विपुल चौधरी, मनोज जिसी, मोहन सिंह राणावत, दीपक वढ़ेरा टीम में शामिल थे।

सीकर से 19 साल की युवती लापता

सीकर, 15 अक्टूबर। सीकर में 19 वर्षीय युवती के घर से लापता होने का मामला सामने आया है। लड़की परिजनों को बिना बताए कहीं चली गई, जिसका अभी तक कहीं कोई सुराग नहीं लगा। मामला सीकर के सदर थाना इलाके का है। पुलिस को दी रिपोर्ट में लड़की के पिता ने बताया कि उसकी 19 साल की लड़की देर रात को परिजनों को बिना बताए घर से कहीं चली गई। परिजनों ने लड़की की काफी जगह तलाश कर की। रिश्तेदारों, दोस्तों से भी पता किया लेकिन अभी तक कहीं पता नहीं चला। सदर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सरोज शर्मा के लिए सांध्य ज्योति दर्पण प्रिंटर्स, डी.एल. टॉवर, 3-ए विद्याश्रम इंस्टीट्यूशनल एरिया जे.एल.एन. मार्ग जयपुर से मुद्रित व राजकीय अस्पताल के सामने नागौर से प्रकाशित। सम्पादक- रमेश चन्द जैन। फोन : 240071 फैक्स- 01582-247171 जयपुर कार्यालय: डी.एल. टावर 3-ए-विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र जेएलएन मार्ग, निदेशक : बी.एम. शर्मा, सम्पादक : महेन्द्र कुमार यादव। फोन : 2709102-3, फैक्स : 0141-2709275, अलवर कार्यालय : केडलगंज, अलवर संपादक चंद्रप्रकाश सैनी। फोन : 2335105,2701531 भरतपुर कार्यालय: कोतवाली रोड, भरतपुर- सम्पादक : जगदीश अग्रवाल, फोन : 223780 | आरएनआई नं. 48413/88